दिल्ली : 2023 में वायु प्रदूषण की वजह से हुई 15 प्रतिशत मौतें
- 12

अमेरिका के साथ व्यापार वार्ता जारी रखे भारत
- 12

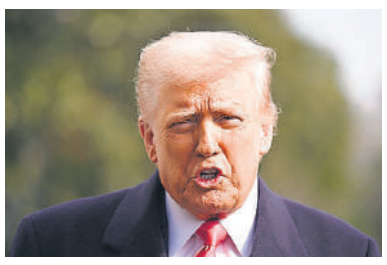

अमेरिका का परमाणु परीक्षण शुरू करना मानवता के लिए खतरनाक
- 13

दूसरे टी-20 में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को चार विकेट से हराया
- 14

आज का मौसम

29.0° अधिकतम तापमान

21.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.18

सूर्यास्त 05.26

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

कानपुर

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

कार्तिक शुक्ल पक्ष दशमी 09:12 उपरांत एकादशी विक्रम संवत 2082

शनिवार, 1 नवंबर 2025, वर्ष 4, अंक 71, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 5 रुपये

पटेल पूरे कश्मीर को भारत में मिलाना चाहते थे, नेहरू ने अनुमति नहीं दी : मोदी

सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में बोले प्रधानमंत्री

- कहा- घुसपैठिए भारत की एकता और जनसांख्यिकीय संतुलन के लिए खतरा
- गुजरात के एकता नगर में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के पास राष्ट्रीय एकता दिवस परेड आयोजित

एकता नगर (गुजरात), एजेंसी

गुजरात के नर्मदा जिले में पटेल की 150वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते प्रधानमंत्री मोदी।

कांग्रेस की कमजोर नीतियों से प्रायोजित आतंकवाद पनपा

कांग्रेस की कमजोर नीतियों के कारण कश्मीर का एक हिस्सा पाकिस्तान के अवैध कब्जे में चला गया, जिसने फिर राज्य प्रायोजित आतंकवाद को बढ़ावा दिया। कश्मीर और देश ने भारी कीमत चुकाई, फिर भी कांग्रेस हमेशा आतंकवाद के आगे झुकी। वह सरदार पटेल के दृष्टिकोण को भूल गई, लेकिन हम नहीं। प्रधानमंत्री ने कहा कि अनुच्छेद 370 की बेड़ियां तोड़कर कश्मीर पूरी तरह से मुख्यधारा में शामिल हो गया है। उन्होंने कहा, आज पाकिस्तान और आतंकवादी भी जानते हैं कि भारत की असली ताकत क्या है।

दुनिया ने देखा भारत घुसकर मारता है

ऑपरेशन सिंदूर में दुनिया ने देखा कि अगर कोई भारत पर बुरी नजर डालेगा तो हम उसके घर में घुसकर उसे खत्म कर देंगे। यह सरदार पटेल का भारत है। पिछले 11 वर्षों में नक्सलवाद के खिलाफ सरकार की कार्रवाई पर प्रकाश डालते हुए मोदी ने कहा कि यह अभियान तब तक जारी रहेगा जब तक यह समस्या देश से जड़ से समाप्त नहीं हो जाती। मोदी ने कहा, 2014 से पहले देश के लगभग 125 जिले माओवाद के आतंक से प्रभावित थे। आज यह 11 जिलों तक सीमित है। उनमें भी केवल तीन जिलों में ही नक्सलवाद कायम है। अवैध प्रवासी भारत की एकता और आंतरिक सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा हैं। उन्होंने आरोप लगाया, ये अवैध प्रवासी हमारे संसाधनों पर कब्जा कर रहे हैं और जनसांख्यिकीय संतुलन को बिगाड़ रहे हैं जिससे देश की एकता खतरे में पड़ रही है।

देश औपनिवेशिक मानसिकता के निशान को मिटा रहा

कांग्रेस पर निशाना साधते हुए मोदी ने कहा कि पार्टी को भारत पर राज करने वाले अंग्रेजों से 'गुलामी की मानसिकता' विरासत में मिली है। आज देश औपनिवेशिक मानसिकता के हर निशान को मिटा रहा है। मोदी ने पूछा, राजनीतिक अस्पृश्यता को देश में एक संस्कृति बना दिया गया था। हम सभी जानते हैं कि कांग्रेस सरकारों के शासनकाल में सरदार पटेल और उनकी विरासत का क्या हश्र हुआ। इन लोगों ने बाबासाहेब आंबेडकर के साथ उनके जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के बाद भी क्या किया? उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस, डॉ. लोहिया और जयप्रकाश नारायण के साथ क्या किया? आरएसएस पर भी हमले और षड्यंत्र किए गए। कांग्रेस पर धार्मिक आधार पर 'वंदे मातरम' के कुछ हिस्से को हटाने का आरोप लगाया और इसे समाज को विभाजित करने वाला बताया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि सरदार पटेल अन्य रियासतों की तरह पूरे कश्मीर को भी भारत में मिलाना चाहते थे, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने ऐसा नहीं होने दिया। गुजरात के एकता नगर में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के पास राष्ट्रीय एकता दिवस परेड के बाद उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि घुसपैठ की घटनाएं भारत के जनसांख्यिकीय संतुलन को बिगाड़ रही थीं जिसके खिलाफ निर्णायक लड़ाई का फैसला किया गया है।

उन्होंने कहा, सरदार पटेल का मानना था कि इतिहास लिखने में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए बल्कि इतिहास बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। आजादी के बाद सरदार पटेल ने 550 से अधिक रियासतों का भारत संघ में विलय कराने का असंभव सा लगने वाला कार्य पूरा किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरदार पटेल ने जो नीतियां बनाईं, जो निर्णय लिए, उन्होंने नया इतिहास रच दिया। एक भारत, श्रेष्ठ भारत का विचार उनके लिए सर्वोपरि था। कांग्रेस पर हमला करते हुए मोदी ने कहा कि कश्मीर और देश को इस मुद्दे से निपटने में पार्टी की गलतियों की भारी कीमत चुकानी पड़ी है। उन्होंने कहा, सरदार पटेल अन्य रियासतों की तरह पूरे कश्मीर का एकीकरण करना चाहते थे। लेकिन नेहरू जी ने उनकी इच्छा पूरी नहीं होने दी। कश्मीर का विभाजन हुआ, उसे अलग संविधान और अलग झंडा दिया गया और कांग्रेस की इस गलती का खामियाजा देश को दशकों तक भुगतना पड़ा। मोदी ने कहा कि सरदार पटेल के लिए देश की संप्रभुता सर्वोपरि थी लेकिन उनकी मृत्यु के बाद, सरकारों ने देश की संप्रभुता के संबंध में उतनी गंभीरता नहीं दिखाई।

रन फॉर यूनिटी के शुभारंभ अवसर पर बोले मुख्यमंत्री

जातिवाद, परिवारवाद या छुआछूत पर समाज बांटने वालों का हो विरोध

- कहा- सरदार पटेल से प्रेरणा लेकर राष्ट्र की एकता को कमजोर करने वालों को सिखाएं सबक

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

लखनऊ में सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में आयोजित रन फॉर यूनिटी के शुभारंभ कार्यक्रम के दौरान झंडी दिखाते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जातिवाद, परिवारवाद या छुआछूत के आधार पर समाज को बांटने वालों का विरोध किए जाने का आह्वान किया है। मुख्यमंत्री के मुताबिक, हमें उन सभी कुत्सित प्रयासों का विरोध करना चाहिए जो जिनका आधार वाद या छुआछूत है। उन्होंने कहा, राष्ट्रीय एकता दिवस का यही संदेश है कि हम सब मिलकर भारत की अखंडता को सशक्त बनाएं और सामाजिक एकता को मजबूत करें। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें हर उस शक्ति का विरोध करना चाहिए जो राष्ट्र की एकता को कमजोर करने का प्रयास करती है।

योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को लखनऊ में भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर आयोजित रन फॉर यूनिटी का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया और कहा कि भारत की अखंडता और एकता के लिए जिन्होंने अपना जीवन समर्पित किया, उन लौह पुरुष सरदार पटेल को सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम उनके आदर्शों को अपने आचरण में उतारें। मुख्यमंत्री ने बताया कि सरदार पटेल की 150वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश से एक सांस्कृतिक दल और हस्तशिल्पियों का प्रतिनिधिमंडल केवड़िया जाएगा। राज्यपाल के नेतृत्व में 12 नवंबर को केवड़िया में सरदार पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित करने का कार्यक्रम आयोजित होगा। उन्होंने कहा कि वोकल फॉर लोकल और स्वदेशी अभियान को मजबूती देने के साथ उत्तर प्रदेश के कारीगरों को आत्मनिर्भर बनाने का यह अवसर भी है।

75 जिलों में रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम आयोजित

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के सभी 75 जिलों में आज रन फॉर यूनिटी के कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनमें लाखों युवाओं, विद्यार्थियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, प्रशासनिक अधिकारियों और नागरिकों ने भाग लेकर राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि यह केवल एक दौड़ नहीं, बल्कि भारत की एकता, अखंडता और सामाजिक सौहार्द का प्रतीक है। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक, वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह, महापौर सुषमा खर्कवाल, राज्यसभा सांसद बृजलाल एवं विधायक मौजूद रहे।

ब्रीफ न्यूज

ईडी के कार्यालय को बम से उड़ाने की धमकी

चेन्नई। चेन्नई के शास्त्री भवन स्थित प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) कार्यालय में बम रखे जाने के दावे वाला एक ई-मेल पुलिस महानिदेशक कार्यालय को मिला। बम की यह धमकी जांच में झूठी साबित हुई।पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बम निरोधक दस्ते (बीडीडीएस) की एक टीम खोजी कुत्ते के साथ तुरंत यहां नुंगमबक्कम स्थित ईडी के दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय पहुंची तथा परिसर की गहन तलाशी ली गई। जांच में बम की धमकी झूठी साबित हुई। तमिलनाडु में ईडी कई बड़े प्रतिष्ठित मामलों की जांच कर रहा है तथा हाल ही में इसने नगर प्रशासन और जल आपूर्ति विभाग के भर्ती अभियान में कथित तौर पर नौकरी के लिए नकदी घोटाले का खुलासा किया है।

छात्र ने 18वीं मंजिल से छलांग लगाई, मौत

गुरुग्राम। गुरुग्राम में 18 वर्षीय एक लड़के ने शुक्रवार तड़के एक आवासीय सोसायटी एवं अपार्टमेंट परिसर की 18वीं मंजिल से कूदकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि किशोर के परिवार ने संदेह जताया है कि आत्महत्या का कारण उसकी पढ़ाई या रीढ़ की हड्डी की पुरानी बीमारी हो सकती है।

भारत-अमेरिका के बीच हुआ 10 साल का अहम रक्षा सौदा

नई दिल्ली, एजेंसी

- रक्षामंत्री राजनाथ और हेगसेथ ने कुआलालंपुर में 'यूएस-इंडिया मेजर डिफेंस पार्टनरशिप फ्रेमवर्क' समझौते पर किए हस्ताक्षर

भारत और अमेरिका ने शुक्रवार को 10 वर्ष के एक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसे दोनों देशों के बीच बढ़ते रणनीतिक सामंजस्य का संकेत बताया, जबकि वाशिंगटन ने एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए नई दिल्ली के साथ मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता जताई।

सिंह और उनके अमेरिकी समकक्ष पीट हेगसेथ ने कुआलालंपुर में व्यापक वार्ता के बाद 'यूएस-इंडिया मेजर डिफेंस पार्टनरशिप फ्रेमवर्क' समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें सभी स्तंभों में रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह समझौता ऐसे समय पर हुआ है जब अमेरिका द्वारा भारतीय वस्तुओं पर 50 प्रतिशत शुल्क (टैरिफ) लगाने के बाद दोनों देशों के बीच संबंध तनावपूर्ण हैं। हेगसेथ के साथ अपनी वार्ता को सार्थक बताते हुए सिंह ने कहा कि यह समझौता हमारी पहले से ही मजबूत रक्षा साझेदारी में एक नए युग की शुरुआत करेगा।

सिंह ने सोशल मीडिया पर कहा, यह रक्षा ढांचा भारत-अमेरिका रक्षा संबंधों के संपूर्ण आयाम को नीतिगत दिशा प्रदान करेगा। यह हमारे बढ़ते रणनीतिक तालमेल का संकेत है और साझेदारी के एक नए दशक का सूत्रपात करेगा। उन्होंने कहा, रक्षा क्षेत्र हमारे द्विपक्षीय संबंधों का एक प्रमुख स्तंभ बना रहेगा।

मलेशिया में रक्षा सौदे पर हस्ताक्षर के बाद हाथ मिलाते रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और पीट हेगसेथ।

भारत अमेरिका के लिए एक प्राथमिकता वाला देश

रक्षा मंत्रालय ने बयान में कहा, हेगसेथ ने दोहराया कि रक्षा सहयोग में भारत अमेरिका के लिए एक प्राथमिकता वाला देश है और वे स्वतंत्र एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को सुनिश्चित करने के लिए भारत के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसमें कहा गया है कि 2025 की रूपरेखा अगले 10 वर्षों में साझेदारी को और अधिक मजबूत करने के लिए एक नया अध्याय है।

1,466 पुलिस कर्मियों को केंद्रीय गृह मंत्री दक्षता पदक

नई दिल्ली। पहलगाम हमले में शामिल आतंकवादियों को मार गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले जम्मू-कश्मीर पुलिस और सीआरपीएफ के 40 कर्मियों सहित देशभर के 1,466 पुलिस कर्मियों को वर्ष 2025 के लिए केंद्रीय गृहमंत्री दक्षता पदक से सम्मानित किया जाएगा।

महानिरीक्षक (कश्मीर रेंज) वीके बिरदी और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (श्रीनगर) जीवी संदीप चक्रवर्ती जम्मू-कश्मीर के उन 19 अधिकारियों में शामिल हैं जिन्हें 'ऑपरेशन महादेव' के लिए पदक से सम्मानित किया जाएगा, जिसमें दुस्साहसिक पहलगाम हमले को अंजाम देने वाले आतंकवादियों को मार गिराया गया था। सुलेमान उर्फ आसिफ को सुरक्षा बलों द्वारा एक अचानक की गयी कार्रवाई के दौरान मार गिराया गया। इस अभियान का कूट नाम ऑपरेशन महादेव था। सुलेमान 22 अप्रैल के हमले का मुख्य षड्यंत्रकर्ता माना जाता है।

कालिंदी महोत्सव

देवोत्थान एकादशी की पूर्व संध्या पर कुंभ नगरी प्रयागराज में कालिंदी महोत्सव का आयोजन किया गया। इस दौरान लोगों ने यमुना नदी के किनारे मौज गिरी घाट पर दीपक जलाए। ● एजेंसी

राजग के घोषणापत्र में 1 करोड़ नौकरी का वादा

- युवाओं व महिलाओं को लेकर बड़े वादे किए

पटना। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने बिहार विधानसभा चुनाव के लिए शुक्रवार को अपना घोषणापत्र जारी करते हुए युवाओं और महिलाओं को लेकर बड़े वादे किए।

राजग ने दावा किया कि इस राज्य में उसके सत्ता में आने पर हर युवा के सुनहरे भविष्य की गारंटी दी जाएगी, जबकि महिलाओं को समृद्धि और आत्मनिर्भरता के मार्ग पर आगे बढ़ाया जाएगा। घोषणापत्र में कहा गया है कि राजग एक करोड़ से अधिक सरकारी नौकरियां और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएगा। इसके लिए राज्य में कौशल जनगणना कराई जाएगी और कौशल आधारित रोजगार उपलब्ध कराए जाएंगे। साथ ही, हर जिले में विशाल कौशल केंद्र स्थापित कर बिहार को वैश्विक कौशल केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा। महिलाओं के लिए राजग ने मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना की घोषणा की है, जिसके तहत महिलाओं को दो लाख रुपए तक की सहायता राशि दी जाएगी। यह योजना महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और राज्य की अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदारी बढ़ाने में मदद करेगी।

भारतीय टीम के पूर्व कप्तान अजहरुद्दीन तेलंगाना में बने मंत्री

हैदराबाद। कांग्रेस नेता एवं पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद अजहरुद्दीन ने शुक्रवार को तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी के मंत्रिमंडल में मंत्री पद की शपथ ली।

राजभवन में आयोजित एक सादे समारोह में राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने मुख्यमंत्री सहित कई महत्वपूर्ण नेताओं की उपस्थिति में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान को शपथ दिलाई। उन्होंने कहा, मुझे खुशी है। मैं आलाकमान का, अपने समर्थकों का, शुक्रिया अदा करता हूं। अजहरुद्दीन के शामिल होने से मंत्रिमंडल में कुल सदस्यों की संख्या 16 हो गई है, जबकि दो और जगह खाली हैं।

सात साल बच्ची से दुष्कर्म, पांच वर्षीया की हत्या में दोषी को फांसी की सजा

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- अदालत ने कहा-दोषी का यह अपराध दुर्लभतम में दुर्लभ श्रेणी का

अमृत विचार : घर के पास स्कूल में लगे नल पर नहाने गई सात साल की बच्ची से दुष्कर्म और उसकी तहेरी बहन की हत्या के मामले में पॉक्सो कोर्ट शाहजहांपुर ने दोषी अनिल उर्फ चमेली को मृत्युदंड की सजा सुनाई है।

इस दौरान जज मनोज कुमार सिद्धू ने टिप्पणी करते हुए कहा आरोपी का अपराध अत्यंत क्रूर, सुनियोजित और नृशंस है, जो मानवता को झकझोर देने वाला और समाज के विश्वास को तोड़ने वाला है। अदालत ने कहा दोषी का यह अपराध दुर्लभतम में दुर्लभ श्रेणी का है, इसलिए इसे मृत्युदंड दिया जाता है। थाना कांट क्षेत्र में 22 फरवरी 2021 की दोपहर 3:30 बजे सात वर्षीया बालिका और उसकी पांच वर्षीया तहेरी बहन घर के पास स्कूल के नल पर नहाने गई थीं। देर शाम तक घर नहीं लौटीं तो परिजनों ने खोजबीन शुरू की।

रात में खोज के दौरान संदीप कपूर के सरसों के खेत में पांच वर्षीया बच्ची का शव खून से लथपथ मिला, जबकि थोड़ी दूरी पर गन्ने के खेत में सात वर्षीया बच्ची गंभीर अवस्था में बेहोश मिली। पुलिस जांच में सामने आया कि सदर कोतवाली थाना क्षेत्र में जिला अस्पताल के पीछे स्थित कंजरों वाली बस्ती में रहने वाले अनिल उर्फ चमेली नामक व्यक्ति ने दोनों को शहद और बिस्कुट का लालच देकर खेत में बुलाया था, जहां उसने वारदात को अंजाम दिया। 84 पृष्ठों के निर्णय में जज ने कहा आरोपी ने बच्चियों के साथ विश्वास का संबंध बनाकर उसी का दुरुपयोग किया। यह अपराध केवल दो बच्चियों के खिलाफ नहीं, बल्कि पूरे समाज की मासूमियत के खिलाफ है। कोर्ट ने अनिल पर पचास हजार का अर्थदंड भी लगाया है, जिसमें से आधी राशि पीड़िता बच्ची के पुनर्वास के लिए और शेष राशि मृतक बच्ची के पिता को क्षतिपूर्ति स्वरूप दी जाएगी।

आवारा कुत्तों का मामला

डिजिटल माध्यम से पेश होने की अनुमति देने के अनुरोध को सुप्रीम कोर्ट ने किया खारिज

राज्यों से शीर्ष कोर्ट नाराज, कहा- हमारे आदेश का सम्मान नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी

राज्यों को बताना होगा अनुपालन हलफनामे क्यों नहीं दाखिल किए

पीठ ने स्पष्ट किया कि मुख्य सचिवों को अदालत में उपस्थित होकर यह बताना होगा कि राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने अनुपालन हलफनामे क्यों नहीं दाखिल किए। मेहता ने कहा कि मामले में अनुपालन हलफनामे दाखिल किए गए थे। पीठ ने कहा कि जब 27 अक्टूबर को मामले की सुनवाई हुई थी तब केवल पश्चिम बंगाल, तेलंगाना और एमसीडी ने ही अनुपालन हलफनामे दाखिल किए थे। पीठ ने कहा, उन्हें (मुख्य सचिवों को) आने दीजिए। शीर्ष अदालत ने 27 अक्टूबर को आवारा कुत्तों के मामले की सुनवाई करते हुए सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को तीन नवंबर को अदालत के समक्ष उपस्थित होकर यह बताने का निर्देश दिया था कि अदालत के 22 अगस्त के आदेश के बावजूद अनुपालन हलफनामा क्यों नहीं दाखिल किया गया।

उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल और तेलंगाना को छोड़कर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को आवारा कुत्तों के मामले में तीन नवंबर को अदालत के समक्ष डिजिटल माध्यम से पेश होने की अनुमति देने के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया और कहा कि अदालत के आदेशों का कोई सम्मान नहीं है।

शीर्ष अदालत ने पश्चिम बंगाल और तेलंगाना को छोड़कर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को तीन नवंबर को उसके समक्ष उपस्थित होकर यह बताने का निर्देश दिया था कि अदालत के 22 अगस्त के आदेश के बावजूद अनुपालन हलफनामा क्यों नहीं दाखिल किया गया। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने 22 अगस्त के पीठ के आदेश का पालन नहीं करने पर नाराजगी व्यक्त की और कहा कि 27 अक्टूबर तक पश्चिम बंगाल, तेलंगाना और दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) को छोड़कर किसी भी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश ने अनुपालन हलफनामा दाखिल नहीं किया था। न्यायालय ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) नियमों के बारे में पूछा था। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने मामले का उल्लेख करते हुए पीठ से अनुरोध किया था कि मुख्य सचिवों को तीन नवंबर को अदालत के समक्ष डिजिटल माध्यम से पेश होने की अनुमति दी जाए। मेहता ने कहा, यह कुत्तों से खतरे का मामला है।

अमृत विचार

कानपुर, शनिवार,1 नवंबर 2025

एमबीबीएस 950, पीजी की 271 सीटें बढ़ीं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश के मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस और पीजी (एमडी-एमएस) की सीटों में बड़ा इजाफा किया गया है। नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी), नई दिल्ली ने प्रदेश में कुल 950 एमबीबीएस और 271 पीजी सीटें बढ़ाने की अनुमति प्रदान की है। इन नई सीटों पर सत्र 2025-26 से विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाएगा।

चिकित्सा शिक्षा महानिदेशक डॉ. अपर्णा यू ने शुक्रवार को जानकारी देते हुए बताया कि बढ़ाई गई 950 एमबीबीएस सीटों में 200 सीटें राजकीय मेडिकल कॉलेजों की हैं। इनमें अमेठी के स्वशासी साइंसेज लखनऊ, नेशनल कैपिटल रीजन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज मेरठ, केएमसी मेडिकल कॉलेज महराजगंज, श्री राममूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बरेली, कृष्ण मोहन मेडिकल कॉलेज मथुरा, एसकेएस मेडिकल कॉलेज मथुरा, अजय सांगल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज शामली और श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज गोरखपुर में 50-50 सीटें बढ़ाई गई हैं। डीजीएमई ने बताया कि अब प्रदेश में एमबीबीएस की कुल सीटें 11,850 हो गई हैं, जिनमें राजकीय कॉलेजों में 5,450 और निजी कॉलेजों में 7,350 सीटें शामिल हैं।

- प्रदेश के मेडिकल कॉलेजों में सीटें बढ़ाने को मिली अनुमति

राज्य चिकित्सा महाविद्यालय में 100 सीटें, ईएमआईसी मेडिकल कॉलेज नोएडा और ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज वाराणसी में 50-50 सीटों की वृद्धि की गई है। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार निजी मेडिकल कॉलेजों में 750 सीटें बढ़ाई गई हैं। एफएच मेडिकल कॉलेज आगरा, श्री सिद्धि विनायक मेडिकल कॉलेज संभल और नारायणा मेडिकल कॉलेज कानपुर में 100-100 सीटें बढ़ाई गईं। इसके अलावा एराज मेडिकल कॉलेज लखनऊ, इंटीग्रल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल

नोएडा एयरपोर्ट पर कैलिब्रेशन फ्लाइट की सफल लैंडिंग

हवाई संचालन की दिशा में अहम कदम, ऑपरेशनल क्लियरेंस की प्रक्रिया को मिलेगी गति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (जेवर) के संचालन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर तब दर्ज हुआ जब शुक्रवार को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) की कैलिब्रेशन फ्लाइट ने सफलतापूर्वक एयरपोर्ट पर लैंडिंग की। यह उड़ान हवाई अड्डे के नेविगेशन और कम्युनिकेशन सिस्टम की सटीकता जांचने के लिए की जाती है, जो किसी भी नए एयरपोर्ट के संचालन से पहले अनिवार्य होती है।

दरअसल, कैलिब्रेशन फ्लाइट एक विशेष परीक्षण उड़ान होती है, जिसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि एयरपोर्ट के इंस्ट्रूमेंट लैंडिंग सिस्टम (आईएलएस), रडार, और एयर नेविगेशन उपकरण अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मानकों के अनुरूप काम कर रहे हैं। फ्लाइट के दौरान विशेष रूप से सुसज्जित विमान अलग-अलग ऊंचाइयों और कोणों पर उड़ते हुए ग्राउंड सिस्टम से प्राप्त सिग्नल की ताकत, स्थिरता और सटीकता की जांच करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में फ्लाइट इंस्पेक्टर, टेक्निकल इंजीनियर, और एटीसी विशेषज्ञ शामिल रहते हैं।

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर कैलिब्रेशन फ्लाइट की सफल लैंडिंग कराने वाली टीम।

- किसी भी नए एयरपोर्ट के संचालन से पहले अनिवार्य होती है कैलिब्रेशन फ्लाइट

एएआई द्वारा उपयोग किए जाने वाले कैलिब्रेशन विमान में अत्याधुनिक माप उपकरण लगे होते हैं। उड़ान से प्राप्त डेटा का बाद में विश्लेषण किया जाता है ताकि किसी भी तकनीकी विचलन को तुरंत ठीक किया जा सके और उपकरणों की सटीकता सुनिश्चित हो। कैलिब्रेशन फ्लाइट का पूरा होना यह दर्शाता है कि जेवर एयरपोर्ट अंतरराष्ट्रीय स्तर की विमानन सुरक्षा मानकों के और करीब पहुंच गया है। इसके बाद एयरपोर्ट के लिए ऑपरेशनल क्लियरेंस की प्रक्रिया को गति मिलेगी।

न्यूज ब्रीफ

हृषिकेश भास्कर ने संभाला कार्यभार

अमृत विचार, लखनऊ : हृषिकेश भास्कर याशोद ने शुक्रवार को सचिव

राजस्व, राहत आयुक्त एवं चकबंदी आयुक्त का पदभार ग्रहण किया। इसके बाद उन्होंने विभागीय अधिकारियों के साथ परिचयात्मक बैठक की और राजस्व, राहत व चकबंदी से संबंधित कार्यों एवं लंबित प्रकरणों की प्रगति की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशों के क्रम में जनसामान्य से जुड़े राजस्व व राहत कार्यों में पारदर्शिता और त्वरित निस्तारण किया जाना शासन की प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रदेश सरकार की मंशानुसार राहत कार्यों में संवेदनशीलता तथा फील्ड स्तर पर सक्रियता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए, ताकि जनता को समयबद्ध सहायता मिल सके।

गोरखपुर में साहित्यिक महाकुंभ आज से

अमृत विचार, लखनऊ : गोरखपुर पुस्तक महोत्सव के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के परिसर में साहित्यिक महाकुंभ का आयोजन होने जा रहा है। 1 नवंबर से 9 नवंबर तक चलने वाले इस आयोजन की शुरुआत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को करेंगे। गोरखपुर विश्वविद्यालय परिसर में प्रथम गोरखपुर पुस्तक महोत्सव का आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास) की तरफ से किया जा रहा है। यह आयोजन नगर की गहरी आध्यात्मिक, कलात्मक और साहित्यिक विरासत का एक भव्य उत्सव होगा। पुस्तक महोत्सव में आमजन प्रतिदिन शामिल हो सकेंगे। इसमें सभी लोगों के लिए प्रवेश निशुल्क होगा।

सैमसंग इनोवेशन कैंपस में 1600 को ट्रेनिंग

अमृत विचार, लखनऊ : कारपोरेट और सर्विस फील्ड की मांग के अनुसार अपडेट प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के लिए सैमसंग इंडिया के सहयोग से संचालित सैमसंग इनोवेशन कैंपस के तहत गोरखपुर विश्वविद्यालय के 1600 विद्यार्थियों ने ट्रेनिंग ली। इन विद्यार्थियों को शनिवार को प्रमाण पत्र का वितरण किया जाएगा। योगिराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में आयोजित प्रमाण पत्र वितरण समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कुछ विद्यार्थियों को अपने हाथों से प्रमाण पत्र सौंपेंगे। इस अवसर पर विद्यार्थियों को मुख्यमंत्री योगी से मार्गदर्शन भी प्राप्त होगा।

अब लाल सलाम नहीं, जय श्रीराम

बिहार पहुंचकर मुख्यमंत्री योगी ने विपक्ष को ललकारा, कीं चुनावी जनसभाएं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा व राजग प्रत्याशियों के समर्थन में शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तीन रैली व जनसभा कर विपक्ष को ललकारा। मुख्यमंत्री ने महागठबंधन पर तंज कसते हुए कहा कि बिहार चुनाव में राहुल गांधी की एंट्री हो चुकी है, यही हमारे प्रत्याशियों की जीत की गारंटी है। योगी ने पहली रैली सिवान में एनडीए प्रत्याशी मंगल पांडेय, दरौंदा से कर्णजीत सिंह और बड़हरिया से इंद्रदेव सिंह पटेल के समर्थन में की। वहीं दूसरी जनसभा योगी ने वैशाली की लालगंज विधानसभा से बीजेपी प्रत्याशी संजय कुमार सिंह के समर्थन में की। जबकि तीसरी सभा भोजपुर के अगिआंव विधान सभा क्षेत्र में एनडीए प्रत्याशी महेश पासवान के पक्ष में की। इस दौरान योगी ने कम्युनिस्टों पर भी तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि जैसे गधे के सिर से सींग गायब हो गये, वैसे ही भारत ही नहीं दुनिया से कम्युनिस्टों का पत्ता साफ हो गया।

उन्होंने कम्युनिस्टों पर तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि जिस बिहार ने देश को स्वर्णयुग दिया, वहां अब लाल सलाम नहीं बल्कि जय श्रीराम का नारा गूंजेगा। योगी आदित्यनाथ ने विपक्षी दलों आरजेडी, कांग्रेस और भाकपा माले पर कटाक्ष करते हुए कहा कि वे सब गरीबों के राशन पर डकैती डालने का प्रयास कर रहे हैं।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आरजेडी, माले, कांग्रेस ये सब एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं। ये सब भारत की विरासत का विरोध करते हैं। गुलामी की मानसिकता का समर्थन करते हैं। आक्रांताओं को आमंत्रित करते हैं। अयोध्या में राममंदिर का विरोध करते हैं। सीतामढ़ी में सीता मइया के मंदिर का विरोध करते हैं। भारत के नागरिकों को लड़ाने का काम करते हैं। पर्व त्योहार के पहले दंगा कराने की कोशिश करते हैं। मगर, यूपी में आप सबने देखा होगा, वहां अब दंगा नहीं, बल्कि सब चंगा है। माफिया गायब हो चुके हैं, उनका जहन्नुम का टिकट काट दिया गया है।

बिहार में आयोजित चुनावी जनसभा के मंच से उपस्थित जनसमूह का अभिवादन करते मुख्यमंत्री योगी, साथ में पार्टी प्रत्याशी व अन्य।

जो राम का नहीं वो हमारे किसी काम का नहीं

मुख्यमंत्री बोले, कांग्रेस कहती थी कि राम हुए ही नहीं। आरजेडी राम मंदिर का रथ रोकते थे। सपा वाले रामभक्तों पर गोलियां चलाते थे और कम्युनिस्ट तो किसी दूसरे लोक के बारे में ही सोचते हैं। उन्होंने कहा कि जो राम का नहीं वो हमारे किसी काम का नहीं। जो राम का विरोध कर रहा है वो राष्ट्र का विरोध कर रहा है। जो राष्ट्र का विरोध कर रहा है वो हमारे किसी काम का नहीं, उसे राष्ट्र से बाहर का रास्ता दिखाना है।

राहुल गांधी की एंट्री हमारी जीत की गारंटी

बिहार चुनावी दौरे में योगी आदित्यनाथ ने यह भी कहा कि राहुल गांधी जब भी प्रचार करने आते हैं, एनडीए की जीत तय हो जाती है। वे बीजेपी और एनडीए की जीत की सबसे बड़ी गारंटी हैं।

कमियों का तय समय सीमा में सुधार करें चिकित्साधिकारी : घोष

अमृत विचार, लखनऊ : स्वास्थ्य विभाग एवं परिवार कल्याण विभाग के अपर मुख्य सचिव अमित कुमार घोष ने कहा कि अस्पतालों में समर्पित भाव से गुणवत्तापरक स्वास्थ्य व्यवस्था को स्थापित किया जाए। चिकित्सकीय और तकनीकी मानव संसाधन पूरी निष्ठा से रोगियों की सेवा के लिए तत्पर रहें। जिन जिलों में शिकायतें या कमियां पाई गईं, वहां मुख्य चिकित्साधिकारी और मुख्य चिकित्सा अधीक्षकों को तय समय सीमा में सुधार करें।

अपर मुख्य सचिव शुक्रवार को कानपुर मंडल की स्वास्थ्य सेवाओं और कार्यक्रमों की व्यापक समीक्षा बैठक कर रहे थे। उन्होंने चिकित्सकीय इकाइयों को इंगित करने वाले साइन बोर्ड और जियो टैगिंग के साथ ही अग्निशमन सुरक्षा के मानकों को पूरा करने का भी निर्देश दिए। साथ ही निर्देश दिए कि मंडलायुक्त प्रत्येक माह स्वास्थ्य विभाग की प्रगति समीक्षा करें और तीन माह बाद अनुपालन बैठक आयोजित की जाए। बैठक से पहले राज्य व मंडल स्तर के अधिकारियों और विशेषज्ञों की दो सदस्यीय 57 टीमों ने कानपुर मंडल के सभी जिलों की करीब 36 प्रतिशत स्वास्थ्य इकाइयों का स्थलीय भ्रमण कर जमीनी हकीकत जानी।

पूर्वी यूपी में आज से होगी धान की खरीद

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 के अंतर्गत पहली नवंबर से पूर्वी यूपी में धान खरीद शुरू होकर 28 फरवरी तक चलेगी। इस अवधि में लखनऊ संभाग के उन्नाव, रायबरेली और लखनऊ में भी धान खरीद होगी। वहीं पहली अक्टूबर से पश्चिमी यूपी और लखनऊ संभाग के हरदोई, लखीमपुर खीरी, सीतापुर में धान खरीद चल रही है।

दरअसल, सरकार ने इस वर्ष धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि भी की है। धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य (कॉमन)-2369 और (ग्रेड ए) का 2389 रुपये प्रति क्विंटल तय किया गया है। वहीं योगी सरकार की नीतियों पर समर्थन जताते हुए दो महीने में 2.17 लाख से अधिक किसानों ने बिक्री के लिए पंजीकरण भी करा लिया है।

पूर्वी यूपी के संभागों में पहली नवंबर से धान खरीद पूर्वी यूपी के चित्रकूट, कानपुर, अयोध्या, गोरखपुर, देवीपाटन, बस्ती, आजमगढ़, वाराणसी, मीरजापुर व प्रयागराज संभाग में शुरू होगी। इसके साथ ही लखनऊ संभाग के लखनऊ, रायबरेली व उन्नाव में भी पहली नवंबर से खरीद होगी, जो 28 फरवरी 2026 तक चलेगी।

- उन्नाव, रायबरेली और लखनऊ में भी 28 फरवरी 2026 तक चलेगी खरीद
- धान (कॉमन) 2369 और (ग्रेड ए) का 2389 रुपये प्रति क्विंटल एमएसपी तय

दो महीने में 2.17 लाख किसानों का पंजीकरण

धान बिक्री के लिए पहली सितंबर से पंजीकरण प्रारंभ हो गया था। 31 अक्टूबर (सुबह 11 बजे) तक 2,17,625 किसानों ने पंजीकरण करा लिया। वहीं पश्चिम उत्तर प्रदेश के 17 हजार से अधिक किसानों से एक महीने के भीतर 1.06 लाख मीट्रिक टन से अधिक की धान खरीद की जा चुकी है। योगी सरकार के निर्देश पर तेज गति से चल रहे कार्य की बदौलत 3920 क्रय केंद्र भी खुल गए हैं। धान बिक्री के लिए किसानों का पंजीकृत होना अनिवार्य है। किसानों को खाद्य व रसद विभाग की वेबसाइट fcs.up.gov.in या मोबाइल ऐप UP KISAN MITRA पर पंजीकरण कराना होगा।

सपा सरकार बनने पर पटेल के नाम पर बनाएंगे तकनीकी यूनिवर्सिटी : अखिलेश

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि सपा की सरकार बनने पर लौह पुरुष सरदार पटेल के नाम पर युवाओं के लिए माडर्न और तकनीकी यूनिवर्सिटी बनाएंगे। सरदार पटेल का जो रास्ता था, वही पीडीए का रास्ता है।

सपा प्रमुख शुक्रवार को पार्टी मुख्यालय में सरदार पटेल की 150वीं जयंती पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बाद प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर मौजूद सभी नेताओं ने सामाजिक न्याय के राज की स्थापना और सन् 2027 में सपा सरकार बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहरायी। अखिलेश यादव ने कहा कि सरदार पटेल ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगाया था। आरएसएस पर साम्प्रदायिक सौहार्द खराब करने नफरत फैलाने का आरोप था। आज भी भाजपा समाज में नफरत फैलाती है। अपनी कमियों को छिपाने के लिए भाजपा सरदार पटेल की बात करती है। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने देश की सीमाओं को बढ़ाया था। भाजपा सरकार में देश की सीमाएं सिकुड़ रही हैं। इनसेट-

गन्ना मूल्य बढ़ाने का विज्ञापन अंग्रेजी अखबार में : गन्ना मूल्य बढ़ाए जाने पर सपा प्रमुख ने कहा कि गन्ना मूल्य में 30 रुपये से ज्यादा की वृद्धि होनी चाहिए थी, साथ ही तंज कसा कि सरकार ने गन्ना मूल्य और भुगतान का विज्ञापन अंग्रेजी अखबार में छपवाया। अब बताओ कितने किसान अंग्रेजी में इसे पढ़े होंगे।

प्रेस कांफ्रेंस करते सपा प्रमुख अखिलेश।

बिहार में आज से चुनाव प्रचार करेंगे सपा प्रमुख

अमृत विचार,लखनऊ : सपा प्रमुख अखिलेश यादव, शनिवार 1 नवंबर से 5 नवंबर 2025 तक बिहार विधानसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी जनसभाएं करेंगे। वे मतदाताओं से समर्थन की अपील करेंगे। चुनावी सभाओं का तय कार्यक्रम घोषित कर दिया गया है। चुनावी सभाओं की शुरुआत 1 नवंबर को यादव पूर्णिया के धमदहा, मधुबनी के बबूराही और दरभंगा के बहादुरपुर में तीन जनसभाओं से करेंगे। अगले दिन समस्तीपुर, सीतामढ़ी और छपरा में रैलियां करेंगे। इस प्रकार 5 नवंबर तक जिलों में एक-एक दिन में कई कई रैलियों को संबोधित करेंगे।

नरेन्द्र देव की जयंती मनाई

अमृत विचार,लखनऊ : आचार्य नरेन्द्र देव की 136वीं जयंती पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने गोमती नदी किनारे स्थित आचार्य नरेंद्र देव के स्मारक पर पहुंचकर पुष्पांजलि कर नमन किया। इस मौके पर नरेन्द्र देव के परिवारीजन पौत्र यशोवर्धन तथा मीरा वर्धन मौजूद रहे।

आठ जिलों में 2,434 करोड़ की 15 परियोजनाएं मंजूर

3043 फ्लैट, 98 प्लॉट और 50 दुकानें होंगी विकसित, बैठक में रेरा ने दी स्वीकृति

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : उप्र रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण (रेरा) ने मुख्यालय पर 187वीं बैठक में 15 नई परियोजनाओं को स्वीकृति दी है। आठ जिलों में यह परियोजनाएं 2,434 करोड़ रुपये से तैयार की जाएंगी। लखनऊ व शाहजहांपुर में सबसे अधिक तीन-तीन आवासीय व व्यावसायिक परियोजनाएं विकसित की जाएंगी।

शुक्रवार को बैठक की अध्यक्षता अध्यक्ष संजय भूसरेड्डी ने की। इस दौरान परियोजनाओं के प्रस्ताव रखे गए। कुल 15 रियल एस्टेट परियोजनाओं में लखनऊ में 3, शाहजहांपुर में 3, मथुरा में 2, मुरादाबाद में 2, गाजियाबाद में 2 व हापुड़, नोएडा और झांसी में 1-1 परियोजना को मंजूरी दी गई। इनमें कुल निवेश 2,434 करोड़ अनुमानित है। परियोजनाओं के माध्यम से 3,043 फ्लैट, 98 प्लॉट और 50 दुकानें विकसित की जाएंगी। इनमें अधिकांश परियोजनाएं आवासीय हैं, जबकि व्यावसायिक परियोजनाएं मुरादाबाद, गाजियाबाद और हापुड़ में स्वीकृत की गई हैं।

शाहजहांपुर व पीतल नगरी मुरादाबाद को मिलेगी नई पहचान

शाहजहांपुर में सबसे अधिक तीन परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। यह क्षेत्र अब तेजी से उभरते हुए रियल एस्टेट केंद्र के रूप में पहचान बना रहा है। पीतल उद्योग के लिए प्रसिद्ध मुरादाबाद की स्वीकृत 2 परियोजनाओं में एक आवासीय और एक व्यावसायिक परियोजना शामिल है। इनमें आधुनिक अपार्टमेंट्स, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और ऑफिस स्पेस तैयार किए जाएंगे, जो शहर की पहचान को और भी आधुनिक स्वरूप देंगे। इससे न केवल रोजगार बढ़ेगा बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था में भी नई जान आएगी।

मथुरा में पर्यटन पर फोकस

धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ब्रज नगरी मथुरा में भी 2 नई आवासीय परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है। ये योजनाएं तीर्थ, पर्यटन और स्थानीय मांग को ध्यान में रखते हुए तैयार की जा रही हैं। इन परियोजनाओं से मथुरा के रियल एस्टेट सेक्टर को नई गति मिलेगी और शहर में आधुनिक आवासीय ढांचे का विकास होगा। इसी तरह गाजियाबाद और हापुड़ में स्वीकृत व्यावसायिक परियोजनाएं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के व्यापारिक और औद्योगिक ढांचे को और मजबूत करेंगी।

दर्शन को रखे जाएंगे बुद्ध के अवशेष

अमृत विचार, लखनऊ : सारनाथ स्थित मूलगंध कुटी, विहार की 94वीं वर्षगांठ के अवसर पर भगवान बुद्ध के अवशेषों के सार्वजनिक दर्शन के लिए अनावरण किया जाएगा। आगामी 3 से 5 नवंबर 2025 तक भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेषों को बौद्ध श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए रखा जाएगा। सारनाथ वही पुण्य भूमि है, जहां भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश धर्मचक्र प्रवर्तन दिया था।

यह जानकारी पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने शुक्रवार को दी। उन्होंने बताया कि अस्थि अवशेष दर्शन के लिए बड़ी संख्या में बौद्ध भिक्षुओं और आस्थावानों के पहुंचने का अनुमान है। श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, नेपाल तथा कोलकाता, गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, लद्दाख और हिमालयी क्षेत्रों से बौद्ध भिक्षु-भिक्षुणियां सारनाथ पहुंच रहे हैं। यह आयोजन महाबोधि सोसायटी ऑफ इंडिया, सारनाथ केंद्र और वियतनामी बौद्ध संघ के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। पर्यटन मंत्री ने बताया कि भगवान बुद्ध के अवशेषों को साल में दो बार बुद्ध पूर्णिमा और कार्तिक पूर्णिमा पर सार्वजनिक दर्शन के लिए रखा जाता है।

धर्म पर संकट स्थायी नहीं होता : राधाकृष्णन

उपराष्ट्रपति ने काशी में किया धर्मशाला का उद्घाटन

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में शुक्रवार को श्री काशी नाटकोट्टाई संस्था के नए धर्मशाला भवन का उद्घाटन किया। नाटकोट्टाई संस्था द्वारा 60 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इस आधुनिक धर्मशाला भवन का लोकार्पण समारोह के संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि धर्म को कुछ समय के लिए संकट हो सकता है, लेकिन वह कभी स्थायी नहीं होता। आज धर्म की विजय हुई है, यह इमारत उसी की साक्षी है। उन्होंने कहा कि 25 वर्ष पूर्व जब मैं काशी आया था, तब मैं मांसाहारी था। गंगा स्नान के बाद जीवन में इतना परिवर्तन आया कि मैंने शाकाहार अपना लिया।

राधाकृष्णन ने कहा कि 25 साल पहले की काशी और आज की काशी में जमीन-आसमान का अंतर है। यह परिवर्तन केवल दो कर्मयोगियों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कारण संभव हुआ है। उन्होंने कहा कि जहां नाटकोट्टाई समूह सक्रिय होता है, वहां सेवा, धर्म और प्रगति साथ-साथ चलती है। यह भवन उसी भावना का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यह धर्मशाला केवल एक इमारत नहीं, बल्कि उत्तर और दक्षिण भारत के सांस्कृतिक बंधन का नया अध्याय है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि काशी में गंगा नदी से लेकर तमिलनाडु की कावेरी नदी तक हमारी साझी परंपरा ये याद दिलाती है कि भाषाएं भले ही अलग हों, भारत की आत्मा एक ही है जो शाश्वत समावेशी और अटूट है। मुख्यमंत्री योगी ने 'वनक्कम काशी' से अपने संबोधन को शुरू करते हुए कहा कि ये हमारे लिए सुखद संयोग है कि यूपी की इस यात्रा में उपराष्ट्रपति बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र में पधारे हैं।

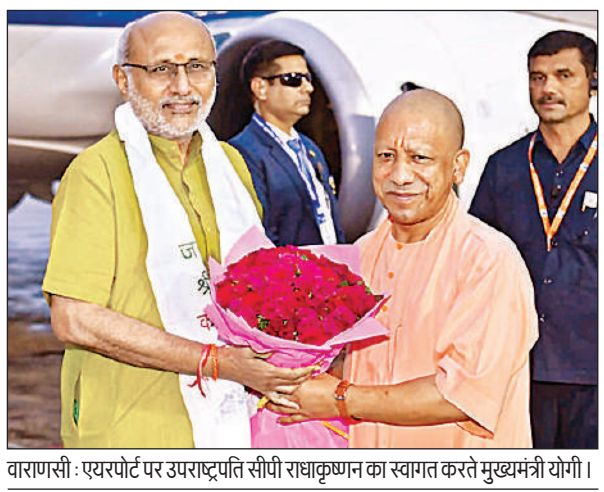

वाराणसी : एयरपोर्ट पर उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन का स्वागत करते मुख्यमंत्री योगी।

उपलब्धि | लखनऊ को यूनेस्को ने 'क्रिएटिव सिटी ऑफ गैस्ट्रोनॉमी' किया घोषित

लखनऊ के खानपान को वैश्विक सम्मान

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश ने वैश्विक पहचान की नई ऊंचाई छू ली है। राजधानी लखनऊ को यूनेस्को ने 'क्रिएटिव सिटी ऑफ गैस्ट्रोनॉमी' घोषित किया है। यह सम्मान उस शहर को मिलता है जो अपनी खानपान परंपरा, सांस्कृतिक विविधता और नवाचार से विश्व को प्रेरित करता है। यह घोषणा उज्बेकिस्तान के समरकंद में आयोजित यूनेस्को की 43वीं जनरल कॉन्फ्रेंस में 'वर्ल्ड सिटीज डे' के अवसर पर की गई।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदृष्टि और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश आज देश का गौरव बन चुका है। लखनऊ की यह उपलब्धि उसके समृद्ध खानपान और संस्कृति की वैश्विक स्वीकृति है। उन्होंने कहा कि लखनऊ की गैस्ट्रोनॉमी को मिली यह पहचान पर्यटन क्षेत्र की बढ़ती शक्ति और 'विकसित उत्तर प्रदेश' के विजन को साकार करने का प्रमाण है।

उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने लखनऊ के लिए नामांकन 31 जनवरी 2025 को केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय को भेजा था। विस्तृत समीक्षा के बाद भारत सरकार ने 3 मार्च 2025 को यूनेस्को को अंतिम डॉसियर प्रस्तुत किया। 31 अक्टूबर को आयोजित कॉन्फ्रेंस में लखनऊ को औपचारिक रूप से 'क्रिएटिव सिटी ऑफ गैस्ट्रोनॉमी' नेटवर्क में शामिल किया गया।

प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति अमृत अभिजात ने बताया कि यूनेस्को की इस सूची में अब दुनियाभर के 70 शहर शामिल हैं। इस वर्ष आठ नए शहरों को इस नेटवर्क में स्थान मिला है। उन्होंने कहा कि लखनऊ का यह चयन उसकी व्यंजन परंपरा और पाक कला धरोहर को वैश्विक मंच पर नई पहचान दिलाने वाला है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2024 में लखनऊ में 82.74 लाख पर्यटक आए, जबकि 2025 के पहले छह महीनों में ही 70.20 लाख पर्यटक पहुंच चुके हैं।

- विश्व मंच तक पहुंची अवधी स्वादों की महक

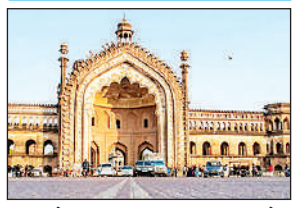

अनुराग हेल्थ केयर प्रा.लि.
•ICU •NICU DIALYSIS
• MODULAR OT
दूरबीन विधि से आपरेशन अब कम खर्च में
सीजीएचएस, मेडीक्लेम व आयुष्मान कार्ड मान्य
117/क्यू/702, शारदा नगर, कानपुर
9889538233, 7880306999

राष्ट्रीय एकता के लिए तिरंगा लेकर दौड़े अफसर-कर्मी व विद्यार्थी

शहर के पीएसएम पीजी कॉलेज में मंत्री असीम अरुण ने किया कार्यक्रम का शुभारंभ

शहर के पीएसएम पीजी कॉलेज में सरदार पटेल के चित्र के समीप दीप प्रज्जवलित करते समाज कल्याण मंत्री असीम अरुण। अमृत विचार

रन फॉर यूनिटी में तिरंगा लेकर शामिल हुए एडीजी आलोक कुमार, डीआईजी हरीश चंदर, डीएम आशुतोष मोहन अग्निहोत्री व एसपी विनोद कुमार। अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, कन्नौज

अमृत विचार। देश के पहले उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती को जिलेभर में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में उत्साह व धूमधाम से मनाया गया। अधिकारी, जनप्रतिनिधि, कर्मचारी, विद्यार्थी, शिक्षक समेत आम नागरिक तक रन फॉर यूनिटी में शामिल हुए। जगह-जगह शपथ ग्रहण भी कराई गई।

शहर के पीएसएम पीजी कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ समाज कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) असीम अरुण ने दीप प्रज्जवलित कर किया। उन्होंने बताया कि सरदार पटेल का विराट व्यक्तित्व था। देश की प्रगति में उनका खास रोल रहा है। युवाओं ने जोश व अनुशासन के साथ कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। कानपुर से आए अपर पुलिस महानिदेशक (एडीजी) आलोक कुमार, पुलिस उपमहानिरीक्षक कानपुर परिक्षेत्र (डीआईजी) हरीश चंदर, जिलाधिकारी आशुतोष मोहन अग्निहोत्री, पुलिस अधीक्षक कन्नौज विनोद कुमार ने कॉलेज से रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। हाथों में तिरंगा लेकर पुलिसकर्मियों के अलावा छात्रों व आमजन ने राष्ट्रीय एकता के लिए दौड़ लगाई। रन फॉर यूनिटी तिर्वा क्रॉसिंग होते हुए बोर्डिंग ग्राउंड में समाप्त हुई। इसी तरह डीआईजी ने रिजर्व पुलिस लाइन में हरी झंडी दिखाकर दौड़ को रवाना किया। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष प्रिया शाक्य, विधायक तिर्वा कैलाश राजपूत, एडीएम वित्त एवं राजस्व देवेंद्र सिंह, सीडीओ राम कृपाल चौधरी, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट वैशाली, पीडी राम औतार सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष वीर सिंह भदौरिया, ब्लॉक प्रमुख उमर्दा अजय वर्मा, पूर्व जिलाध्यक्ष नरेंद्र राजपूत, रामवीर कठेरिया व राकेश शर्मा उर्फ लालू मौजूद रहे।

कलेक्ट्रेट में शिक्षकों ने बनाई रंगोली, एकता का लिया संकल्प

- कलेक्ट्रेट के गांधी सभागार में अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) विजय मिश्र की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। उन्होंने राष्ट्रीय एकता की शपथ भी दिलाई। बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षक-शिक्षिकाओं की ओर से बनाई गई सरदार पटेल की रंगोली का अवलोकन भी उन्होंने किया। इस मौके पर एसडीएम छिबरामऊ ज्ञानेंद्र द्विवेदी, तिर्वा से राजेश कुमार, अतिरिक्त मजिस्ट्रेट अविनाश गौतम व नवनीता राय, केपी सिंह, अमित सिंह, विनय वर्मा, जय लक्ष्मी पांडेय मौजूद रहे। ब्लॉक जलालाबाद इलाके के पीएम श्री प्राथमिक विद्यालय जसपुरापुर सरैया प्रथम में भी विद्यार्थियों के साथ प्रधानाध्यापक रेनू कमल व अन्य शिक्षकों ने मिलकर कार्यक्रम किया। बच्चों को जानकारियां भी दी गईं।

एनसीसी कैडेट्स को दिलाई शपथ

संवाददाता, तिर्वा, कन्नौज

अमृत विचार। कस्बे के डीएन इंटर कॉलेज परिसर में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर एनसीसी कैडेट्स, पुलिसकर्मियों, टीचर व नागरिकों को कोतवाल संजय शुक्ल ने राष्ट्रीय एकता अखंडता की शपथ दिलाई। कालेज से ठठिया चौराहा से मां दुर्गा मंदिर चौराहा तक विद्यार्थियों ने दौड़ लगाई। रैली का खंड विकास कार्यालय परिसर में समापन हुआ। पुलिस विभाग ने प्रतिभागियों को स्वल्पाहार वितरित किया।

इसी क्रम में इंदरगढ़ थानाध्यक्ष नीलम सिंह सरदार पटेल इंटर कॉलेज कचाटीपुर में पुलिस के साथ शामिल हुईं। लौह पुरुष की प्रतिमा के समक्ष प्रधानाचार्य ने छात्र-छात्राओं को शपथ दिलाई। थानाध्यक्ष के नेतृत्व में दौड़ हुई जो कचाटीपुर होती हुई अगौस में समाप्त हुई। ठठिया थाना प्रभारी देवेश पाल के नेतृत्व में रन फॉर यूनिटी की दौड़ थाने से प्रारंभ होकर इत्र पार्क में संपन्न हुई।

डीएन इंटर कॉलेज तिर्वा में शपथ दिलाते हुए कोतवाल संजय शुक्ल। अमृत विचार

पुलिस ने दौड़ लगाकर मनाई पटेल जयंती

सौरिख। सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर थाना पुलिस ने दौड़ लगाकर एकता का परिचय दिया। शुक्रवार सुबह 8 बजे पुलिसकर्मियों ने कस्बा के बिधूना रोड पर हाथों में बैनर लेकर मार्च निकाला। नादेमऊ चौराहे पर पहुंचकर बिधूना रोड पर जवानों ने दौड़ लगाई। प्रभारी निरीक्षक जयंती प्रसाद गंगवार ने बताया सरदार वल्लभ भाई पटेल एक महान व्यक्तित्व का नाम है। उन्होंने हमेशा देश को एकजुट रहने के लिए संघर्ष किया था। उनकी एकता की एक मिसाल कायम की और उनके पद चिन्हों पर चलकर देश में एक जुटता का माहौल पैदा हुआ।

रन फॉर यूनिटी: छिबरामऊ में भी पुलिस ने लगाई दौड़

छिबरामऊ। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर प्रभारी निरीक्षक विष्णुकांत तिवारी के नेतृत्व में रन फॉर यूनिटी का आयोजन हुआ। थाना छिबरामऊ पुलिस, जनता इंटर कॉलेज के विद्यार्थी और हीरालाल इंटर कॉलेज के एनसीसी कैडेट्स ने मिलकर दौड़ शुरू की जो जनता इंटर कॉलेज से विशुनगढ़ तिराहा, सब्जी मंडी, पीपल तिराहा, नगर पालिका तिराहा, अस्पताल तिराहा होते हुए सौरिख तिराहा पर समाप्त हुई।

रन फॉर यूनिटी निकालते पुलिसकर्मी व छात्र एवं एनसीसी कैडेट्स।

न्यूज ब्रीफ

अतिक्रमण हटाने को दो दिन का समय दिया

छिबरामऊ। पूर्वी बाईपास पर ब्लॉक भवन और बिजली घर के निकट फैले अतिक्रमण को हटाने के लिए एसडीएम ज्ञानेंद्र द्विवेदी और नगर पालिका के ईओ सुनील कुमार अपनी टीम के साथ शुक्रवार को पहुंचे। दुकानदारों को चेतावनी दी कि दो दिनों के भीतर स्वयं अतिक्रमण हटा लें, अन्यथा सोमवार को प्रशासन द्वारा बुलडोजर चलाकर हटवाया जाएगा। ईओ सुनील कुमार ने बताया कि टीम ने मौके पर पैमाइश की और नोटिस वितरित किए। अतिक्रमण में मुख्य रूप से दुकानों के बाहर फैले सामान, स्टॉल और अवैध निर्माण शामिल हैं। स्थानीय व्यापारियों ने सहयोग का आश्वासन दिया, लेकिन कुछ ने आपत्ति जताई।

करंट की चपेट में आने से चार मवेशी मरे

छिबरामऊ। बिजली घर के समीप राधा नगर मोहल्ले में करंट की चपेट में आने से दो गाय और दो भैंसों की मौके पर ही मौत हो गई। राधानगर निवासी पीड़ित रत्नेश ने बताया कि उनकी एक भैंस, कमलेश की दो गाय और नीलेश की एक भैंस मोहल्ले में ही बंधी थीं। पड़ोस में ही बिजली घर और उसके पास एक पोल लगा है। इसी पोल में करंट उतरने से मवेशी चपेट में आ गए और उनकी मौत हो गई। पीड़ित मवेशी मालिकों ने इस घटना की शिकायत स्थानीय पुलिस से की है। उन्होंने बिजली विभाग की लापरवाही पर सवाल उठाए और मुआवजे की मांग की।

चलती कार में लगी आग बाल-बाल बचा चालक

गुरसहायगंज। हाईवे से घर लौट रहे युवक की कार में अचानक आग लग गई। युवक ने कार को खड़ा कर अपनी जान बचाई लेकिन तब तक झुलस कर घायल हो गया। फर्रुखाबाद के फतेहगढ़ छोटी जेल निवासी सत्यम मिश्रा पुत्र दयाशंकर मिश्रा ने बताया कि वह शुक्रवार की शाम करीब 04 बजे कानपुर से अपने घर फतेहगढ़ लौट रहा था। तभी ग्राम डुडवाबुजुर्ग से आगे स्थित ओवरब्रिज पर उसकी सीएनजी कार में आग लग गई। धुआं देख कार को सड़क किनारे खड़ा कर दिया लेकिन तब तक आग ने विकराल रूप ले लिया और वह झुलसने लगा। किसी तरह अपनी जान बचाई। सूचना पर पहुंचे समधन चौकी प्रभारी दीपक कुमार सिंह ने कार को हाईवे से हटवाया।

पटेल जयंती पर हुई निबंध प्रतियोगिता

जलालाबाद। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वीं जयंती पर शुक्रवार को जिला कारागार अनौगी में जेल अधीक्षक भीमसेन मुकुंद ने लौह पुरुष के चित्र पर माल्यार्पण कर राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई गई। जेल अधीक्षक के नेतृत्व में कारागार परिषद में तिरंगा लेकर रैली निकाली गई। इसके उपरांत निबंध प्रतियोगिता हुई।

रन फार यूनिटी में दौड लगाने के बाद मौजूद कोतवाल व छात्र, छात्राएं।

लौह पुरुष की जयंती पर लिया गया एकजुटता का संकल्प

संवाददाता गुरसहायगंज

अमृत विचार। लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती पर नगर सहित क्षेत्र में विभिन्न आयोजन किए गए। संस्थानों में चित्र पर माल्यार्पण कर व रैली निकालकर एकजुटता का संदेश दिया गया।

शुक्रवार को नगर पालिका परिषद गुरसहायगंज में अधिशाषी अधिकारी अनिल कुमार, नगर पंचायत समधन में कर्मियों ने सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती मनाई। ईओ ने सभासदों व पालिकाकर्मियों को एकजुटता की शपथ दिलाई। कोतवाली में कोतवाल कपिल दुबे ने चित्र पर पुष्पअर्पित कर पुलिस कर्मियों को शपथ दिलाई। नगर के फर्रूखाबाद रोड स्थित आकाश एजूकेशन सेंटर, तिर्वा रोड स्थित सरोजनी देवी बालिक इण्टर कालेज, मदन मोहन मालवीय इंटर कालेज, सरस्वती शिशु मंदिर, गोमती देवी आदर्श इंटर कालेज, तेराजाकेट स्थित बाबू जागेश्वर प्रसाद इंटर कालेज में शिक्षक व छात्र-छात्राओं ने सरदार बल्लभ भाई पटेल के चित्र पर पुष्पार्चन कर उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। इससे पहले आकाश एजूकेशन सेंटर से कोतवाल कपिल दुबे, कस्बा प्रभारी दीपक चौधरी, समधन प्रभारी दीपक कुमार, प्रबंधक डा. आरके कटियार, डायरेक्टर आकाश कटियार सहित शिक्षक व छात्र, छात्राओं ने पुलिस कर्मियों के साथ एकता दौड़ लगाई। इसी प्रकार चौधरी जयवीर सिंह इंटर कॉलेज मिश्रापुर सराय प्रयाग कन्नौज में प्रबंधक प्रशांत सिंह ने जयंती मनाई। इस दौरान मुख्य व्यवस्थापक आलोक यादव, राजेंद्र सिंह यादव, अभिषेक पाल, अगम कुमार दुबे, संजीव मोहन शर्मा, अजीत, सचिन, संगम, दिनेश, रोहित, ज्ञानेंद्र, प्रदीप, आकांक्षा दुबे, पूजा गुप्ता, शिवानी, श्वेता, रिंकी आदि रहे।

पुण्य की प्राप्ति के लिए की आंवला की पूजा

गुरसहायगंज। कार्तिक मास की अक्षय नवमी पर सुहागिनों ने सोलह शृंगार कर पारम्परिक ढंग से ऑवला वृक्ष की पूजा अर्चना की।

महिलाओं ने व्रत रखकर 108 आटे के आंवले बनाकर, 108 परिक्रमाएं लगाईं और अक्षय फल में सुख समृद्धि की कामना की। शुक्रवार को महिलाओं ने नगर के जीटी रोड, फर्रूखाबाद रोड स्थित आंवला वृक्ष की पूजा अर्चना कर अक्षय नवमी का पर्व पारम्परिक ढंग से मनाया। अविवाहित युवतियों ने भी भगवान विष्णु से अच्छे वर की मनोकामना की।

दहेज उत्पीड़न में पति, जेठ व ससुर को सजा

कार्यालय संवाददाता कन्नौज/ छिबरामऊ

- सास को भी दोषसिद्ध पाया लेकिन 6 माह की सदाचार परिवीक्षा पर छोड़ा

अमृत विचार। दहेज उत्पीड़न के मामले में अपर सिविल जज जूनियर डिवीजन अंकुश श्रीवास्तव ने महिला के ससुर, पति व जेठ को दोषी पाते हुए सजा तथा जुर्माने से दंडित किया है। सास को भी दोषसिद्ध पाया गया लेकिन छह माह की सदाचार परिवीक्षा पर छोड़े जाने का आदेश दिया।

शासकीय अधिवक्ता दानिश जमाल ने बताया कि थाना विशुनगढ़ में लक्ष्मी देवी ने वर्ष 2020 में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इसमें कहा था कि उसकी शादी पिता ने चार साल पहले गोपाल पुत्र नेकसे निवासी खबरिया, थाना विशुनगढ़ के साथ अपनी सामर्थ्य के अनुसार एक लाख रुपये नकद, मोटरसाइकिल के अलावा दहेज का सारा सामान देकर की थी। इससे ससुरालीजन खुश नहीं थे। उसकी शादी के बाद ही पिता की मृत्यु हो गई थी। इसके बाद अतिरिक्त दहेज की मांग को लेकर पति गोपाल, जेठ जितेंद्र, सास ऊषा देवी, ननद नीलम व संगीता तथा ससुर नेकसे पुत्र घासीराम उसके साथ आए दिन मारपीट कर एक लाख रुपये, चेन व अंगूठी की मांग करने लगे। 23 अप्रैल 2020 को सुबह 10 बजे ससुराल वालों ने उसे पहने हुए कपड़ों में घर से निकाल दिया तथा पहना हुआ जेवर उतरवा लिया। उसने फोन कर अपनी मां व चाचा को बुलवा लिया तो उनको भी उक्त लोगों ने मारा पीटा। जान से मारने के भय से वह मायके चली आई है। मामले में रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस ने विवेचना की जिसमें दोनों ननदों के खिलाफ साक्ष्य न मिलने से नाम हटा दिए गए। इसके बाद पति, जेठ, सास व ससुर के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया।

सुनवाई पूरी होने के बाद न्यायाधीश ने पति, जेठ व ससुर को दो-दो साल के कारावास तथा 5000-5000 रुपये जुर्माने की सजा सुनाई। वहीं सास ऊषा देवी को 6 माह की सदाचार परिवीक्षा पर छोड़ा गया। साथ ही 20 हजार की दो जमानते जिला प्रोबेशन अधिकारी के अधीन प्रस्तुत करने के साथ इतनी ही राशि का निजी बंधपत्र दाखिल करने का आदेश दिया।

www.amritvichar.com
पर भी खबरें पढ़ें

इंदिरा गांधी, सरदार पटेल और आचार्य नरेन्द्र देव को कांग्रेसियों ने दी श्रद्धांजलि

संवाददाता छिबरामऊ

अमृत विचार। पुराना बस स्टैंड स्थित कांग्रेस कार्यालय में पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी के शहादत दिवस, लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल तथा प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी आचार्य नरेन्द्र देव की जयंती पर कांग्रेस नेताओं ने श्रद्धा सुमन अर्पित कर भारत की इन तीन महान धरोहरों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई।

पीसीसी सदस्य संजय पौल, जन आंदोलन फ्रंट के प्रदेश महासचिव विनोद दुबे, जिला उपाध्यक्ष विनोद दुबे पप्पू, नगर अध्यक्ष आशीष चौहान, शशिकांत गुप्ता, राजू खान, मेहराज वारसी, देवकीनंदन दुबे, अमोल दीक्षित, विकास मिश्रा, महेश चंद्र, दीक्षित निशांत मिश्रा, शिवम मिश्रा सहित कई नेता मौजूद रहे।

छिबरामऊ में महापुरुषों को श्रद्धांजलि देते कांग्रेसी नेता अमृत विचार

नेहरू कॉलेज में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया

संवाददाता,छिबरामऊ

अमृत विचार। शुक्रवार को नेहरू कॉलेज की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई द्वारा एक दिवसीय शिविर के अंतर्गत सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. जयवीर सिंह ने की। मुख्य वक्ता राघवेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि भारत का एकीकरण केवल रियासतों तक सीमित नहीं, बल्कि विभिन्न समुदायों, भाषाओं, संस्कृतियों एवं लोकतांत्रिक अभिव्यक्तियों का मिलन था, जिसमें पटेल का अभूतपूर्व योगदान रहा। डॉ. कृष्ण कुमार यादव , एनएसएस प्रभारी डॉ. आशीष कुमार गुप्ता, डॉ. रवि प्रताप सिंह रहे। अंत में 'रन फॉर यूनिटी' आयोजित हुई, जिसमें मुख्य परिसर में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक दौड़ लगाई।

पोस्टर बनाकर जयंती मनाते छात्र-छात्राएं।

4 नवंबर से शुरुआत | जिलेभर के कुल 1522 बीएलओ हर घर या परिवार में दस्तक देंगे, मतदाता को कोई अभिलेख नहीं देना है ,उसका ब्योरा प्रपत्र में भरना होगा

विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण में 12 .84 लाख वोटरों की जानकारी जुटाएंगे बीएलओ

कार्यालय संवाददाता, कन्नौज

अमृत विचार। निर्वाचक नामावलियों का विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर)04 नवंबर से शुरू हो जाएगा। इसमें जिलेभर के कुल 1522 बीएलओ हर घर या परिवार में दस्तक देंगे और करीब 12 लाख 84 हजार वोटरों की जानकारी जुटाएंगे। इसमें किसी को परेशान होने की जरूरत नहीं है। न ही मतदाता को कोई अभिलेख देना है बल्कि उसका ब्योरा प्रपत्र में भरना होगा।

सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी बिनीत कटियार ने बताया कि इसको लेकर जिला निर्वाचन अधिकारी आशुतोष मोहन अग्निहोत्री ने मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के जिलाध्यक्षों/ प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। कहा है कि कोई भी पात्र मतदाता अभियान से वंचित नहीं होना बीएलओ गणना अवधि के दौरान प्रत्येक मतदाता के घर तीन-तीन बार भ्रमण करेंगे। इस दौरान दो प्रतियों में गणना प्रपत्र उपलब्ध कराएंगे एक प्रति भरकर बीएलओ को लौटाने के बाद मतदाता को प्राप्ति रसीद दी जाएगी। मतदाता चाहें तो अपना गणना प्रपत्र ऑनलाइन पोर्टल https://voters.eci.gov.in/ पर भी भर सकते हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने स्पष्ट किया कि गणना के दौरान किसी अन्य अभिलेख की आवश्यकता नहीं होगी। आलेख्य नामावली में उन्हीं मतदाताओं के नाम सम्मिलित होंगे जिनके गणना प्रपत्र बीएलओ को प्राप्त हो चुके होंगे। जिन नामों का मिलान अंतिम विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण 2003 से नहीं हो सकेगा, उन्हें नोटिस जारी किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि मृतक, स्थानांतरित, अनुपस्थित अथवा डुप्लीकेट मतदाताओं की सूची, जिन्हें आलेख्य में सम्मिलित नहीं किया गया है, मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उ.प्र., लखनऊ की वेबसाइट पर प्रदर्शित की जाएगी। पात्रता के सत्यापन के लिए निर्वाचन आयोग से निर्धारित 13 सांकेतिक दस्तावेजों में से किसी एक के आधार पर जांच की जाएगी।

इस तरह चलेगा अभियान: बीएलओ घर-घर गणना प्रपत्र वितरण एवं संकलन 04 नवंबर से 04 दिसंबर तक करेंगे। निर्वाचक नामावली का आलेख्य प्रकाशन 09 दिसंबर को होगा। दावे एवं आपत्तियां दाखिल करने की अवधि 09 दिसंबर 2025 से 08 जनवरी 2026 तक रहेगी। दावे-आपत्तियों की सुनवाई, सत्यापन एवं निस्तारण 31 जनवरी, 2026 तक किया जाएगा। निर्वाचक नामावली का अंतिम प्रकाशन 07 फरवरी 2026 को होगा।

जानकारी देते सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी विनीत कटियार। अमृत विचार

निर्णय से असंतुष्ट तो अपील भी कर सकेंगे

- निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी या उपजिलाधिकारी के निर्णय के विरुद्ध प्रथम अपील जिला मजिस्ट्रेट के समक्ष तथा उनके निर्णय के विरुद्ध द्वितीय अपील मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उत्तर प्रदेश के समक्ष की जा सकेगी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि सभी मान्यता प्राप्त राजनैतिक दल अपने-अपने बूथों पर बूथ लेवल एजेंट (बीएलए) नियुक्त करेंगे, जो बीएलओ से समन्वय स्थापित करेंगे। ये एजेंट मतदाताओं से विधिवत भरे हुए अधिकतम 50 गणना प्रपत्र प्रतिदिन एकत्र कर बीएलओ को देंगे।

नए मतदाता बनने के लिए भी आवेदन

- इसके साथ ही 01 जनवरी, 2026 को 18 वर्ष पूर्ण करने वाले सभी नवयुवक मतदाता प्रपत्र-6 (घोषणा पत्र सहित) बीएलओ को प्रस्तुत कर सकते हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा है कि 04 नवंबर से 04 दिसंबर तक जब बीएलओ लोगों के घर आएं, तो उन्हें पूर्ण सहयोग प्रदान करें और अपनी मतदाता जानकारी मुहैया कराएं। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (वि./रा.) देवेंद्र सिंह, प्रशिक्षु आईएएस अर्पित कुमार, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी बिनीत कटियार और पार्टियों के प्रतिनिधि रहे।

घर-घर जाएं बीएलओ, मतदाताओं का सूची से करें मिलानःएसडीएम

तिर्वा। निर्वाचन आयोग के निर्देश पर शुक्रवार को उप जिलाधिकारी राजेश कुमार की अध्यक्षता में तहसील सभागार में विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान को लेकर बैठक आयोजित की गई।

एसडीएम ने निर्देश दिए कि अभियान के तहत प्रत्येक बीएलओ अपने क्षेत्र में घर-घर जाकर मतदाताओं से संपर्क करें और 2023 की मतदाता सूची से उसका मिलान करें। जिन मतदाताओं के नाम दो जगह दर्ज हैं, उनका नाम एक स्थान से हटाकर केवल एक ही जगह रखा जाए।

यह भी कहा कि जिन पात्र नागरिकों के नाम मतदाता सूची में शामिल नहीं हैं, उनके नाम एसआईआर फॉर्म भरवाकर जोड़े जाएं तथा मृतक मतदाताओं के नाम पृथक किए जाएं। कोई भी पात्र मतदाता सूची से वंचित न रह जाए।

New DASTAK Classes
दस्तक, आपके सफलता की
The classes are known for preparing students for various exams like
SSC, BANK, UPSI, UPP
Address: Sharada Nagar Crossing No 9, Infront of Anurag Hospital, Kakadeo Kanpur Uttar Pradesh.
CONTACT: 7607780084, 7080270066
Vikash Pathak

अमृत विचार

कानपुर, शनिवार 1 नवंबर 2025

कन्नौज-फर्रुखाबाद

न्यूज ब्रीफ

राष्ट्रीय एकता दिवस धूमधाम से मनाया

फर्रुखाबाद । आर्मी पब्लिक स्कूल फतेहगढ़ में 31 अक्टूबर 2025 को राष्ट्रीय एकता दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। यह दिवस भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 4 यूपी गर्ल्स बटालियन की 40 एनसीसी कैडेट्स एवं सीटीओ अनुराधा मुखर्जी ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कैडेट्स ने स्कूल परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में एकता एवं अखंडता का संदेश देते हुए रैली निकाली। कैडेट्स ने नारे लगाते हुए राष्ट्रीय एकता, भाईचारे तथा देश की अखंडता का संदेश दिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने एनसीसी कैडेट्स के अनुशासन, जोश और राष्ट्रभक्ति की सराहना की एवं उन्हें राष्ट्र की एकता और सद्भाव को बनाए रखने हेतु प्रेरित किया।

छात्र, छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

गुरसहायगंज । ब्लाक गुगरापुर के पूर्व माध्यमिक विद्यालय मोहनपुर रतनपुर में सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर शुक्रवार को पोस्टर, रंगोली, चार्ट, निबंध, स्लोगन, खेलकूद और वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कंचन, रिद्धि, जानकी, प्राची, दिव्यांशी, राखी ने चार्ट बनाकर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्रों की दौड़ में प्राची प्रथम, द्वितीय स्थान प्राची, तृतीय स्थान पर रागिनी रही। वॉलीबॉल में तेजस की टीम प्रथम रही। वाद विवाद में तेजस प्रथम रहे। छात्रों की दौड़ में तेजस प्रथम, रोहित द्वितीय व इजान तृतीय स्थान पर रहे। प्रधानाध्यापक विपिन माथुर ने छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया। इस दौरान राजीव सिंह, एसएमसी अध्यक्ष संतोष शर्मा, ग्राम प्रधान प्रदीप शुक्ला,अभिभावक रहे।

स्वामी प्रज्ञानंद महाराज आज आएंगे

कन्नौज । जगद्गुरू आदि शंकराचार्य ज्योतिष पीठ एवं शारदा पीठ श्री श्री 1008 स्वामी प्रज्ञानंद सरस्वती महाराज 01 नवंबर को दोपहर 3 बजे शहर के ताजपुर नौकास्त आएंगे। जिला कचहरी के अधिवक्ता सौमित्र मिश्र माणिक्य ने बताया कि उत्तराखंड के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ गंगा समग्र के प्रांत संगठन मंत्री निरंजन के निवास ताजपुर नौकास्त में महाराज का आगमन होगा। यह जिले के लिए परम सौभाग्य और गौरव की बात है। डीएम व एसपी को पत्र देकर निजी सचिव रूपेश बाजपेई व सुरक्षा अधिकारी गिरिराज उपाध्याय ने जानकारी दी है। साथ ही सुरक्षाकर्मियों की मांग रखी है।

आधार कार्ड बनाने को लगाया कैंप

जलालाबाद । सरकार द्वारा चलाई जा रही महत्वाकांक्षी योजनाओं के क्रियान्वयन और ग्रामीणों को आधार के लिए इधर-उधर न भटकना न पड़े, इसके लिए शुक्रवार को पोस्ट ऑफिस अनौगी में आधार कार्ड कैंप का आयोजन किया गया। इसमें विकास राठौर ने आधार कार्ड बनाए। पोस्टमास्टर इंद्रेश सिंह ने लोगों को चालू खाता, बचत खाता एवं पोस्ट ऑफिस की अन्य योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

तालग्राम थाना प्रभारी सहित दो लाइन हाजिर

कन्नौज । एसपी विनोद कुमार ने शुक्रवार को तालग्राम थाना प्रभारी शशिकांत कन्नौजिया व गुरसहायगंज कोतवाली प्रभारी कपिल दुबे को लाइन हाजिर कर दिया। कार्रवाई किस वजह से हुई इसकी स्पष्ट वजह पता नहीं चली है। बताया गया है कि रन फॉर यूनिटी के लिए अपर पुलिस महानिदेशक आलोक कुमार जब यहां आए तो समीक्षा के दौरान गुरसहायगंज तथा तालग्राम थाना क्षेत्र की शिकायतों में निस्तारण में ढिलाई पाई गई जिस पर उन्होंने दोनों पर कार्रवाई के निर्देश दिए।

सड़क दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत, एक की हालत गंभीर

छिबरामऊ में बाइक में ट्रक ने मारी टक्कर, गुरसहायगंज में अनियंत्रित हुई बाइक

संवाददाता छिबरामऊ/ गुरसहायगंज

सुमित कुमार।

अंशुल ।

घटना स्थल पर लगा जाम। अमृत विचार

अमृत विचार। छिबरामऊ और गुरसहायगंज में हुई दो सड़क दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत हो गई जबकि एक की हालत गंभीर है।

छिबरामऊ में मोहल्ला चौधरियन निवासी अंशुल (20) पुत्र अशोक बाथम और उसका छोटा चचेरा भाई आशीष (18) पुत्र बालक राम शुक्रवार देर शाम किसी काम से बाइक पर जा रहे थे। इसी दौरान पूर्वी बाईपास स्थित काशीराम कॉलोनी के सामने एक तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी।

घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को अवगत कराया। पुलिस की 112 गाड़ी ने दोनों को तुरंत सौ शैय्या अस्पताल पहुंचाया, यहां प्राथमिक उपचार के दौरान अंशुल पुत्र अशोक की मौत हो गई जबकि गंभीर रूप से घायल आशीष को तिर्वा मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। उधर, घटना के बाद सड़क पर जाम लग गया जिसे पुलिस ने खुलवाकर यातायात सुचारू कराया।

उनके परिवार में माता गुड्डी देवी, तीन भाई सुनील, सूरज व अंशुल तथा दो बहनें शिवानी और अन्ना हैं। आशीष भी उसी मोहल्ले के रहने वाले हैं और बालक राम के पुत्र हैं। अंशुल की हालत बेहद नाजुक बताई जा रही है। पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गुरसहायगंज संवाददाता के अनुसार ग्राम भंवरगाढ़ा निवासी अजय पाल सिंह शुक्रवार की शाम लगभग 03.45 बजे अपने पुत्र सुमित कुमार (14) के साथ बाइक से ग्राम इंदुयाइयागंज जा रहा था। रास्ते में ब्रेकर पार करते समय बाइक असंतुलित हो गई। इससे पिता पुत्र बाइक से गिर गए।

तभी सामने से आ रहे ट्रैक्टर के चालक ने सड़क पर गिरे किशोर को टक्कर मार दी जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों ने उसे सीएचसी में भर्ती कराया जहां से मेडिकल कालेज तिर्वा रेफर कर दिया गया। वहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

लगातार बारिश से खेत में गिरी पड़ी धान की फसल। अमृत विचार

सौरिख में लगातार बारिश से धान की फसल बर्बाद

संवाददाता सौरिख

- 28 अक्टूबर से लगातार रुक रुक कर हो रही बारिश

अमृत विचार। तीन दिन से हो रही बारिश व हवा के झोंकों से धान की तैयार फसल खेतों में गिर गई। इससे आधी धान की फसल बर्बाद हो गई। किसान ने सरकार से मुआवजे की मांग की।

28 अक्टूबर से लगातार तीन दिन से रुक रुककर हो रही बारिश और हवा के झोंकों तथा खेतों में पानी भरने से धान की तैयार फसल गिरकर बर्बाद हो गई। इससे पहले 30 सितंबर को भी मूसलाधार बारिश से पानी में डूबने से धान अंकुरित हो गया था। निचले इलाके के खेतों में अभी धान की कटाई नहीं हो पाई थी। तीन दिन से फिर बारिश होने से धान की तैयार फसल के अलावा बोई गई आलू और सरसों की फसल उगने से पहले ही खराब हो गई। इससे किसानों को दोबारा बुवाई करनी पड़ेगी बारिश से किसानों को दोहरा नुकसान हुआ।इलाके के किसानों में हेतराम, प्रकाशचन्द्र, रविंद्र कुमार, दीनदयाल, अश्वनी कुमार, राजकिशोर, शासन से नुकसान का आकलन कराकर मुआवजे की मांग की है।

किशोर की हत्या में आरोपी गिरफ्तार

करीम।

तिर्वा। किशोर की हत्या में फरार चल रहे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। बता दें कि कोतवाली क्षेत्र के ग्राम अहेर में 26 सितंबर की रात दावत वलीमा के दौरान अब्दुल गनी के 17 साल के पुत्र अजमत अली की मामूली कहासुनी में पीट कर हत्या कर दी गई थी। मृतक के पिता ने गांव के ही निवासी नसीम, वसीम, हसीम, दिलजान व करीम के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस नसीम,वसीम,हसीम तथा दिलजान को पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। करीम फरार चल रहा था। शुक्रवार को सूचना मिली कि वांछित अभियुक्त करीम भागने के प्रयास में आगरा लखनऊ एक्सप्रेस फगुहा कट के पास खड़ा है। इस पर प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार शुक्ला, उप निरीक्षक गुलाब केशकर,हेड कांस्टेबल जय प्रकाश, कांस्टेबल ओमवीर चाहर,तथा अताउल्ला की टीम ने अभियुक्त करीम की गिरफ्तार कर लिया है।

गोवर्धन लीला सुनकर श्रोता हुए मंत्रमुग्ध

संवाददाता मानीमऊ

- मानीमऊ में 21 कुंडीय शतचंडी महायज्ञ में हो रही श्रीमद्भागवत
- कथा व्यास शिवम शुक्ला ने गोवर्धन लीला का वर्णन किया

कथा कहते कथा व्यास। अमृत विचार

अमृत विचार। मानीमऊ गांव में चल हे 21 कुंडीय शतचंडी महायज्ञ में श्रीमद् भागवत कथा भी हो रही है। कथा के छठवें दिन गोवर्धन लीला की कथा सुनाई गई। इससे पहले माखन चोरी, पूतना वध, भगवान का नामकरण आदि लीलाओं का वर्णन किया गया। गोवर्धन लीला सुन कर श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए।

शुक्रवार को मानीमऊ गांव में भगवान आनंदेश्वर धाम के मंदिर पर श्रीमद् भागवत कथा में कथा व्यास शिवम शुक्ला ने गोवर्धन लीला का वर्णन किया। बताया कि जब इंद्रदेव रुष्ट हुए और लगातार भीषण वर्षा हुई तो भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर रखकर गोकुलवासियों की रक्षा की। इससे पहले कथा व्यास ने पूतना वध, भगवान का नामकरण आदि कथाओं का वर्णन किया। आनंदेश्वर धाम पीठ पीठाधीश्वर पंडित कौशल जी महाराज ने जनेऊ संस्कार कराया।

तिर्वा में कोतवाली के सामने बड़ा गड्ढा दे रहा हादसों को दावत

संवाददाता तिर्वा

सड़क के गड्ढे में भरे कीचड़ से गुजरते वाहन। अमृत विचार

अमृत विचार। कोतवाली गेट के सामने सड़क पर स्थित बड़ा सा गड्ढा बवालेजान बना है। थोड़ी सी बरसात से जलभराव व कीचड़ निकलने वालों के लिए किसी मुसीबत से कम नहीं होता है। सालों साल बीतने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं हो सका है।

कस्बा के सुजान सराय रोड पर कोतवाली गेट के सामने हो चुके बड़े से गड्ढे में थोड़ी सी बरसात में जलभराव हो जाता है। व्यस्त मार्ग होने के कारण यातायात की अधिकता बनी रहती है। पीडब्लूडी विभाग यदाकदा मिट्टी डलवाकर खानापूरी करता रहता है। बावजूद इसके आज तक इस विकराल समस्या का स्थाई समाधान नहीं हो सका है। यह स्थिति तब है जब कि सामने ही पी डब्लू डी विभाग का स्टोर बना है।

तिर्वा खास स्थित रग्घू का तालाब की जल निकासी समस्या का स्थाई हल न होने से हालात जस के तस बने हैं। तालाब के पानी की निकासी के लिए ईशन नदी तक नाले के निर्माण का प्रस्ताव भी जिला प्रशासन को भेजा गया था लेकिन आज तक इस बारे में कोई निर्णय नहीं लिया गया है। कस्बा के नागरिकों ने पुनः जिला प्रशासन से जल भराव की समस्या से निजात दिलाने की गुहार लगाई है।

10 पंचायतों ने वापस की धनराशि, होगी कार्रवाई

कार्यालय संवाददाता, कन्नौज

अमृत विचार। जिलाधिकारी आशुतोष मोहन अग्निहोत्री ने कलेक्ट्रेट के गांधी सभागार में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) समिति की बैठक की। निर्देश दिए कि जनपद में चिन्हित तीन कमरों वाली 111 ग्राम पंचायत लाइब्रेरियों को डिजिटल लाइब्रेरी के रूप में विकसित किया जाए। साथ ही मिशन कार्यालय को धनराशि वापस भेजने वाली ग्राम पंचायतों के सचिव व प्रधानों पर कार्रवाई की जाए।

बैठक में डीएम ने निर्देश दिए कि सभी सामुदायिक शौचालय नियमित रूप से खुले रहें तथा पंचायत भवन प्रतिदिन सुबह 10 से शाम 5 बजे तक खुलने चाहिए। कहा कि कुल 27 ग्राम पंचायतों को ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए चाइल्ड लिमिट के रूप में 71,92,004 रुपये उपलब्ध कराए गए थे। इसके सापेक्ष 17 ग्राम पंचायतों ने शत-प्रतिशत भुगतान कर दिया है। हालांकि, विकास खण्ड छिबरामऊ की ग्राम पंचायत भीखमपुर सनी एवं रनधीरपुर, हसेरन की ग्राम पंचायत ऊधमपुर, जलालाबाद की ग्राम पंचायत गुधनी एवं कूलापुर, कन्नौज की ग्राम पंचायत तारामऊ गढ़ी, सौरिख की ग्राम पंचायत बहादुरपुर मझगवां, परौर तथा उमर्दा की ग्राम पंचायत सरसई कुल 10 ग्राम पंचायतों ने धनराशि व्यय न कर मिशन कार्यालय को वापस कर दी है। डीएम ने स्पष्ट निर्देश दिए कि इन ग्राम पंचायतों में कार्य समय से पूर्ण न किए जाने तथा कार्य में शिथिलता बरतने पर संबंधित सचिवों एवं प्रधानों के विरुद्ध कार्रवाई की जाए।

समाज को एकसूत्र में जोड़ने का संकल्प

संवाददाता फर्रुखाबाद

लौह पुरुष को श्रद्धांजलि देते सरदार पटेल युवा मंच के पदाधिकारी। अमृत विचार

अमृत विचार। अखण्ड भारत निर्माता, भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की जयंती पर सरदार पटेल युवा मंच द्वारा माल्यार्पण कार्यक्रम पटेल पार्क स्थित सरदार पटेल की प्रतिमा पर तथा जहानगंज डीपीएस इंटर कालेज मुसाखिरिया स्थित पटेल जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम किया गया।

माल्यार्पण कार्यक्रम में सैकड़ों युवाओं ने उत्साह से भाग लिया और समाज को एकसूत्र में जोड़ने की शपथ लेते हुए सरदार पटेल के आदर्शों पर अमल करने का प्रण लिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से अध्यक्ष गौरव कटियार, मयंक कटियार प्रवेश कटियार, शालू कटियार, पंकज कनौजिया, शिवम् पटेल, निखिल,सपनेश पटेल,सनी कटियार, मनीष कटियार, अमित, तरुण, ऋत्विक, उत्कर्ष शशिओम, आकाश सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

डीएम ने जिला अस्पताल में मरीजों को बांटे फल

फर्रुखाबाद । शुक्रवार को 'लौह पुरुष' सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती और राष्ट्रीय अखंडता दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी आशुतोष कुमार द्विवेदी ने डॉ. राममनोहर लोहिया जिला अस्पताल का दौरा किया। उन्होंने अस्पताल के विभिन्न वार्डों में भर्ती मरीजों को फल वितरित किए और उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की।यह कार्यक्रम फर्रुखाबाद विकास खंड बढ़पुर क्षेत्र के मोहल्ला आवास विकास स्थित जिला अस्पताल में आयोजित किया गया था। फल पाकर मरीजों और उनके परिजनों ने खुशी व्यक्त की। फल वितरण के बाद, जिलाधिकारी ने लोहिया अस्पताल की साफ-सफाई व्यवस्थाओं का भी निरीक्षण किया। इस अवसर पर लोहिया जिला अस्पताल के सीएमएस डॉ. जगमोहन शर्मा, डॉ. अभिषेक चतुर्वेदी, विकास अधिकारी और अस्पताल के अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

जयंती पर सपा ने सरदार पटेल को किया याद

फर्रुखाबाद । समाजवादी पार्टी आवास विकास स्थित समाजवादी पार्टी कार्यालय पर भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के प्रभारी वीके गंगवार ने सभी लोगों का अभिवादन करते हुए सरदार पटेल के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस दौरान पूर्व विधायक उर्मिला राजपूत ने कहा कि सरदार पटेल वास्तव में यूं ही "लौह पुरुष" नहीं कहलाए उन्होंने अपने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और कुशल नेतृत्व से देश की 562 रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर भारत की एकता को साकार किया। इस अवसर पर कार्यक्रम प्रभारी एवं जिला सचिव वीके गंगवार, शिवम गंगवार, देवांश गंगवार, आयुष यादव, शिव शंकर शर्मा आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे। सभी लोगों ने सरदार पटेल के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला।

डीसीएम ने बाइक को मारी टक्कर, दो की मौत

संवाददाता फर्रुखाबाद

अमृत विचार। राजेपुर थाना क्षेत्र में गुरुवार देर शाम करीब 8 बजे एक डीसीएम की टक्कर से बाइक सवार दो लोगों की मौत हो गई। मृतकों में एक मवेशी व्यापारी और उसका साथी शामिल है। एक व्यक्ति की लोहिया अस्पताल में मौत हुई, जबकि दूसरे ने कानपुर ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया।

यह दुर्घटना इटावा बरेली हाईवे पर डबरी के निकट हुई। शाहजहांपुर की तरफ से आ रही एक डाक पार्सल लिखी डीसीएम ने बाइक सवारों को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए बाद में दोनों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान राजेपुर के ग्राम उजरामऊ निवासी 55 वर्षीय ओमपाल (पुत्र हरीसिंह) और 35 वर्षीय राजन (पुत्र राधेश्याम तोमर) के रूप में हुई है। ओमपाल मवेशी व्यापारी थे और वे अपने साथी राजन के साथ पशु देखने जा रहे थे। दुर्घटना के बाद दोनों को पहले सीएचसी राजेपुर ले जाया गया। सीएचसी राजेपुर से हालत गंभीर होने पर उन्हें लोहिया अस्पताल रेफर किया गया।

लोहिया अस्पताल में ओमपाल को मृत घोषित कर दिया गया। गंभीर रूप से घायल राजन को कानपुर के हैलेट अस्पताल रेफर किया गया, लेकिन परिजनों द्वारा कानपुर ले जाते समय रास्ते में ही उनकी भी मौत हो गई। मृतक ओमपाल तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। उनकी पत्नी का निधन लगभग सात साल पहले हो गया था। उनके दो पुत्र हैं। प्रभारी निरीक्षक सुदेश कुमार ने बताया कि दोनों बाइक सवारों का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

लेखपाल व राजस्व लिपिक का विदाई समारोह आयोजित

फर्रुखाबाद । शुक्रवार को तहसील सदर में सेवानिवृत्ति पर लेखपाल प्रमोद अवस्थी व राजस्व लिपिक महेशचन्द्र श्रीवास्तव को भावभीनी विदाई दी गयी।

इस मौके पर उपजिलाधिकारी सदर रजनीकांत पांडेय व तहसीलदार सनी कनौजिया उपस्थित रहे। पूर्व राजस्व निरीक्षक सैदमीर खान, बलवीर सिंह, सत्येन्द्र यादव, ने संस्मरण साझा किए। संचालन डॉ. अजय कुमार सिंह ने किया। एसडीएम ने कहा दोनों साथियों को अब नई पारी में कुछ नया करने का अवसर मिलेगा। इस दौरान लेखपाल संघ के जिलाध्यक्ष सचिन मिश्रा, तहसील अध्यक्ष महेश्वर सिंह, मीडिया प्रभारी अतुल प्रताप सिंह, तहसील मंत्री अभय त्रिवेदी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष रघुवंश प्रताप सिंह, अविनाश मिश्रा, वीरेन्द्र कटियार आदि लोग मौजूद रहे।

150वीं जयंती | एकता के लिए फर्रुखाबाद के लोगों ने दौड़ लगाई, पुलिस लाइन से शुरू हुई यह रैली कलेक्ट्रेट तिराहा तक गई और वापस पुलिस लाइन में समाप्त हुई

लौह पुरुष की जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई, हुए आयोजन

संवाददाता फर्रुखाबाद

रन फॉर यूनिटी में शामिल डीएम आशुतोष कुमार द्विवेदी, पुलिस अधीक्षक आरती सिंह।

अमृत विचार। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर जिले भर में कार्यक्रम आयोजित हुए। एकता के लिए फर्रुखाबाद ने दौड़ लगाई

पुलिस लाइन से शुरू हुई यह रैली कलेक्ट्रेट तिराहा तक गई और वापस पुलिस लाइन में समाप्त हुई। इसमें प्रशिक्षु पुलिसकर्मी, महिला पुलिसकर्मी, स्कूली बच्चे और राजपूत रेजीमेंटल सेंटर के जवान शामिल हुए। केंद्रीय कारागार फतेहगढ़ और राजपूत रेजीमेंट सेंटर के बैंड ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री व विधायक अर्चना पांडे, सांसद मुकेश राजपूत, जिलाधिकारी आशुतोष कुमार द्विवेदी, पुलिस अधीक्षक आरती सिंह और राजपूत रेजीमेंटल सेंटर से लेफ्टिनेंट कर्नल एपी सिंह जैसे गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

इसी क्रम में, फर्रुखाबाद के विकास खंड बढ़पुर क्षेत्र स्थित दुर्गा नारायण पीजी कॉलेज से भी जिलास्तरीय यूनिटी मार्च पदयात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा से पूर्व, जिलाधिकारी आशुतोष कुमार द्विवेदी और पुलिस अधीक्षक आरती सिंह ने सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की और एकता व अखंडता की शपथ दिलाई। जिलाधिकारी के नेतृत्व में यह पदयात्रा डीएन कॉलेज से शुरू होकर फतेहगढ़ बड़े चैराहा और कोतवाली होते हुए वापस डीएन कॉलेज पर संपन्न हुई।

नगर के पटेल पार्क में शुक्रवार सुबह रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान अर्चना पांडे ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा की लौह पुरुष सरदार पटेल ने देश की एकता एवं अखंडता के लिए काम किया है। इसी के प्रयास में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी संकल्प लिए हैं कि देश की एकता एवं अखंडता पर आंच नहीं आने देंगे। उन्होंने देश को सोने की चिड़िया बनाने का आवाहन करते हुए एकता के लिए प्रस्थान करने को कहा। भाजपा नेता 8.10 बजे पैदल पटेल पार्क से रवाना हुए जो रेलवे रोड होते हुए चैक बाजार पहुंचे।

राजेपुर में 'रन फॉर यूनिटी' दौड़ का आयोजन किया गया। यह दौड़ लगभग डेढ़ किलोमीटर लंबी थी, जिसमें स्कूली बच्चों (कक्षा 10 से 12), आम जनता और पुलिसकर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दौड़ में राजेपुर थाना अध्यक्ष सुदेश कुमार, थाने के चालक रविंद्र कुमार, कांस्टेबल रविराज सिंह और महात्मा गांधी इंटर कॉलेज के छात्रों ने हिस्सा लिया। दौड़ थाना राजेपुर से शुरू होकर कस्बे में राजेपुर डबरी मार्ग तक लगाई गई।

कमालगंज में भी 'रन फॉर यूनिटी 2025' का आयोजन किया गया। पुलिसकर्मी, एनसीसी कैडेट्स और स्कूली छात्रों ने हिस्सा लिया। यह दौड़ सीओ अमृतपुर संजय वर्मा और इंस्पेक्टर राजीव कुमार के नेतृत्व में संपन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ कस्बा के रेलवे स्टेशन तिराहे से हुआ, जहाँ से प्रतिभागियों ने गौसपुर गुमटी तक दौड़ लगाई। दौड़ में पुलिसकर्मियों और एनसीसी कैडेट्स के साथ आरपी इंटर कॉलेज और फिरोज गांधी जनता इंटर कॉलेज के छात्रों ने भी भाग लिया।

दीवार गिरने से गृहस्वामी के पुत्र की मौत, कोहराम

संवाददाता फर्रुखाबाद

अमृत विचार। शुक्रवार सुबह एक जर्जर मकान की दीवार ढहने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। इस हादसे में उसकी पत्नी और दो मासूम बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

शहर कोतवाली के मोहल्ला सधवाड़ा में शैलेश साद का एक पुराना जर्जर भवन है। शुक्रवार को अचानक दीवार गिरने से शैलेश साद के 28 वर्षीय पुत्र शाहिल, पुत्रवधू हंसा साद, तीन वर्षीय पौत्र अयान और 3 वर्षीय पौत्री अयाना मलबे में दब गए। शाहिल को चौक स्थित एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। शाहिल के दोनों बच्चों को आवास विकास के एक निजी नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया है, जबकि मृतक शाहिल की पत्नी हंसा साद को लोहिया अस्पताल में भर्ती किया गया है।कोतवाल राजीव पाण्डेय भी पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर मौजूद थे। चौकी इंचार्ज अमित गुप्ता ने बताया कि शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराया जाएगा। मनीष वर्मा नायब तहसीलदार ने बताया कि 50-60 साल पुराना मकान है जो जर्जर है। बारिश में कच्चा मकान है पानी वहां पर भरता रहा और हादसा हुआ। कांग्रेस की पूर्व विधायक लुईस खुर्शीद शुक्रवार को परिवार को ढांढस बंधाने पहुंचीं।

न्यूज ब्रीफ

भारत जानो प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

भरथना। भारत विकास परिषद विवेकानंद शाखा भरथना द्वारा भारत को जानो प्रतियोगिता नगर के 15 स्कूलों में आयोजित कराई गई। जिसमें लगभग 1450 जूनियर एवं सीनियर वर्ग के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रमुख रूप से एसएवी इण्टर कालेज,होली प्वाइण्ट एकेडमी,पैरामाउंट थियोसोफिकल स्कूल, एमएसके इण्टरनेशनल स्कूल,एमएसके इण्टर कालेज नेविलगंज भरथना, एनएसबी स्कूल,माँ अम्बे पब्लिक स्कूल,जयोत्री एकेडमी,आर्य श्यामा बालिका इंटर कालेज, गुरुनानक जूनियर हाईस्कूल,बालोदय इण्टर कालेज,जनसहयोगी इंटर कालेज मोढी आदि विद्यालयों में यह परीक्षा संपन्न हुई। प्रत्येक स्कूल में प्रभारी के रूप में 2-2 परिषद के सदस्यों की उपस्थिति रही। परीक्षा बहुत ही अनुशासनात्मक ढंग से सम्पन्न हुई।

आज निकलेगी निशान यात्रा

भरथना। हारे के सहारे बाबा खाटूश्याम के जन्मोत्सव पर आज आगामी एक नवम्बर को प्रातः 10 बजे से निशान यात्रा नगर भ्रमण हेतु निकाली जायेगी, । जो छोला मन्दिर पर संपन होगी। उक्त जानकारी श्री श्याम मित्र मण्डल भरथना के श्याम प्रेमियों ने देते हुए बताया कि आगामी एक नवम्बर दिन शनिवार को हारे के सहारे बाबा खाटूनरेश के जन्मोत्सव के अवसर पर संगीतमयी ध्वनियों के बीच निशान यात्रा कस्बा के मोहल्ला राजागंज स्थित गोपाल वाटिका से प्रातः 10 बजे नगर भ्रमण हेतु निकाली जायेगी, जो नगर के प्रमुख मार्गों मोतीगंज,तिलक रोड, बजाजा लाइन चौराहा, आजाद रोड,मन्दिर दानसहाय,गिरधारीपुरा, सती मन्दिर होते हुए विधूना रोड स्थित शक्तिपीठ श्री बालरूप हनुमान महाराज हनुमान गढी छोला मन्दिर प्रांगण में स्थापित खाटूश्याम दरबार पर सम्पन्न होगी।

सड़क हादसे में महिला गंभीर, युवक घायल

जसवंतनगर। सैफई रोड पर शुक्रवार को दो अलग-अलग सड़क हादसों में एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई, जबकि एक युवक को मामूली चोटें आईं। जानकारी के अनुसार मैनपुरी जिले की रहने वाली 55 वर्षीय कपूरी देवी पत्नी मेहरवान सिंह अपने पुत्र ऋषि के साथ जसवंतनगर के एक डॉक्टर से दवा लेकर बाइक से अपने गांव भरतपुर जा रही थीं। इसी दौरान सैफई रोड स्थित एक कोल्ड स्टोरेज के सामने अचानक बाइक फिसल जाने से दोनों सड़क पर गिर पड़े। हादसे में कपूरी देवी गंभीर रूप से घायल हो गईं। उन्हें 108 एम्बुलेंस की मदद से सीएचसी जसवंतनगर लाया गया, जहाँ प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने सैफई मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया। वहीं दूसरी घटना में नगला उदय सिंह निवासी 19 वर्षीय प्रांशी चौहान पुत्र दर्शन चौहान सड़क दुर्घटना में घायल हो गया। उसे भी उपचार के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया है।

मजदूर का शव मिला

इटावा। थाना बढ़पुरा क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम धमना गांव के मजदूर का शव घर से करीब पचास मीटर दूर संदिग्ध परिस्थितियों में पड़ा मिला। सूचना पर पहुंची बढ़पुरा थाना पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। ग्राम धमना निवासी शेरसिंह 50 पुत्र कैलाश सिंह रोजाना की तरह मजदूरी करने गए थे लेकिन देर शाम तक घर नहीं लौटे। परिजनों ने समझा कि रात में वही कही पर रुक गए हैं और ऐसा पहले भी कई बार हो चुका है लेकिन शुक्रवार सुबह गांव के लोगों ने शेरसिंह का शव घर से करीब पचास मीटर दूर पड़ा देखा तो पूरे गांव में हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही बढपुरा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया गया। थाना प्रभारी बढपुरा के .के मिश्रा ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का पता चल सकेगा।

जीजीआईसी की छात्राएं गईं भ्रमण पर

इटावा। पीएमश्री राजकीय बालिका इण्टर कालेज इटावा में शुक्रवार को समग्र शिक्षा/पीएमश्री विद्यालय अभियान के अन्तर्गत विद्यालय में अध्यनरत कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की छात्राएं बसों से डॉ.भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा कैम्पस में शैक्षिक भ्रमण हेतु शिक्षिकाओं के साथ गईं। प्रधानाचार्य अंजूश्री एवं विद्यालय के समस्त स्टाफ ने प्रातः झण्डी दिखा कर बसों को रवाना किया। इस अवसर पर एसएमडीसी के सदस्य तथा अभिभावकगण मौजूद रहे।

राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई पटेल जयंती

पटेल जयंती पर नुमाइश पंडाल में हुआ कार्यक्रम, भाजपाइयों ने छात्र-छात्राओं के साथ निकाली विशाल रैली

रैली में शामिल भाजपा नेता और अधिकारी। अमृत विचार

रन फॉर यूनिटी में शामिल पुलिस कर्मी। अमृत विचार

सुदिति ग्लोबल एकेडमी में बच्चों को संबोधित करते प्रबंधक सतीश यादव व अन्य।

कार्यालय संवाददाता इटावा

अमृत विचार। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर नुमाइश पंडाल में मुख्य अतिथि सुरेश अवस्थी पूर्व प्रदेश मंत्री भाजपा एवं सदर विधायक सरिता भदौरिया की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि सुरेश अवस्थी ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस राष्ट्रीय एकता अखण्डता दिवस के अवसर पर नुमाइश पंडाल में सरदार वल्लभ भाई पटेल के चित्र पर माल्यार्पण करने के उपरान्त राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की शपथ दिलाई।

नुमाइश पंडाल से विभिन्न विद्यालयों द्वारा निकाली गयी रैली शहीद स्मारक से प्रारंभ होकर पक्का तालाब चौराहा से होते हुए पुरबिया टोला होकर शास्त्री चौराहे पर समाप्त हुई। रैली में स्काउट गाइड, एनसीसी, राजकीय बालिका इण्टर कालेज, सनातन धर्म इण्टर कालेज, शिव नारायन इण्टर कालेज, अर्चना मेमोरियल सरस्वती ज्ञान मन्दिर इण्टर कालेज, इस्लामियां इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। उक्त अवसर पर जिलाधिकारी शुभ्रान्त कुमार शुक्ल, एसएसपी ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी अभिनव रंजन श्रीवास्तव, नगर मजिस्ट्रेट राजेन्द्र बहादुर, एसडीएम न्यायिक राकेश प्रसाद, जिलाध्यक्ष बीजेपी अरुण कुमार गुप्ता, पूर्व सांसद रघुराज शाक्य, प्रेमदास कठेरिया, सावित्री कठेरिया, संजीव राजपूत, गोपाल मोहन शर्मा, महामंत्री शिवाकांत चौधरी, महामंत्री प्रशांत राव चौबे, ब्लॉक प्रमुख गणेश राजपूत, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष विरला शाक्य, विनीत गुप्ता, अंशुल दुबे, जितेंद्र गौड़, रोहित शाक्य, जिला विद्यालय निरीक्षक अतुल सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉ. राजेश कुमार सहित संबंधित अधिकारी एवं विभिन्न विद्यालयों के छात्र छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर जनपद के समस्त थानों की पुलिस ने रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता व अखंडता की शपथ दिलायी गई। एसएसपी के निर्देशन में पुलिस लाइन से रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पुलिस के कर्मचारीगणों द्वारा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया गया। समस्त थानों पर उपस्थित पुलिस कर्मियों ने राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं सुरक्षा के प्रति निष्ठा और समर्पण का संकल्प लिया। थानों पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ प्रभारी निरीक्षकों व थानाध्यक्षों द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित कर्मचारीगणों को संबोधित करते हुए कहा सरदार वल्लभ भाई पटेल के अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और देशप्रेम की भावना से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए।

सुदिति ग्लोबल में सरदार पटेल को किया गया याद

इटावा। सुदिति ग्लोबल एकेडमी में सरदार पटेल की जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में तहसीलदार राज कुमार व प्रबंधक सतीश कुमार ने दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरू आत की। इस मौके पर स्कूल के बच्चों ने सरदार पटेल के जीवन से जुड़ी घटनाओं उनके त्याग देशप्रेम पर आधारित नाट्य प्रस्तुति व कविताएं पढ़ीं। इस मौके पर स्कूल का स्टाफ मौजूद रहा। इसके अलावा जिले के भरथना, बकेवर, महेवा, जसवंत नगर, ताखा तथा सैफई में भी सरदार पटेल की जयंती पर अनेक कार्यक्रम हुए।

दर्जनों लोगों के बीमार होने की सूचना पर पहुंची स्वास्थ्य टीम

महेवा। विकास खंड क्षेत्र महेवा की ग्राम पंचायत वीरपुर सलेमपुर में कई लोगों को बुखार आने की सूचना पर स्वास्थ्य विभाग की ओर से अधीक्षक डॉ गौरव त्रिपाठी के नेतृत्व में दो टीमें गांव में पहुंची जहां उन्होंने बीमार लोगों की मलेरिया ,टाइफाइड ,डेंगू आदि की जांच की। इसमें सर्वाधिक मरीज वायरल बुखार के तथा दर्जन भर के करीब मरीज टाइफाइड के मिले।

ग्राम पंचायत वीर पुर सलेमपुर के मजरा वीरपुर में कुल 64 मरीजों की टाइफाइड ,मलेरिया तथा डेंगू की जांच की गई जिसमें 8 मरीज टाइफाइड पॉजिटिव पाए गए। वहीं सलेमपुर में 38 मरीजों की जांच की गई जिसमें तीन मरीज टाइफाइड पॉजिटिव पाए गए वही डेंगू के आज मरीज कोई गांव में नहीं मिले। वहीं गांव में गई जांच टीम में डॉ जितेंद्र , डॉ महेंद्र ,फर्मासिस्ट गोविंद त्रिपाठी तथा एल टी विजय गुप्ता,अवनीश यादव एल ए आदि शामिल रहे। अधीक्षक डॉ गौरव त्रिपाठी ने लोगों से कहा कि अपने आसपास साफ सफाई रखें। वायरल बुखार फैल रहा है। सुबह शाम गर्म कपड़े पहने ,बीमार होने की दशा में डॉक्टर से सलाह लें।

हर मतदाता का होगा सत्यापन : एसडीएम

संवाददाता जसवंतनगर इटावा

राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक करते एसडीएम। अमृत विचार

अमृत विचार। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा घोषित निर्वाचक नामावलियों का विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण यानी एसआईआर कार्यक्रम के तहत निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी/उप जिलाधिकारी कुमार सत्यम जीत ने तहसील सभागार में राजनीतिक पार्टी के स्थानीय पदाधिकारी व नेताओं के साथ बैठक कर विशेष पुनरीक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में जानकारी दी।

ईआरओ कुमार सत्यम जीत ने बताया कि भारतीय चुनाव आयोग की मंशानुरूप यह विशेष प्रागढ़ पुनरीक्षण कार्य मतदाता सूची को शुद्धता और पारदर्शी बनाए रखने के उद्देश्य से किया जा रहा है। चुनाव आयोग के कार्यक्रम के अनुसार प्रथम चरण में हाल ही में बिहार राज्य में इसे सफलतापूर्वक लागू किया गया। द्वितीय चरण में यह प्रक्रिया उत्तर प्रदेश समेत 12 राज्यों में लागू की गई है। वर्ष 1951 से 2004 तक आठ बार विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण कार्य किया जा चुका है। प्रदेश में अंतिम एसआईआर वर्ष 2003 में लागू की गई थी। एसआईआर का उद्देश्य मतदाता सूची में नाम की शुद्धता,नए नाम जोड़ना,मृत मतदाताओं का नाम विलोपित करना, प्रवासित हुए मतदाताओं का स्थानांतरण सुनिश्चित करना होता है। इस प्रक्रिया के तहत बीएलओ घर-घर जाकर फार्म 6,7,8 के माध्यम से मतदाता सूची में नया नाम जोड़ने हटाने और सूची में सुधार करने का काम करते हैं। वर्तमान में 28 अक्टूबर से 3 नवंबर 2025 से यहाँ लागू एसआईआर कार्यक्रम के तहत विभिन्न दिवसों में विभिन्न निर्धारित कार्यक्रमों के बाद निर्वाचन नामावली का आलेख्य प्रकाशन नौ दिसंबर को किया जाएगा और अंतिम प्रकाशन सात फरवरी 2026 को होगा।

साइकिल सवार छात्रा को बाइक सवार युवक ने मारी टक्कर

बकेवर। भरथना मार्ग पर साइकिल सवार छात्रा को बाइक सवार युवक ने रोड पार करते समय टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार युवक व छात्रा गम्भीर रूप से घायल हो गयी। दोनों घायलों को बकेवर के 50 शैय्या अस्पताल भेजा गया जहां हालत गम्भीर होने पर जिला अस्पताल के लिए रेफर किया गया। शुक्रवार को विद्यालय से साइकिल पर घर जा रही छात्रा को कंचन भट्ठा के समीप एक बाइक सवार ने भरथना की तरफ जाते समय टक्कर मार दी। स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना एम्बुलेंस को दी। दोनों घायलों को बकेवर के 50 शैय्या अस्पताल भेजा गया। जहां डॉक्टरों ने घायलों को प्राथमिक उपचार देने के बाद जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया।

साइबर क्राइम के प्रति किया जागरूक

कार्यालय संवाददाता इटावा

छात्रा को समझाते साइबर एक्सपर्ट डॉ. रक्षित टंडन। अमृत विचार

अमृत विचार। सेंटमेरी इंटर कालेज द्वारा इटावा क्लब में विद्यालय के छात्र छात्राओं एवं अभिभावकों के लिए एक दिवसीय स्टे साइबर सेफ विषय पर आधारित ओरिएंटेशन सेशन का सत्र दो भागों में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ प्रारम्भ हुआ। सेंटमेरी साइबर क्लब से जुड़ी छात्रा तान्या ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंटरनेशनल साइबर एक्सपर्ट डॉ. रक्षित टंडन का स्वागत विद्यालय के मैनेजर फादर विंसन, प्रिंसिपल फादर शीजू जॉर्ज एवं वाइस प्रिंसिपल फादर बिबिन ने पुष्प गुच्छ देकर किया।

मुख्य वक्ता अंतरराष्ट्रीय साइबर सेफ्टी एंड सिक्योरिटी एक्सपर्ट सलाहकार भारत सरकार डॉ.रक्षित टंडन ने हजारों बच्चों को बैड डिजिटल डाइट सहित विभिन्न सोशल मीडिया की खामियों को बारीकी से समझाया और साथ ही बच्चों को सोशल मीडिया साइट्स फेसबुक,व्हाट्सअप, इंस्टाग्राम, स्नैप चैट, टेलीग्राम एप के साथ साथ ऑनलाइन एडिक्शन गेम्स, फ्री फायर, कॉल ऑन ड्यूटी पबजी व एविएटर आदि की कमियों के बारे में विस्तार से बताया।

• स्टे साइबर सेफ ओरिएंटेशन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सेमिनार के द्वितीय महत्वपूर्ण सत्र में साइबर क्राइम एक्सपर्ट डॉ. रक्षित टंडन ने सभी बच्चों के अभिभावकों एवं विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाओं को फर्जी सोशल मीडिया अकाउंट्स ऑनलाइन ठगी, ओटीपी फ्रॉड, साइबर बुलिंग और अन्य हाईटेक साइबर सिक्योरिटी तकनीकी के बारे में विशेष प्रशिक्षण देकर सजग किया।

युवक ने फंदा लगाकर दी जान, परिवार में मचा कोहराम

संवाददाता ताखा इटावा

• मेहनत-मजदूरी करके परिवार का पोषण करता था युवक

अमृत विचार। ऊसराहार थाना क्षेत्र के कुदरैल गांव में गुरुवार की रात एक युवक ने घरेलू कलह से परेशान होकर पेड़ से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

उक्त गांव निवासी रियासत खां (35) मेहनत-मजदूरी कर अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। परिवार में पत्नी हुसैना, चार वर्ष की बेटी इनाया और तीन वर्ष का बेटा ईदुल है, जबकि पत्नी गर्भवती बताई गई है। परिजनों के अनुसार गुरुवार की रात रियासत गांव में हो रही रामलीला देखकर घर लौटा और परिवार के साथ भोजन किया। इसके बाद वह तंबाकू लेने का बहाना बनाकर घर से बाहर चला गया और रातभर वह वापस नहीं लौटा, शुक्रवार सुबह गांव के लोगों ने घर से करीब 200 मीटर दूर खेतों में खड़े आम के पेड़ से उसका शव अंगोछे के फंदे से लटका देखा। सूचना मिलते ही ग्रामीणों की भीड़ मौके पर जमा हो गई। इसके बाद परिजनों और ग्रामीणों ने पुलिस को जानकारी दी। मौके पर पहुंची ऊसराहार थाना पुलिस ने फॉरेंसिक टीम को बुलाकर साक्ष्य एकत्र किए। शव को पेड़ से नीचे उतरवाकर पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। रियासत की मौत से गर्भवती पत्नी और छोटे बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल है। थानाध्यक्ष बलराजसिंह भाटी का कहना है कि गृहक्लेश के चलते आत्महत्या की है।

विनोद बने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

कार्यालय संवाददाता इटावा

विनोद यादव का स्वागत करते टीचर। अमृत विचार

• टीचर फेडरेशन ऑफ़ इंडिया में बने पदाधिकारी

अमृत विचार। टीचर फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विनोद कुमार यादव का शुक्रवार को जिला सहकारी बैंक के परिसर में उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

विगत 25 अक्टूबर को नई दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में एफटीआई का औपचारिक गठन किया गया था जिसमें उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ इटावा के जिलाध्यक्ष एवं प्रांतीय मंत्री विनोद कुमार यादव को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी गई। स्वागत समारोह एवं संयुक्त जिला कार्यसमिति की बैठक को संबोधित करते हुए विनोद कुमार यादव ने कहा की आरटीई लागू होने से पहले योग्यता मानदंड पूरा कर नियुक्त हुए अध्यापकों पर टेट की अनिवार्यता का थोपा जाना पूरी तरह से अव्यवहारिक एवं अन्यायपूर्ण है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार इस गंभीर विषय पर अपेक्षित संवेदनशीलता नहीं दिखा रही है।

उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा एवम् राष्ट्रीय महासचिव ठाकुर राम मूर्ति के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर टीचर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के बैनर तले देशव्यापी आंदोलन में 21 नवंबर को नई दिल्ली के रामलीला मैदान में महारैली का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें देशभर के शिक्षक अपनी मांगों के समर्थन में हुंकार भरेंगे।

संयुक्त जिला कार्यसमिति की बैठक में समस्त ब्लॉकों के अध्यक्ष एवं मंत्री तथा जिले के पदाधिकारियों के साथ 21 नवंबर महारैली की तैयारियों की समीक्षा कर जनपद इटावा से 1000 शिक्षकों के दिल्ली पहुंचने का लक्ष्य रखा गया है।

तालाब व बंजर जमीन पर कब्जे का आरोप, मुक्त कराने की मांग

कार्यालय संवाददाता इटावा

अमृत विचार। शहर महेरा चुंगी के पास स्थित एक तालाब और उसके पास की बंजर जमीन पर लोगों ने अवैध कब्जा कर रखा है। कई बार शिकायते की गईं लेकिन कब्जे को नहीं हटाया गया। तालाब की जमीन को कब्जा मुक्त कराने के फिर से डीएम से शिकायत की गई। डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने शुक्रवार को इस संबंध में डीएम से मुलाकात कर उन्हें पूरे मामले से अवगत कराया और कब्ज़ा हटाए जाने की मांग की है।

इस मामले को लेकर रामनाथ सिंह, डीबीए अध्यक्ष अनिल कुमार गौर, योगेंद्र अवस्थी, बृजेंद्र कुमार चतुर्वेदी एडवोकेट, डीबीए के पूर्व अध्यक्ष चंद्रशेखर सिंह गौर, संतोष कुमार सिंह चौहान एडवोकेट सहित कई लोगों ने शिकायती पत्र दिया है। इसमें कहा गया है कि महेरा चुंगी स्थित एक पुराने तालाब और उसके आसपास की बंजर जमीन पर कब्जा कर लिया गया है। वहां मौजूद पक्के तालाब को मिट्टी से भर दिया गया। उक्त तालाब पर भुजिरयों का मेला लगता था तथा अन्य धार्मिक आयोजन भी होते थे। इस मामले की शिकायत कई बार की गई। उच्चाधिकारियों से भी शिकायत की गई। इसके बाद भी कोई कार्यवाही नहीं की गई। शिकायती पत्र में यह भी कहा गया है कि जांच के नाम पर भी मामले को लटकाया जाता रहा और गोलमोल जवाब दिए जाते रहे। शिकायती पत्र में कहा गया है कि तालाब सार्वजनिक होता है इसका रकबा कम नहीं किया जा सकता लेकिन इस तालाब का रकबा भी कम कर दिया गया है।

जागरूकता कार्यक्रम | जिले के व्यापारी, अधिवक्ता, छात्र-छात्राएं, अध्यापक व सामाजिक संगठन रहे मौजूद

नये आपराधिक कानूनों के बारे में दी जानकारी

कार्यालय संवाददाता इटावा

नये आपराधिक कानून के संबंध में जानकारी देते पुलिस अधिकारी। अमृत विचार

अमृत विचार। नये आपराधिक कानून के सम्बन्ध में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन पुलिस लाइन सभागार में एसपी सिटी अभय नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया गया। इस कार्यक्रम में जिले के प्रमुख व्यापारी, अधिवक्ता, विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, अध्यापक, सामाजिक व महिला संगठन के पदाधिकारी, रिक्रूट आरक्षी, अभियोजन व पुलिस अधिकारियों ने भाग लिया।

एसपी सिटी अभय नाथ त्रिपाठी, सीओ सिटी अभय नारायण राय, सीओ जसवंतनगर आयुशी सिंह ने नये कानूनों के बारे में सभी लोगों को विस्तृत रूप से जानकारी दी तथा व्यापारियों की शंकाओं का समाधान भी कराया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से पानकुंवर स्कूल के प्रिंसिपल कैलाश यादव, पुलिस मार्डन स्कूल के प्रधानाध्यापक अभिषेक सक्सेना, व्यापार मंडल के प्रदेश उपाध्यक्ष सर्वेश सिंह चौहान, जिला अध्यक्ष आलोक दीक्षित, कोषाध्यक्ष कामिल कुरैशी, उपाध्यक्ष अशोक जाटव, शहर अध्यक्ष दिनेश कुमार यादव, उद्योग मंच के जिला अध्यक्ष भारतेन्द्र नाथ भारद्वाज, महिला जिला महामंत्री अंजू यादव, शहर कोषाध्यक्ष मनीष यादव, मंजू लता द्विवेदी, महिला जिला उपाध्यक्ष शकीला बेगम, चांदनी सिद्दीकी आदि मौजूद रहे।

प्राथमिकता के साथ करें पात्रों का चयन : बीडीओ

संवाददाता महेवा इटावा

• विधवा महिला, दिव्यांगजन और अन्य का चयन करें

अमृत विचार। मुख्यमंत्री आवास योजना के पात्र लाभार्थियों के आवेदन यथा शीघ्र ब्लॉक मुख्यालय को प्रेषित किए जाएं यह निर्देश खंड विकास अधिकारी महेवा बृज बिहारी त्रिपाठी ने ग्राम स्तरीय कर्मचारियों की बैठक में सचिवों को निर्देश देते हुए कही।

ब्लॉक सभागार महेवा में आयोजित इस बैठक में उन्होंने सचिवों से कहा कि उपरोक्त योजना में विधवा महिला, दिव्यांगजन ,दैवीय आपदा से पीड़ित तथा नट एवं बंजारा समाज के पात्र लाभार्थियों का चयन सुनिश्चित करें। आई जी आर एस की शिकायतों का त्वरित निस्तारण के साथ एक परिवार एक पहचान के कार्यक्रम पर जोर दिया। सहायक विकास अधिकारी पंचायत इंद्र पाल सिंह भदौरिया ने सचिवों को ताकीद देते हुए कहा कि वह अपनी अपनी ग्राम पंचायतों में फिल्टर चैंबर निर्माण के साथ आरआरसी सेंटर का संचालन किया जाना सुनिश्चित करें तथा गौशालाओं में शीत ऋतु के बचाव के साथ साथ पंचायत सहायक ,केयर टेकर ,गौशालाओं के केयर टेकर का मानदेय हर हाल में भुगतान करना सुनिश्चित करें।

सहायक विकास अधिकारी समाज कल्याण ने सामूहिक विवाह ,शादी अनुदान तथा कन्या सुमंगला के आवेदन के पत्रों का सत्यापन कर कार्यालय में देने का निर्देश दिया। बैठक में एडीओ प्रवीण शाक्य ,सचिव आदित्य चौहान ,विकास यादव ,अनुष्का दुबे , बब्बू राजा ,अजय कुमार ,रवि यादव , गौरव यादव ,संदीप आदि मौजूद रहे।

देशी शराब की दुकान में लगी आग

भरथना। क्षेत्र के सराय चौरी गांव में शुक्रवार की सुबह देशी शराब और बीयर की दुकान में आग लगने से हड़कंप मच गया। बताया जा रहा है कि आग शॉर्ट सर्किट से लगी, जिसमें दुकान का अधिकांश सामान जलकर राख हो गया।

स्थानीय लोगों के अनुसार सराय चौरी गांव में स्थित यह दुकान भरथना निवासी अजय कुमार के नाम से संचालित है। सुबह करीब सात बजे गद्दीदार देवेश कुमार ने जैसे ही दुकान का शटर खोला, अंदर से धुआं उठता दिखाई दिया। अंदर रखे टीवी, डीवीआर, फ्रीजर और लकड़ी के तख्त आदि पूरी तरह जल चुके थे। सूचना मिलने पर ठेका मालिक अजय कुमार मौके पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि आग में गोलक में रखी नकदी के साथ कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जलकर नष्ट हो गए। प्रारंभिक अनुमान के अनुसार घटना में करीब पचास हजार रुपये का नुकसान हुआ है।

अमृत विचार

कानपुर, शनिवार 1 नवंबर 2025

औरैया

न्यूज ब्रीफ

संपूर्ण समाधान दिवस आज

औरैया। शासन के निर्देशानुसार माह के प्रथम व तृतीय शनिवार को संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में एक नवम्बर को जनपद की सदर तहसील औरैया में जिलाधिकारी डॉ. इन्द्रमणि त्रिपाठी की अध्यक्षता में संपूर्ण समाधान दिवस आयोजित होगा। जनपद के समस्त जिला स्तरीय अधिकारी सदर तहसील औरैया में आयोजित होने वाले संपूर्ण समाधान दिवस में समय से पहुंचना सुनिश्चित करें।

पुलिस की गिरफ्त में आरोपी।

किशोरी बरामद कर आरोपी गिरफ्तार

अयाना। थानाध्यक्ष अजय कुमार ने बताया कि शुक्रवार को अंतौल तिराहा के पास से थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी किशोरी को महिला सिपाही नीरज ने बरामद किया है। जबकि एसआई गंगा सहाय ने बताया कि दोपहर में किशोरी को बहला कर ले जाने के आरोपी कानपुर देहात के मंगलपुर थाना क्षेत्र के ककलालपुर निवासी अमन उर्फ राजकुमार को गिरफ्तार किया है। किशोरी को डॉक्टरी परीक्षण के लिए भेजा गया है। जबकि आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया। वहां से उसको जेल भेजा गया है।

पटेल जयंती पर रन फॉर यूनिटी का हुआ आयोजन

औरैया। शुक्रवार को प्राथमिक विद्यालय गोपालपुर में राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती उत्साहपूर्वक मनाई गई। जिलाधिकारी के आदेश के क्रम में विद्यालय प्रांगण में रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने एकता और अखंडता का संदेश देते हुए भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानाध्यापक आशीष त्रिपाठी द्वारा राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाकर की गई। सहायक अध्यापक राजकुमार ने सरदार पटेल के भारतीय संविधान निर्माण में योगदान के बारे में विस्तार से बताया। सहायक अध्यापिका राखी सोनी ने उनके जीवन चरित्र से जुड़ी प्रेरक घटनाओं को बच्चों के साथ साझा किया। कार्यक्रम के दौरान पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया।

एकता दिवस के रूप में मनाई पटेल जयंती

यूनिटी मार्च को अध्यक्ष महिला कल्याण निगम ने दिखाई हरी झंडी, जनप्रतिनिधि और अधिकारी दौड़े

कार्यालय संवाददाता, औरैया

रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करतीं महिला कल्याण निगम की अध्यक्ष कमलावती।

यूनिटी मार्च यात्रा के दौरान शामिल जन प्रतिनिधि व अधिकारी। अमृत विचार

अमृत विचार। जनपद में स्वतंत्र भारत के शिल्पकार, लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी की 150वीं जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्र निर्माण, सामाजिक समरसता और युवा चेतना के प्रतीक उत्सव के रूप में किया गया। जिसके माध्यम से एक भारत श्रेष्ठ भारत का संदेश जन - जन तक पहुंचा।

महिला कल्याण निगम की अध्यक्ष कमलावती ने कहा कि राष्ट्रीय एकता दिवस उस विचारधारा का पुनर्स्मरण है। जिसने भारत को सैकड़ों रियासतों से जोड़कर एक अखंड राष्ट्र का रूप दिया। सरदार पटेल का जीवन इस सत्य का प्रतीक था कि जब विचार, उद्देश्य और कार्य एक हो जाते हैं तो असंभव भी संभव हो जाता है। इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता दिवस हमें याद दिलाता है कि संविधान के आदर्शों को जीवंत रखने के लिए नागरिक चेतना आवश्यक है। सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती उस विचार का उत्सव है जो भारत की विविधता को उसकी शक्ति बनाता है। आज जब देश "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, तब राष्ट्रीय एकता दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास की जड़ें एकता में ही निहित हैं। सदर विधायक गुड़िया कठेरिया ने कहा कि एकता के संकल्प के साथ देश को सबसे सुंदर स्वरूप देने का श्रेय लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को जाता है।

- **जन-जन तक पहुंचा एक भारत श्रेष्ठ भारत का विचार, एकता से ही बनेगा विकसित भारत**

प्रेरक प्रसंग बताते हुए कहा कि लौह पुरुष ने अपने दुख- सुख के ऊपर देश और हम सभी की परवाह की इसलिए उन्हें लौह पुरुष की पहचान मिली। प्रधानमंत्री जी का आभार व्यक्त किया कि उन्होंने देश के सबसे विशाल स्मारक लौह पुरुष को समर्पित किया है जो प्रतीक है इस बात का यह देश उनका सम्मान करता है जो देश की सेवा करते हैं। जिला पंचायत अध्यक्ष कमल दोहरे, भाजपा जिलाध्यक्ष सर्वेश कठेरिया, भाजपा जिला प्रभारी आनन्द्र सिंह, पूर्व राज्यमत्री लाखन सिह राजपूत ने कहा कि सरदार पटेल के जीवन दर्शन, नेतृत्व और दूरदर्शिता से नई पीढ़ी को प्रेरणा मिली। राष्ट्रीय एकता दिवस का मूल उद्देश्य एकता की भावना को व्यवहार में उतारना है। उन्होने कहा कि लौह पुरुष का जीवन संघर्ष व सादगी की मिशाल है। हम सभी को उनके जीवन मूल्यों को आत्मसात करते हुए अपनाना चाहिये। इसके बाद जनपद स्तरीय यूनिटी मार्च यात्रा की शुरुआत माधव गेस्ट हाउस से अध्यक्ष उत्तर प्रदेश महिला कल्याण निगम की कमलावती ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। जिसमें सदर विधायक, भाजपा जिलाध्यक्ष, भाजपा जिला प्रभारी, जिला पंचायज अध्यक्ष, सदस्य अनुसूचित जाति जनजाति आयोग, जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस बल, भारत स्काउट-गाइड, विभिन्न विद्यालयों के छात्र छात्राओं सहित लगभग 500 प्रतिभागी शामिल हुए। जनपद स्तरीय यूनिटी मार्च यात्रा माधव गेस्ट हाउस से प्रारम्भ होकर जालौन चौराहा,जेसीज चौराहा, सुभाष चौराहा तथा खानपुर चौराहा होते हुए प्रारम्भ स्थल पर ही समाप्त हुई। वहीं जिले भर में राष्ट्रीय एकता दिवस पर शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमें सरकारी विभागों, विद्यालयों, कॉलेजों, पंचायत भवनों और सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय एकता का संकल्प दोहराया गया।

रन फॉर यूनिटी में लोगों ने बढ़-चढ़ कर लिया हिस्सा

संवाददाता, अछल्दा

अमृत विचार। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर शुक्रवार को रन फॉर यूनिटी (एकता दौड़) रैली का आयोजन किया गया। यह रैली थाना परिसर अछल्दा से शुरू हुई, जिसमें पुलिसकर्मियों, स्कूली छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

रैली का नेतृत्व थाना प्रभारी निरीक्षक पंकज मिश्रा ने किया। यह थाना परिसर से प्रारंभ होकर नहर बाजार, स्टेशन बाजार, मुख्य बाजार होते हुए पुनः थाना परिसर पहुंची। प्रतिभागियों ने हाथों में तख्तियां लेकर ष्एकता में शक्ति हैष् और ष्देश की आन, वल्लभभाई पटेल महान जैसे नारे लगाए। इस दौरान सभी में राष्ट्रीय एकता और सद्भाव का संदेश देने का उत्साह दिखा। थाना प्रभारी पंकज मिश्रा ने इस अवसर पर कहा कि सरदार पटेल का देश की एकता और अखंडता के लिए दिया गया योगदान सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। उन्होंने बताया कि श्रन फॉर यूनिटीश् का मुख्य उद्देश्य समाज में एकता, सद्भाव और राष्ट्रीय भावना को मजबूत करना है। रैली के समापन पर सभी प्रतिभागियों को एकता की शपथ दिलाई गई। इस दौरान राष्ट्र की एकजुटता बनाए रखने का संकल्प लिया गया, जिससे कार्यक्रम का उद्देश्य और भी सार्थक हो गया। कार्यक्रम के दौरान ग्राम खुर्दा नेविलगंज अछल्दा की निकेता को थाना प्रभारी पंकज मिश्रा द्वारा अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया। निकेता ने हाल ही में प्रयागराज में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में नेपाल की टीम को हराकर गोल्ड मेडल जीता था, जिससे उन्होंने देश और क्षेत्र का नाम रोशन किया है।

एकता दौड़ में शामिल लोग। अमृत विचार

नये आपराधिक कानूनों के बारे में दी जानकारी

संवाददाता औरैया

- **पुलिस ने विद्यालयों व बाजारों में लोगों को दी जानकारी, साइबर ठगी से बचाव के उपाय भी बताए**

अमृत विचार। जनपद के सभी थाना पुलिस टीमों द्वारा तीन दिवसीय एनसीएल जागरूकता अभियान 2 के अंतर्गत व्यापक जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। अभियान के तहत पुलिस टीमों ने अपने-अपने थाना क्षेत्रों में स्थित स्कूलों, कॉलेजों, कोचिंग संस्थानों, मुख्य बाजारों, भीड़-भाड़ वाले स्थानों, पार्कों तथा ग्राम पंचायत भवनों में जाकर विद्यार्थियों एवं आम जनमानस को एक जुलाई 2024 से लागू तीन नये आपराधिक कानूनों के बारे में जानकारी दी।

जागरूकता कार्यक्रमों के दौरान पुलिस अधिकारियों ने लोगों को जीरो एफआईआर, ई-एफआईआर, समयबद्ध न्याय, महिला एवं बाल संरक्षण से संबंधित प्रावधान, नये अपराधों की परिभाषा, तकनीक व फॉरेंसिक के उपयोग जैसे महत्वपूर्ण बदलावों से अवगत कराया। साथ ही साइबर अपराध व ऑनलाइन ठगी से बचाव के उपायों तथा विभिन्न हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी दी गई।

पुलिस टीमों ने उपस्थित विद्यार्थियों व नागरिकों से अपील की कि वे इन नये कानूनों की जानकारी प्राप्त करें, सतर्क रहें और किसी भी आपराधिक गतिविधि या साइबर ठगी की स्थिति में तुरंत पुलिस या संबंधित हेल्पलाइन नंबरों पर सूचना दें, जिससे समयबद्ध और प्रभावी कार्रवाई की जा सके।

कार्यक्रम के दौरान मौजूद अतिथि व छात्र-छात्राएं। अमृत विचार

पटेल जयंती पर एकता की शपथ दिलाई

संवाददाता बिधूना

अमृत विचार। शुक्रवार को भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री और भारत के प्रथम गृह मंत्री लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयन्ती पर राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया गया।

विद्यालय के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर अनुपम प्रताप सिंह भदौरिया, दीप्ति कमल राठौर, प्रधानाचार्य प्रशान्त दीक्षित, पुलिस क्षेत्राधिकारी तथा कोतवाली निरीक्षक मुकेश चौहान द्वारा संयुक्त रूप से मां सरस्वती व सरदार वल्लभभाई पटेल के छायाचित्र पर दीप प्रज्ज्वलित व माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने राष्ट्रीय एकता दिवस के इस अवसर पर प्रकाश डालते हुए समस्त शिक्षक व छात्र-छात्राओं के साथ राष्ट्रीय एकता की शपथ ग्रहण करवाई। शिक्षक व विद्यार्थियों के साथ मानव श्रृंखला की संरचना, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता व एकता दौड़ का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य ने सभी विद्यार्थियों को सरदार वल्लभ भाई पटेल के बताए गए कदमों पर चलने की प्रेरणा दी।

भारतीय न्याय संहिता की दी जानकारी

संवाददाता, बिधूना

नए कानूनों के बारे में जानकारी देती पुलिस। अमृत विचार

अमृत विचार। कस्बे के श्री गजेन्द्र सिंह पब्लिक इंटर कॉलेज में पुलिस विभाग ने छात्रों और स्टाफ के लिए 'भारतीय न्याय संहिता' पर एक विस्तृत जानकारी सत्र आयोजित किया। इस दौरान इंडियन पीनल कोड से भारतीय न्याय संहिता में हुए प्रमुख परिवर्तनों, उनके सकारात्मक-नकारात्मक प्रभावों और नए कानूनों के लाभों पर विस्तार से चर्चा की गई।

कोतवाली प्रभारी निरीक्षक मुकेश बाबू चौहान और महिला थाना प्रभारी पूजा सिंह राठौर ने छात्रों को भारतीय न्याय संहिता की प्रमुख धाराओं के बारे में विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि यह नया कानून न्याय प्रक्रिया को अधिक समयबद्ध, पीड़ित-केंद्रित और तकनीक-आधारित बनाता है। कानून में हुए बदलावों की जानकारी छात्रों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने के लिए पुलिस विभाग ने निबंध, क्विज प्रतियोगिता और वाद-विवाद का भी आयोजन किया। इन प्रतियोगिताओं के मुख्य विषयों में जीरो एफआईआर, ई-एफआईआर, समयबद्ध न्याय, महिला एवं बाल संरक्षण, नए अपराध, प्रौद्योगिकी और फॉरेंसिक का उपयोग, तथा पीड़ित-केंद्रित प्रावधान शामिल थे।

- **नए कानूनों के लाभ और बदलावों पर हुई विस्तृत चर्चा**

इस जागरूकता कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य दिनेश प्रताप सिंह यादव, वरिष्ठ प्रवक्ता सूर्यवंश सिंह सेंगर, एनसीसी अधिकारी गौरव गुप्ता, पुलिसकर्मी और विद्यालय स्टाफ बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

आढ़त पर रखा धान बारिश से बर्बाद

संवाददाता, फफूंद

बारिश की वजह से खराब हुआ धान।

अमृत विचार। क्षेत्र के गांव भैंसोल के दो किसानों की मेहनत की कमाई बारिश में बह गई। निजी आढ़त पर बिक्री के इंतज़ार में रखा उनका करीब 80 क्विंटल धान लगातार हुई बारिश से भीगकर सड़ने और जमने लगा है। शुक्रवार को जब किसान धान लेकर आढ़त पहुंचे तो उनकी आंखों से आंसू छलक उठे।

जानकारी के अनुसार भैसोल गांव निवासी किसान सिंटू दीक्षित और गोपाल जी ने अपनी पूरी लागत लगाकर धान की फसल तैयार की थी। वह रविवार से आढ़त पर धान बेचने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन खरीदी में सुस्ती के कारण उनका धान अछल्दा की एक निजी आढ़त पर पड़ा रहा। इसी बीच लगातार हुई बारिश उनके लिए आफत बन गई। भीगे धान में काले दाग पड़ गए और जमने के साथ ही दानों के सड़ने की आशंका बढ़ गई है, जिससे उसकी खरीद लगभग नामुमकिन हो गई। शुक्रवार को तमाम प्रयास के बाबजूद भी धान की बिकवाली न हो पाने से किसानो के आंसू निकल पड़े और भरे मन से धान को वह घर वापस ले गए। किसानों ने बताया कि धान बेचकर उधार चुकाने और रबी की फसल की तैयारी करनी थी, लेकिन अब सब संकट में पड़ गया है। जितनी मेहनत और लागत लगी, वह भी निकलती नहीं दिख रही। अव्यवस्था और देरी के चलते कई किसान मजबूर होकर अपनी फसल खुले में रखने को विवश हैं। खराब मौसम से अन्य किसानों की उपज भी नुकसान की चपेट में आ सकती है। किसानों ने जिला प्रशासन से खराब धान का उचित मुआवजा दिलाने और खरीदी व्यवस्था को सुचारु कराने की मांग की है।

सेवानिवृत्त पुलिस कर्मी जय नारायण हुए सम्मानित

औरैया। शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक अभिषेक भारती ने पुलिस लाइन औरैया में सेवानिवृत्त कर्मचारी जय नारायण को सम्मानित किया। जय नारायण चतुर्थ श्रेणी पद पर कार्यरत रहे और उन्होंने 29 वर्ष 4 माह 11 दिन तक अपनी सेवाएं दीं। अधिवर्षता के कारण सेवानिवृत्त हो रहे जय नारायण को पुलिस अधीक्षक द्वारा फूल-माला पहनाकर, बैग, उपहार तथा प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान पुलिस अधीक्षक ने सेवानिवृत्त कर्मचारी के योगदान की सराहना करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

श्रीमद्भागवत व रामकथा के लिए कलश यात्रा निकाली

संवाददाता, बिधूना, औरैया

कलश यात्रा के दौरान शामिल श्रद्धालु। अमृत विचार

अमृत विचार। जय श्री राम सेवा समिति के तत्वावधान में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा एवं संगीतमय राम कथा के शुभारंभ के अवसर पर शुक्रवार शाम को कस्बे के रामलीला मैदान से भव्य कलश शोभा यात्रा कथा स्थल की ओर प्रस्थान करते हुए भक्तिमय माहौल में निकाली गई। नगर भ्रमण के बाद कलश शोभा यात्रा का शाम को समापन हो गया।

कलश यात्रा के दौरान पीले वस्त्रों में सजी महिलाएं सिर पर मंगल कलश रखकर चल रही थीं, जो एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। इस यात्रा में देवी रूप में सजी झांकियां और रथ भी शामिल थे, जिन्हें देखकर श्रद्धालुओं का मन भक्ति से भर गया। छोटी-छोटी कन्याओं को देवी रूप में सजाकर रथों पर आगे-आगे चलाया गया।

कथा के प्रथम दिन, भगवताचार्य पं. अर्पण द्विवेदी महाराज (अंकुर, वृन्दावन धाम) द्वारा गणेश कलश पूजन के बाद कस्बे में यह कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा का शुभारंभ रामलीला मैदान से पूर्व सैनिकों द्वारा संयुक्त रूप से झंडी दिखाकर किया गया। कलश यात्रा रामलीला मैदान से शुरू होकर बेला रोड, लोहामंडी और दुर्गा मंदिर फीडर रोड सहित कई मार्गों से गुजरी। महिलाएं मंगल गीत गाती हुई चल रही थीं, वहीं बैंड-बाजे की धुन पर युवा भक्त भी झूमते हुए चल रहे थे। इस अवसर पर जय श्री राम सेवा समिति के पदाधिकारियों में रविन्द्र कुमार मिश्रा, गुड्डू श्रीवास्तव, छुन्नू तिवारी, पंकज दुबे, दिनेश भदौरिया, हरी शंकर तिवारी, विनय तिवारी, अवधेश द्विवेदी, अखिलेश शुक्ला, कुंवर सिंह, अनिल दुबे, नरेश भदौरिया आदि ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और कलश यात्रा को सफल बनाया। नगर में भव्य कलश शोभा यात्रा का महिलाओं पुरुषों द्वारा जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया।

डीएलएड परीक्षा | डीएलएड परीक्षा में शुचिता की कसौटी परखने पहुंचे डायट प्राचार्य

नकलविहीन परीक्षा कराने को केंद्रों का किया निरीक्षण

संवाददाता, अजीतमल (औरैया)

जनता इंटर कॉलेज में परीक्षा का निरीक्षण करते डायट प्राचार्य। अमृत विचार

अमृत विचार। जनपद में चल रही डीएलएड तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा की शुचिता और पारदर्शिता को परखने के लिए उपशिक्षा निदेशक / डायट प्राचार्य जी एस राजपूत ने शुक्रवार को विभिन्न परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। सभी केंद्रों पर परीक्षा सीसीटीवी कैमरों की सतत निगरानी में शांतिपूर्ण ढंग से संचालित हो रही है।

निरीक्षण के दौरान डायट प्राचार्य ने जनता इंटर कॉलेज अजीतमल, जिला पंचायत इंटर कॉलेज मुरादगंज, तिलक इंटर कॉलेज औरैया तथा नगर पालिका इंटर कॉलेज औरैया सहित छह परीक्षा केंद्रों का भ्रमण किया। उन्होंने परीक्षा कक्षों का निरीक्षण कर सीसीटीवी कैमरों की कार्यप्रणाली, परीक्षार्थियों की उपस्थिति, पर्यवेक्षकों की तैनाती और सुरक्षा व्यवस्था का गहन अवलोकन किया।

डीएलएड तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा दो पालियों में आयोजित की जा रही है। पहली पाली सुबह 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक और दूसरी पाली दोपहर 10.30 बजे से शाम 3.30 बजे तक सम्पन्न हुई। परीक्षार्थियों को परीक्षा शुरू होने से 20 मिनट पहले तक ही केंद्र में प्रवेश की अनुमति दी गई, जिसके बाद प्रवेश द्वार बंद कर दिए गए। पहली पाली में विज्ञान शिक्षण विषय की परीक्षा में कुल 2183 पंजीकृत परीक्षार्थियों में से 2107 उपस्थित रहे, जबकि 76 अनुपस्थित पाए गए। वहीं, दूसरी पाली में गणित शिक्षण विषय की परीक्षा में 2166 में से 2089 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए और 77 अनुपस्थित रहे। निरीक्षण के उपरांत डायट प्राचार्य जीएस राजपूत ने सभी केंद्र व्यवस्थापकों को सीसीटीवी कैमरे पूरी तरह क्रियाशील रखने और परीक्षा की शुचिता बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि परीक्षा की पवित्रता से किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार्य नहीं होगा। यदि किसी केंद्र पर लापरवाही या अनियमितता पाई गई तो संबंधित केंद्र व्यवस्थापक के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन और शिक्षा विभाग परीक्षा को नकलविहीन एवं निष्पक्ष ढंग से सम्पन्न कराने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। सभी परीक्षा केंद्रों पर निगरानी व्यवस्था सुदृढ़ रखी गई है।

ट्रक पलटा, बाल बाल बचा चालक

फफूंद। थाना क्षेत्र के पाता-रामगढ़ मार्ग की हालत खराब होने के चलते एक ट्रक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया। गनीमत रही कि चालक कूद गया और वह बाल-बाल बच गया।

शुक्रवार को पाता गेल प्लांट से ट्रक चालक रसूलाबाद निवासी भारत पाल ने दाना से भरी बोरियां लोड कराकर बिधूना जाने के लिए रामगढ़ होकर निकला। पाता से कुछ दूर निकलते ही ट्रक गड्ढों भरी सड़क पर अनियंत्रित होकर पलट गया। हादसे के वक्त चालक सतर्कता बरतते हुए केबिन से कूद गया, जिससे उसकी जान बच गई। ग्रामीण का कहना है कि मार्ग की स्थिति लम्बे समय से खराब है, आए दिन वाहन फंसने और दुर्घटनाएं होने के बावजूद मरम्मत नहीं कराई जा रही जिससे दोपहिया वाहन चालक भी गड्ढों में गिरकर घायल हो रहे हैं। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से सड़क सही कराने की मांग की है।

खाटू श्याम बाबा के जन्मोत्सव पर निकाली गई भव्य शोभायात्रा

संवाददाता, बिधूना

खाटू श्याम बाबा के जन्मोत्सव पर निकाली जा रही शोभा यात्रा। अमृत विचार

अमृत विचार। खाटू श्याम बाबा के जन्मोत्सव के पावन अवसर पर शुक्रवार को बिधूना नगर में श्रद्धा और भक्ति का मनमोहक संगम देखने को मिला। नगर के वन खण्डेश्वर मंदिर परिसर से एक विशाल और भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसने पूरे नगर को भक्तिमय बना दिया। नगर के लोगों ने शोभा यात्रा पर पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया।

शोभायात्रा की मुख्य आकर्षक झांकियों में शिव-पार्वती की मनोहारी झांकी शामिल थी। इस अवसर पर भक्त पूरे उत्साह के साथ डीजे की धुन पर नाचते-झूमते हुए चल रहे थे। खाटू श्याम बाबा की प्रतिमा को पालकी में विराजमान कर वन खण्डेश्वर मंदिर से यात्रा का शुभारंभ किया गया। यह शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों बेला रोड, किशनी रोड, फीडर रोड, लोहामंडी और दिवियापुर रोड से होते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। कस्बे और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से हजारों की संख्या में श्रद्धालु इस भक्तिपूर्ण यात्रा में शामिल हुए। बाबा के भजनों पर नाचते-गाते हुए भक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा था। शोभा यात्रा अंत में संवालिया गांव स्थित खाटू श्याम धाम मंदिर पर जाकर संपन्न हुई। पूरे नगर में खाटू श्याम बाबा के जयकारों से वातावरण गूंजता रहा। इस भव्य कार्यक्रम के सफल आयोजन में राहुल तिवारी, दिनेश तिवारी, सौरभ तिवारी, गौरव तिवारी, हिमांशु श्रीवास्तव, अभिषेक शर्मा, महावीर शाक्य, राजा गुप्ता, राधा, प्रगति, शिवी, रेनू और दिव्या गुप्ता सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भागीदारी निभाई।

न्यूज ब्रीफ

ग्राम चौपाल में आईं चार शिकायतें

कुरारा (हमीरपुर)। विकासखंड क्षेत्र के कुतुबपुर व देवीगंज ग्राम पंचायत में ग्राम चौपाल का आयोजन किया गया। इसमें मौके पर आई चार शिकायतों का निस्तारण किया गया। क्षेत्र के ग्राम पंचायत कुतुबपुर में खंड विकास अधिकारी शिवनारायण कश्यप की अध्यक्षता में ग्राम चौपाल का आयोजन किया गया। जिसमें गांव के विजय सिंह ने पीएम आवास की मांग की। जिस पर सर्वे कराकर पात्रता सूची में नाम दर्ज किया गया। रोशनी ने राशन कार्ड के संबंध में शिकायत की। जिस पर केवाईसी करवाई गई। तुलसीराम ने शौचालय की मांग की, जिस पर विभाग द्वारा नाम भेजा गया। वही देवीगंज गांव में सचिव ब्रजेश शुक्ला की अध्यक्षता में ग्राम चौपाल आयोजित की गई। इसमें राम नारायण ने वृद्धा पेंशन की मांग की। जिस पर केवाईसी करवाई गई। ग्राम चौपाल में ग्राम प्रधान, कोटेदार एएनएम, आशा, आंगनबाड़ी आदि मौजूद रहे।

बाजार में खरीदारी करने गई महिला लापता

राठ (हमीरपुर)। चिकासी थाने के टोला खंगारन गांव निवासी हरसहाय ने बताया कि उसकी पत्नी कमलेश (40) गुरुवार को अपने पुत्र राहुल के साथ कस्बे के कोट बाजार में खरीदारी करने आई थी। शाम करीब 3 बजे खरीदारी के बाद महिला सैना रोड स्थित वन विभाग कार्यालय के पास से महिला बेटे को बिना बताए लापता हो गई। पति ने बताया कि काफी तलाशने के बाद भी उसकी पत्नी का पता नहीं लग सका है।

बाइक सवारों ने महिला का पर्स छीना

कुरारा (हमीरपुर)। कालपी हमीरपुर हाईवे में डामर कुरारा के बीच अज्ञात बाइक सवार दो युवकों ने ई रिक्शा में बैठकर आ रही महिला का पर्स छीन कर भाग निकले। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे खंगाल कर जांच शुरू कर दी है। थानाक्षेत्र के डामर गांव निवासी शकुंतला पुत्री शिवनाथ अपने भाभी के साथ शुक्रवार की सुबह 11:30 बजे अपने गांव से कस्बे ई रिक्शा में बैठकर आ रही थी। तभी दो अज्ञात युवक बाइक लेकर ई रिक्शा के बगल से चलते हुए महिला के पर्स छीनकर कस्बे की तरफ भाग निकले। महिला के भाई मानसिंह ने बताया की पर्स मे चांदी के जेवरात तोड़िया, मीना और 25 हजार नकदी पड़े थे। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक राम आसरे सरोज ने बताया कि पीड़िता की रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी की तलाश की जा रही है।

टायर फटने से ई-रिक्शा पलटा, छह घायल

सुमेरपुर। पौथिया से सवारी लेकर कस्बे में आ रहा ई रिक्शा दरियापुर गांव के समीप अचानक टायर फटने से सड़क किनारे खड्ड में जाकर पलट गया। घटना में ई रिक्शा में सवार मां बेटी सहित आधा दर्जन सवारियां घायल हो गई। पौथिया गांव निवासी संतोष कुमार अपने ई रिक्शा में सोनी, नैना, सुनीता, अनीता, प्रियांशी, वीरपाल, नरेंद्र सिंह को बैठाकर सुमेरपुर कस्बे आ रहा था। दरियापुर गांव के समीप तेज रफ्तार ई-रिक्शा का अचानक टायर फट गया और ई-रिक्शा पलट गया।

24 घंटे रिमझिम बारिश से खेत-खलिहान लबालब, फसलें खराब

कार्यालय संवाददाता, हमीरपुर

- धान की फसल में 15 करोड़ के नुकसान की संभावना
- गुरुवार सुबह 5 बजे से शुरू हुई बारिश शुक्रवार को रुकी

अमृत विचार। बंगाल की खाड़ी में उठे मोंथा तूफान ने मुख्यालय सहित अन्य क्षेत्रों में 24 घंटे तक बारिश का कहर बरपाया है। गुरुवार सुबह 5 बजे से शुरू हुई रिमझिम बारिश का सिलसिला शुक्रवार सुबह 5 बजे आकर थमा। बारिश से खेतों में जलभराव हो गया है। तेज हवाओं के साथ हुई बारिश ने खेतों में खड़ी धान की फसल को बुरी तरह से प्रभावित कर दिया है। खेतों में पानी भरा होने से फसल खराब होने की संभावना बलवती हो उठी है।

मोंथा तूफान का कहर गुरुवार को सुबह 5 बजे से शुरू हुआ और शुक्रवार को सुबह 5 बजे आकर थमा। 24 घंटे की बारिश ने खेत खलिहानों को लबालब कर दिया है। तेज हवाओं संग हुई बारिश ने खेतों में धान की फसल पूरी तरह से गिरा दी। सुमेरपुर ब्लॉक में करीब 10,000 बीघे में धान की फसल रोपित की गई है। बारिश से करीब 15 करोड़ की फसल चौपट होने की संभावना है। धान की फसल की दुर्दशा को देखकर किसान कराह हो उठा है। किसान उदयभान यादव, मानसिंह भदौरिया, सौरभ सिंह, पप्पू शर्मा, धीरेंद्र यादव, सुरेश कुमार आदि ने बताया कि बारिश से खेतों में जल भरा होने के कारण धान की फसल में 50 फीसदी से ज्यादा नुकसान की संभावना बढ़ गई है। उधर सहायक विकास अधिकारी (कृषि) मृत्युंजय यादव ने बताया कि जिले में 20,000 हेक्टेयर में धान की फसल रोपित की गई है। सर्वाधिक क्षेत्रफल सुमेरपुर व कुरारा विकासखंड क्षेत्र में है। बारिश से धान की फसल को नुकसान हुआ है। नुकसान कितने प्रतिशत होगा अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। मौसम साफ होने के बाद ही नुकसान का आकलन हो सकता है। वहीं शुक्रवार को पूरे दिन बादलों का डेरा जमा रहा। लेकिन बरसात नहीं हुई। इससे किसानों ने राहत की सांस ली।

बारिश से खेत पर पड़ी धान की फसल। अमृत विचार

बारिश के चलते मकान गिरने से महिला दबी, घायल

■ मौदहा(हमीरपुर)। कोतवाली क्षेत्र के खैरी गांव निवासी महिला रानी (25) पत्नी सुरेंद्र शुक्रवार की सुबह घरेलू काम में जुटी हुई थी। तभी मिट्टी का बना मकान भरा भरा कर गिर गया। जिसमें महिला दब गई। आनन-फानन ग्रामीणों की मदद से महिला को मलबे से निकलकर पुत्र सुरेंद्र ने कस्बे के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया। प्राथमिक उपचार के उपरांत रानी की तबीयत में सुधार न होने पर चिकित्सकों ने सदर अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। ग्राम प्रधान ने बताया कि महिला के दो पुत्र है, शुक्रवार को सुबह मकान के गिर जाने से महिला घायल हो गई।

कुम्हड़े की फसल बर्बाद, किसान परेशान

कुरारा (हमीरपुर)। क्षेत्र में गुरुवार को हुई बारिश के चलते रिठारी गांव में एक दर्जन किसानों की कुम्हड़े की फसल खराब हो गई। जिससे कुम्हड़े की फसल से उम्मीद लगाए किसान मायूस हो गए है।

क्षेत्र के रिठारी गांव में किसान गुलाब सिंह 20 बीघा, राजू गुप्ता 20 बीघा, सुशील 15 बीघा, राजू कुशवाहा 10 बीघा, गौरी शंकर 15 बीघा, वीरेंद्र 45 बीघा, शंकर श्रीवास 20 बीघा, मनोज कुमार 15 बीघा आदि किसानों ने सफेद कुम्हड़ा की फसल लगाई थी। गुरुवार को अति जलवृष्टि होने से कुम्हड़ा की फसल खराब हो जाने पर उम्मीद लगाए किसान मायूस नजर आ रहे हैं। शिल्पी श्रीवास ने बताया कि 33 बीघा मे सफेद कुम्हड़े की फसल लगाई थी। जिसमें प्रति बीघा का 10 हजार का खर्चा आया था। लगातार दो दिन बारिश होने के चलते कुम्हड़ा की फसल खराब हो गई है। जिससे लागत भी निकालना मुश्किल है। कुम्हड़ा की खरीद के लिए आगरा अलीगढ़ के व्यापारी 25 हजार प्रति बीघा खरीद करते थे। जिससे गांव के एक दर्जन किसानों ने सफेद कुम्हड़ा पर दाव लगाया था। किसान शंकर श्रीवास ने बताया कि 20 बीघा बटाई का खेत लेकर सफेद कुम्हड़ा की फसल लगाई थी। फरवरी माह में अपनी लड़की की शादी तय कर दी है। फसल खराब होने से कर्ज लेना पड़ेगा।

बारिश के चलते खराब हुआ कुम्हड़ा। अमृत विचार

- रिठारी में ही एक दर्जन से ज्यादा किसानों ने बोया था कुम्हड़ा

हत्या के तीन और आरोपियों को पुलिस ने जेल भेजा

मौदहा (हमीरपुर)। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम परछछ में प्रेमिका से मिलने आए प्रेमी की प्रेमिका के परिजनों द्वारा बंधक बना मारपीट कर की गई हत्या के मामले में कोतवाली पुलिस ने प्रेमिका के पिता व चाचा समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है।

बांदा जनपद के ग्राम जसपुरा निवासी रवि पुत्र उमाशंकर उर्फ कालीदीन अपनी प्रेमिका से मिलने कोतवाली क्षेत्र के परछछ गांव आया था। तभी प्रेमिका के चाचा ने अपने परिजनों व ग्रामीणों की मदद से रवि को बंधक बनाकर जमकर मारा पीटा, जिससे उसकी मौत हो गई। घटना में प्रेमिका का चाचा पिंटू भी चाकू लगने से घायल हो गया था। वहीं प्रेमी की मौत से आहत प्रेमिका ने भी ब्लेड से अपना गला व हाथ की नसें काट ली। जिसे गंभीर अवस्था में कस्बे की सीएचसी में भर्ती कराया गया था। वहीं मामले में पुलिस ने मृतक रवि के पिता मैयादीन की तहरीर पर मुकेश, पुत्तन, दादी कल्ली व बल्ली सूबेदार समेत पांच के खिलाफ हत्या समेत अन्य धाराओं में मामला दर्ज किया था। कोतवाली पुलिस ने मामले में दो लोगों को तत्काल पकड़ा था।

स्वास्थ्य सेवाओं में लापरवाही पर होगी कार्रवाई

राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के तहत 300 क्षय रोगियों को वितरित की गई पोषण पोटली

कार्यालय संवाददाता, हमीरपुर

अमृत विचार। कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी घनश्याम मीना की अध्यक्षता में जनपद स्तरीय टीबी टास्क फोर्स कम स्टीयरिंग कमेटी एवं जिला स्वास्थ्य समिति बैठक की गई। जिसमें परिवर्तन राजभाषा एकेडमी द्वारा राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के 300 क्षय रोगियों को गोद लिए जाने के संदर्भ में पोषण पोटली/ न्यूट्रिशन किट का वितरण किया गया। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को लेकर सभागार में उपस्थित समस्त लोगों को राष्ट्रीय एकता की शपथ भी दिलाई।

बैठक को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने बताया कि राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद में 1753 क्षय रोगी इलाज ले रहे हैं। इनमें से 1750 रोगियों को गोद लिया जा चुका है। गोद लेने वाली संस्थाओं में जेके सीमेंट सुमेरपुर, रिमझिम इस्पात सुमेरपुर, रेडक्रॉस सोसाइटी, परिवर्तन राजभाषा एकेडमी तथा राजनैतिक प्रतिनिधि एवं समस्त जनपद स्तरीय अधिकारी सम्मिलित है। बताया कि क्षय रोगियों के लिए सभी अस्पतालों एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में निशुल्क जांच एवं उपचार की सुविधा उपलब्ध है। क्षय रोग पोषण की कमी की वजह से पाया जाता है। अगर क्षय रोगियों का पोषण व देखभाल सही से की जाए तो आसानी से इस रोग को हराया जा सकता है। उन्होंने सभी चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश दिए कि समय से क्षय रोगियों तक उपचार पहुंचाए ताकि की पूरे जनपद को टीबी मुक्त बनाया जा सके। निर्देश दिए कि स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लोगों तक समय से पहुंचे तथा किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। बैठक में सांसद प्रतिनिधि अशोक तिवारी, चेयरमैन कुलदीप निषाद, सीडीओ अरूण कुमार सिंह, सीएमओ डॉ.गीतम सिंह, एडीएम वित्त एवं राजस्व विजय शंकर तिवारी, एडीएम न्यायिक रिजवाना शाहिद आदि मौजूद रहे।

क्षय रोगी को पोषण किट देते डीएम व अन्य। अमृत विचार

नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुरेश सोनी और उनकी टीम को शपथ ग्रहण कराते विधायक विनय वर्मा।

स्वर्णकार समाज के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को दिलाई शपथ

संवाददाता, राठ (हमीरपुर)

- शौहरतगढ़ विधायक ने पदाधिकारियों को कराया कर्तव्य बोध

अमृत विचार। श्रीभोला आनंदेश्वर मंदिर समिति द्वारा स्वर्णकार समाज धर्मशाला के हुए नवनिर्वाचित समिति के पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। शपथ ग्रहण समारोह के मुख्य अतिथि विधायक शौहरतगढ़ विनय वर्मा सोनी ने पदाधिकारियों को उनके दायित्व का बोध कराते हुए उन्हें बधाई दी।

शपथ ग्रहण के दौरान नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुरेश सोनी ने अध्यक्ष पद की शपथ ली। इसके बाद आकाश सोनी उपाध्यक्ष, चंद्रप्रकाश सोनी उपाध्यक्ष, अमित सोनी उपाध्यक्ष, बाल स्वरूप सोनी महामंत्री, प्रभात सोनी उपमंत्री, देवनारायन सोनी कोषाध्यक्ष, मनोज कुमार सोनी आडीटर ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। वहीं सदस्य रोहित कुमार सोनी, किशन सोनी, सुनील सोनी, अजय कुमार, रौनक सोनी समेत अनेक लोगों ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। इसके पहले मुख्य अतिथि समेत विशिष्ट अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष जयंती राजपूत, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीनिवास बुधौलिया, भरत अनुरागी ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ कराया। शपथ ग्रहण समारोह के दौरान संस्थापक सदस्य लक्ष्मी प्रसाद स्वर्णकार, महेश चंद्र सोनी, कमलाकर सर्राफ, शंकर दयाल सोनी, राधेश्याम, केशव प्रसाद और चंद्रशेखर को मुख्य अतिथि ने माला पहनाते हुए शॉला ओढ़ाकर सम्मानित किया। शपथ ग्रहण समारोह के दौरान विजय वर्मा मूसानगर, व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष केजी अग्रवाल, काशी प्रसाद गुप्ता, गोपीराम राजपूत एडवोकेट, ब्रजेश गुप्ता, उमाशंकर गुप्ता, भोले सोनी, निवर्तमान अध्यक्ष ब्रजभूषण सोनी दाऊ, आकाश सोनी, चंद्रकांत सोनी समेत समाज के सैकड़ों लोग रहे।

29 वाहनों का चालान कर 14.50 लाख रुपये वसूले

हमीरपुर। संयुक्त टीम ने ओवरलोडिंग व अवैध खनन परिवहन के खिलाफ अलग अलग थाना क्षेत्रों में चेकिंग अभियान चलाया। जिसमें कुल 29 वाहनों चालान कर लगभग 14.50 लाख का जुर्माना वसूला गया है।

जिलाधिकारी घनश्याम मीना के अवैध खनन व परिवहन के सख्त निर्देशन के अनुपालन में एसडीएम मौदहा तथा खनिज विभाग की संयुक्त टीम ने चेकिंग अभियान चलाया। जिसमें 20 वाहन अवैध परिवहन करते पाए गए, 05 वाहनों को थाना पुलिस की सुपुर्दगी में दिया है। 15 वाहनों का ऑनलाइन चालान किया है। इसी तरह एसडीएम सदर केडी शर्मा, सीओ सदर राजेश कमल, एआरटीओ एवं खनन विभाग की संयुक्त टीम की चेकिंग अभियान में 03 वाहनों को पकड़कर कुछेछा चौकी में खड़ा कराया है।

वन स्टाप सेंटर बना जंग का अखाड़ा!

कार्यालय संवाददाता, हमीरपुर

अमृत विचार। वन स्टॉप सेंटर की महिला मैनेजर ने अपने ही विभाग के अधिकारी और महिला कर्मचारी पर गंभीर आरोप लगा शुक्रवार को प्रोबेशन कार्यालय में जमकर हंगामा काटा। जिसका वीडियो सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहा है। इस मामले में अधिकारी ने महिला मैनेजर द्वारा लगाए आरोपों को निराधार बताया। कहा वह जांच से बचने के लिए दबाव बना रही है।

मुख्यालय के कलेक्ट्रेट स्थित वन स्टाप सेंटर के बाथरूम में बीते कुछ माह पूर्व एक पीड़ित महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया था। इस मामले की जांच एडीएम न्यायिक कर रहीं हैं। जिसको लेकर बीते कुछ माह से वन स्टाप सेंटर की महिला मैनेजर मोनिका गुप्ता और डीपीओ राजीव कुमार के बीच जंग का माहौल बना हुआ है। शुक्रवार को वन स्टाफ सेंटर की मैनेजर मोनिका गुप्ता ने विभागीय अधिकारी डीपीओ राजीव कुमार पर गोली मारने व नौकरी से निकालने का आरोप लगाया। जिसका वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। (अमृत विचार वीडियो की पुष्टी नहीं करता) इस मामले में डीपीओ राजीव कुमार का कहना है कि करीब चार माह पूर्व वन स्टाप सेंटर में एक पीड़ित महिला ने फांसी लगाने का प्रयास किया था। साथ ही एक और प्रकरण की जांच मोनिका के खिलाफ चल रही है। शुक्रवार सुबह कार्यालय में तैनात दीक्षा सिंह विभागीय कार्य से डीएम कार्यालय जा रहीं थीं। तभी सेंटर के बाहर बैठी एक बच्ची से हालचाल जानने का प्रयास किया। इस पर महिला मैनेजर नाराजगी जताते हुए प्रोबेशन कार्यालय पहुंचीं, डीपीओ और दीक्षा के साथ नोकझोंक हुई।

हादसे में किशोर की मौत से परिवार में मचा कोहराम

बिवांर (हमीरपुर)। करगांव गांव निवासी अरुण कुमार 15 पुत्र रामप्रकाश का चचेरा भाई सुखराम ट्रक चालक है। दीपावली पर्व पर चालक घर आया था। वापस जाते समय उसका चचेरा भाई अरुण भी सुखराम के साथ ट्रक में चला गया है। दो दिन पहले चालक आगरा से माल लेकर झांसी आ रहा था। ग्वालियर के डबरा के पास हादसा हो गया। जिसमें चालक सुखराम व अरुण गंभीर रूप से घायल हो गए। अस्पताल में डॉक्टर ने अरुण को मृत घोषित कर दिया है। पुलिस ने पीएम के बाद शव परिजनों को सौंपा।

पटेल जयंती

रन फॉर यूनिटी का हुआ आयोजन, स्थानीय लोगों, छात्र-छात्राओं ने उत्साह से किया प्रतिभाग

एकता के लिए हाथों में तिरंगा लेकर लगाई दौड़, प्रतियोगिताएं भी हुईं

कार्यालय संवाददाता, हमीरपुर

अमृत विचार। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर राजकीय स्पोर्ट्स स्टेडियम में रन फॉर यूनिटी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी घनश्याम मीना एवं पुलिस अधीक्षक डॉ.दीक्षा शर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने एकता, अखंडता और राष्ट्र की सुरक्षा के संदेश के साथ उत्साहपूर्वक रन फॉर यूनिटी में भाग लिया। इस दौरान छात्र-छात्राओं तथा नागरिकों ने हाथों में तिरंगा एवं पटेल जी के चित्र लेकर राष्ट्र की एकता का संदेश दिया। इसके बाद डीएम और एसपी ने रन फॉर यूनिटी दौड़ एवं रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

रैली पुलिस लाइन्स से प्रारम्भ होकर रानी लक्ष्मीबाई तिराहा, यमुना पुल, चौरा देवी मंदिर होते हुए पुनः पुलिस लाइन्स में संपन्न हुई। इस मौके पर एमएलसी जितेंद्र सिंह सेंगर, भाजपा के प्रदेश के सह मीडिया प्रभारी हिमांशु दुबे, जिलाध्यक्ष सुनील पाठक, चेयरमैन कुलदीप निषद, ब्लॉक प्रमुख आशीष पालीवाल, धीरेंद्र शिवहरे मौजूद रहे।

रन फॉर यूनिटी के तहत निकली रैली में शामिल पुलिस अधिकारी व अन्य। अमृत विचार

रन फॉर यूनिटी में शामिल पूर्व विधायक डॉ.अम्बेश कुमारी। अमृत विचार

कुरारा कस्बे में प्रभात फेरी निकालते विद्यार्थी। अमृत विचार

जिला कारागार में बंदियों के बीच निबंध व पोस्टर स्पर्धा

■ हमीरपुर। पटेल जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया। कारागार में बंदियों, सुरक्षा कर्मियों, कार्यालय स्टाफ एवं अधिकारियों की निबंध व पोस्टर स्पर्धा हुई। वक्ताओं द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डा.दीपकमणि नायक, जेलर आनन्द सिंह, डिप्टी जेलर देवेन्द्र कुमार, शिखर, सरला देवी व अध्यापक गजेन्द्र सिंह आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। मौदहा संवाददाता के अनुसार कस्बे के विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों में प्रभात फेरियां निकाली गईं और अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम जैसे वाद विवाद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। क्षेत्राधिकारी विनीता पहल के नेतृत्व में पुलिस ने सरदार पटेल की 150वीं जयंती को रन फॉर यूनिटी के रूप में मनाया। कोतवाली प्रभारी उमेश कुमार सिंह की अगुवाई में मैराथन हुई।

पटेल जयंती पर महाविद्यालय में गूंजे भारत माता के जयकारे

राठ। पटेल जयंती के तहत रन फॉर यूनिटी में जनप्रतिनिधियों, बच्चों, अधिकारियों ने भाग लिया। यह रैली ब्रह्मानंद महाविद्यालय से शुरू हुई। जो कस्बे के प्रमुख मार्गों से होते हुए वापस पहुंची। रैली में पूर्व विधायक डॉ.अम्बेश कुमारी, भाजपा नगर अध्यक्ष महेंद्र शुक्ला, ब्लाक प्रमुख गोहांड अरविंद मुखिया समेत सैकड़ों की तादाद में बच्चें मौजूद रहे। इस दौरान स्कूली बच्चों ने भारत माता की जय के नारे खूब लगाए।

पटेल व आचार्य नरेंद्र देव को नमन कर दी पुष्पांजलि

■ सुमेरपुर। वर्णिता संस्था के तत्वावधान में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल व आचार्य नरेन्द्र देव की जयंती पर उन्हें याद करते हुए पुष्पांजलि अर्पित की गई। संस्था के अध्यक्ष डॉ. भवानीदीन ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल एक बेमिसाल देशभक्त थे। 1930, 1932 और 1942 के आंदोलन में प्रतिभाग किया और कई बार जेल गए। देश के प्रति इनका भी सराहनीय योगदान रहा। कालांतर में इनका 21 फरवरी 1989 को निधन हो गया था। इस कार्यक्रम में अशोक अवस्थी, सिद्धा, प्रेम, सागर, विकास, होरीलाल, रिचा, रामनारायण सोनकर, रामबाबू, महावीर प्रजापति इलेक्ट्रीशियन, सतेन्द्र, राहुल प्रजापति आदि शामिल रहे।

कुरारा प्रतिनिधि के अनुसार कस्बे के राजकीय इंटर कॉलेज में भारत रत्न की जयंती के अवसर पर छात्र छात्राओं ने प्रभात फेरी निकाली, जो विद्यालय से शुरू होते हुए कालपी हमीरपुर हाईवे से ब्लॉक कार्यालय होते हुए मेन बस स्टैंड भौली रोड होते हुए मुख्य बाजार होते हुए वापस विद्यालय में समाप्त हुई।

इस अवसर पर प्रधानाचार्य सुधाकर वर्मा, अध्यापक प्रकाश द्विवेदी, शैलेंद्र सिंह, शमशेर सिंह, अखिलेश बाबू आदि मौजूद रहे।

- रन फॉर यूनिटी के तहत निकाली गई प्रभात फेरी

चाचा से विवाद पर भतीजे ने खुद को आग लगाई, झुलसा

राठ (हमीरपुर)। कस्बे के बुधौलियाना मोहल्ले में चाचा से विवाद होने पर भतीजे ने अपने ऊपर तेल उड़ेल आग लगा ली। गंभीर रूप से झुलसे युवक को इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया।

बुधौलियाना मोहल्ला निवासी कमलेश (30) पुत्र भगवान दास का अपने चाचा सीताराम से घर में जुआ खिलवाने और शराब पीने पिलाने को लेकर विवाद हो गया था। बताया जाता है कि चाचा ने कमलेश पर घर में जुआ खिलाने और लोगों को शराब पिलाने का आरोप लगाया था। इस विवाद के बाद कमलेश ने आक्रोश में आकर अपने शरीर पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। युवक को जलता देख मौके पर मौजूद परिजनों और पड़ोसियों ने तुरंत उसे इलाज के लिए सीएचसी ले गए। चिकित्सक माजिद ने बताया कि युवक की गर्दन, कंधा, हाथ, सीना और पेट जल गया है। नाजुक हालत होने पर युवक को मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया।

www.amritvichar.com
पर भी खबरें पढ़ें

अमृत विचार

कानपुर, शनिवार 1 नवंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

साइबर टीम ने गुम मोबाइल किया बरामद

महोबा। साइबर हेल्प डेस्क थाना कोतवाली नगर की टीम ने गुम हुए मोबाइल को खोजकर पीड़ितों के सुपुर्द किए। अभय सिंह कुशवाहा पुत्र विजय सिंह निवासी गाजीपुर का मोबाइल फोन, जो कही गुम हो गया था। सरकार के जारी किये गये पोर्टल से बरामद कर शुक्रवार को सकुशल शिकायतकर्ता को सुपुर्द किया गया।

रामलीला में सीता हरण का हुआ मंचन

कुलपहाड़। रामलीला समिति कुलपहाड़ के तत्वावधान में चल रही रामलीला में आदर्श रामलीला ओरछा धाम के पात्रों द्वारा सीता हरण व सूर्पनखा की नाक काटने का मंचन किया गया। रामलीला देखने बड़ी संख्या में दर्शक पहुंचे। सीता हरण का मंचन देखकर लोग भावुक हो गए। इस मौके पर रामलीला समिति कुलपहाड़ के अध्यक्ष जागेश्वर प्रसाद यादव के साथ जमुना प्रसाद राजपूत, अशोक अग्रवाल, अस्सू सेठ, डॉ हरगोविंद सैनी, संतोष सुल्लेरे, चंद्र नारायण द्विवेदी, मृदुल चौबे, राजू सोनी, छोटे सोनी, विनोद सोनी आदि ने अपना सहयोग प्रदान किया।

दिन दहाड़े घर में घुसकर चोरी

बिवांर(हमीरपुर)। थानाक्षेत्र के बांधुर खुर्द निवासी दनकिया पत्नी भैरम प्रजापति ने थाने में तहरीर देते हुए बताया कि पड़ोस का राम गुलाम विदोखर गांव के रिश्तेदार शुभम पुत्र बरदानी को करीब 2 महीना से अपने पास रखे हुए हैं। दोपहर को अपने मकान के कमरे में लेटी हुई थी। तभी युवक उसके दूसरे कमरे के अंदर घुस गया है और कमरे में रखे बक्से का ताला तोड़कर उसमें रखे 10 हजार रुपये लेकर जाने लगा। आहट के मिलने पर टोंकने पर मारपीट करते हुए गला दबाकर जान से मारने की कोशिश की। महिला के शोर के मचाने पर नाती विनय ने आकर बीच बचाव किया। युवक जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गया। महिला ने युवक के खिलाफ चोरी करने के साथ मारपीट की तहरीर दी है। हेड कांस्टेबल अवधेश कुमार ने बताया कि महिला की तहरीर मिली है जांच कर कार्यवाही की जाएगी।

रन फॉर यूनिटी में लगाई दौड़, दिलाई गई शपथ

कार्यालय संवाददाता, महोबा

राष्ट्रीय एकता दौड़ को हरी झंडी दिखाते पूर्व सांसद व एसपी। दौड़ने के लिए चौराहे पर खड़े प्रतिभागी। अमृत विचार

अमृत विचार। भारत के लौह पुरुष की 150वीं जयंती पर शुक्रवार को राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। एसपी प्रबल प्रताप सिंह के नेतृत्व में शहर के आल्हा चौक में सुबह आठ बजे कार्यक्रम की शुरुआत सरदार पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित करने से हुई। इसके बाद रन फॉर यूनिटी का आयोजन आल्हा चौक से जिलाधिकारी आवास तक किया गया। इस कार्यक्रम को एसपी ने हरी झंडी दिखाई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व सांसद (बांदा/चित्रकूट) आरके सिंह पटेल, अपर जिलाधिकारी कुंवर पंकज, अपर पुलिस अधीक्षक वन्दना सिंह, क्षेत्राधिकारी, जन प्रतिनिधियों, पुलिस लाइन एवं थाना कोतवाली नगर के पुलिसकर्मी, रिक्रूट आरक्षीगण, समाजसेवी, स्थानीय नागरिक, स्कूली छात्र छात्राएं, खिलाड़ी एवं धावकगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

एसपी ने बताया कि इस आयोजन का प्रमुख उद्देश्य समाज में एकता, अखंडता एवं आपसी सौहार्द के भाव को सुदृढ़ करना है।

पनवाड़ी संवाददाता के अनुसार पनवाड़ी थाना प्रभारी निरीक्षक अर्जुन सिंह के नेतृत्व में शुक्रवार को रन फार यूनिटी कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें थाना पुलिस एवं पुलिस लाइन में प्रशिक्षण ले रहे आरक्षियों के साथ कस्बे में लगभग दो किमी दौड़ लगाई। इस मौके पर पुलिस कर्मियों ने लोगों को एकजुट करना और समाज के उत्थान के लिये जागरूक किया साथ ही प्रभारी निरीक्षक ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के कृतों पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति शपथ दिलाई। रन फार यूनिटी के शुभारंभ के बाद पुलिस कर्मियों और रंगरूटो ने पनवाड़ी थाना से तिगैला होते हुए पाठकपुर पहुंचकर वापस थाना तक लगभग दो किमी. की रनिंग की। दौड दौरान पुलिस कर्मी हाथों में तिरंगा और राष्ट्रीय एकता का बैनर लिए हुए थे साथ ही ग्रामीणों को एकजुट करते हुए समाज के उत्थान के प्रति जागरूक भी किया। पुलिस कर्मियों को रनिंग करते हुए लोगों की खासी भीड़ एकत्र हो गई।

खादी ग्रामोद्योग से 10 लाख रुपये लोन ले शुरू करें व्यवसाय

महोबा। उत्तर प्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड लखनऊ के तत्वावधान में संचालित मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना के अंतर्गत शिक्षित बेरोजागर और परम्परागत कारीगरों को स्वरोजगार स्थापना के लिए बैंकों के माध्यम से 10 लाख रुपये तक का ऋण दिए जाने का प्रावधान है।

इस योजना के अंतर्गत सामान्य जाति के पुरुष लाभार्थियों को पूंजीगत ऋण पर चार प्रतिशत की वार्षिक ब्याज दर पर लोन दिया जाता है। अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, भूतपूर्व सैनिक, दिव्यांगों एवं महिला को स्वयं अंशदान पांच प्रतिशत लगाना होगा। योजना के तहत इस जिले को वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए रोजगार सृजन के लिए 08 इकाई धनराशि 40 लाख, रोजगार 160 का लक्ष्य प्राप्त हुआ है।

इस योजना के लिए लाभार्थी महिला एवं पुरुष की उम्र 15 से 50 वर्ष निर्धारित की गई है। आवेदन दौरान अपेक्षित दस्तावेज आधारकार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, प्रधान द्वारा प्रमाणित अनपत्ति प्रमाणपत्र, कार्य स्थल का नजरी नक्शा, शैक्षिक योग्यता प्रमाणपत्र, जाति प्रमाण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट आदि की आवश्यकता होगी। आवेदन पत्र आनलाइन करने के बाद हार्ड कापी और आवश्यक दस्तावेज कार्यालय दिवस में जिला ग्रामोद्योग कार्यालय में जमा करें। आवेदन पत्र आनलाइन करने के बाद हार्ड कापी आवश्यक है।

50 गांवों की दिनभर गुल रही बिजली, लोग परेशान

बिजली नहीं आने से पानी की समस्या से भी जूझना पड़ा

संवाददाता, कुलपहाड (महोबा)

अमृत विचार। रिमझिम बारिश के बाद सुबह से ही विद्युत सप्लाई ठप हो जाने से लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। महोबा 132 सब स्टेशन से निकली बिजली लाइन का ब्रेक डाउन हो जाने से क्षेत्र के आधा सैकड़ा गांव की बिजली आपूर्ति ठप हो गई, जिससे बिजली पानी को लेकर हाहाकार मचा रहा। 33 केवीए बिजली सबस्टेशन के सभी फीडर बन्द हो जाने से आधा सैकड़ा से अधिक गांवों की बिजली सप्लाई बन्द हो गई, जिससे इलेक्ट्रानिक कारोबार प्रभावित रहा। फोटोकाफी, कैफे, बैल्डिंग की दुकानों पर सारा दिन शटर गिरा रहा।

लगातार हो रही बारिश ने किसानों के साथ-साथ आम आदमी परेशान है। हालत यह है कि सुबह से बारिश रुक रुककर होती रही, इधर बिजली आपूर्ति ठप हो गई। बारिश के चलते कई घंटों तक बिजली कर्मचारियों ने बिजली आपूर्ति बहाल नहीं की, जिसके चलते लोगों को बिजली समस्या से जूझना पड़ा। निसवारा व महोबा लाइन के सबस्टेशन में ब्रेक डाउन हो जाने के कारण कुलपहाड़ 33 केवीए सब स्टेशन के सभी फीडर बन्द हो गए। जिससे कुलपहाड़ सहित क्षेत्र की बिजली आपूर्ति बंद हो गई, जिसका खामियाजा लोगों को भुगतना पड़ा।

महोबा की 132 केवी सबस्टेशन से बिजली लाइन बंद हो जाने के कारण जैतपुर, अजनर, धवर्रा ग्राम के सब स्टेशन की भी विद्युत सप्लाई बन्द हो जाने से लगभग आधा सैकड़ा से अधिक गांवों की बिजली पूरी तरह से गुल हो जाने से लोगों में हड़कंप मचा रहा। लोगों का कहना है कि हल्की बारिश के बाद सुबह से ही बिजली सप्लाई ठप हो जाने के बाद दिनभर बिजली के दर्शन नहीं हुए हैं। देर शाम तक बिजली नहीं आने से लोगों को अंधेरे का भी सामना करना पड़ा। जेई गोपाल का कहना है कि बराबर बारिश होने के कारण लाइन की पेट्रोलिंग नहीं हो पा रही है। जिससे दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है।

शादी अनुदान को रजिस्ट्रेशन शुरू

महोबा। अल्पसंख्यक पिछड़े वर्ग को छोडकर अन्य पिछड़ा वर्ग के गरीब लोगों की पुत्रियों की शादी अनुदान योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2023-24 से ऑनलाइन प्रमाणीकरण, ईकेवाईसी लागू की गयी है। जो कि सुचारू रूप से वर्तमान में संचालित की जा रही है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत सर्वप्रथम आवेदक ऑनलाइन आवेदन भरने से पूर्व अपने आधारकार्ड एवं आधारकार्ड से लिंक मोबाइल नम्बर तथा जाति प्रमाण, आय प्रमाण पत्र बैंक खाते की पासबुक (जिसमें पूर्ण विवरण हो), शादी का कार्ड एवं पुत्री का आधार कार्ड, वर का उम्र प्रमाण पत्र आदि अभिलेख होना आवश्यक है।

जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी कप्तान सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि शादी अनुदान रजिस्ट्रेशन के लिए अपना आधार नंबर अंकित कर आधार अभिप्रमाणन की प्रक्रिया शुरू करेगा। दोनों का आधार आधारित ईकेवाईसी सुनिश्चित किया जायेगा तथा आधार से लिंक मोबाइल नम्बर साथ होना अनिवार्य है।

गौशाला में फैली अव्यवस्था पर राष्ट्रीय हिंदू संगठन ने सौंपा ज्ञापन

कार्यालय संवाददाता, महोबा

अमृत विचार। ग्राम चांदो स्थित गौशाला में व्याप्त अव्यवस्थाओं को लेकर राष्ट्रीय हिंदू संगठन के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं ने सहप्रभारी हेमंत सिंह बुंदेला के नेतृत्व जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। संगठन ने गौशाला में गोवंशों के लिए पर्याप्त पानी, भूसा, चारा आदि की व्यवस्था कराए जाने की मांग की है।

जिलाधिकारी को दिए गए ज्ञापन में संगठन ने बताया कि चांदो गौशाला में फैली अव्यवस्थाओं की जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंचकर जायजा लिया, जहां पर पानी की टंकी, हौद का पानी काई से पटा था, जिसे पीने से गाय बीमारी की चपेट में आ रही हैं साथ ही गौशाला के पीछे मृत गोवंशों के कंकाल, हड्डियां भी पाई गईं। बताया कि गौशाला के सरकारी अभिलेखों में जहां लगभग एक सैकड़ा गायों का पंजीकृत दर्शाया गया, वहीं मौके पर मात्र 15 से 20 गाय ही नजर आ रही थी। ज्ञापन में संगठन के सहप्रभारी ने बताया कि गौशाला में सफाई व्यवस्था पूरी तरह से नदारद मिली थी।

ज्ञापन देने के लिए खड़े संगठन के पदाधिकारी। अमृत विचार

थोड़ी देर बारिश होने पर भर जाता अंडरपास में पानी

महोबा। कुलपहाड़ बेलाताल मार्ग में बने रेलवे के अंडरपास में आज कल तीन तीन फीट पानी भरा होने से दो पहिया और चार पहिया वाहन चालकों की मुसीबत बढ़ गई है। पानी की निकासी के लिए रखी गई पंपिंगसेट मशीन पूरा पानी नहीं निकल पा रही है, जिसका खामियाजा वाहन चालकों को भुगतना पड़ रहा है साथ ही ग्रामीणों को भी भारी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। रेलवे क्रासिंग पर बेलाताल रोड पर बने अंडरपास वाहन चालकों के साथ साथ राहगीरों के लिए भी परेशानी का सबब बना हुआ है।

पिछले कई दिनों से अंडरपास में बारिश से भरे पानी को देखकर कुछ वाहन चालक वाहन दूर खड़े करके स्थिति भांपने के बाद ही निकल रहे हैं। स्टेशन रोड कुलपहाड़ से मुढारी रोड से चार किमी. का चक्कर काटकर बेलाताल नौगांव रोड से निकल रहे हैं। बारिश के अलावा अब सर्दी के मौसम में हो रही बारिश में भी अंडरपास में पानी भरा है।

डीएम व एसपी ने जिला कारागार का किया निरीक्षण

हमीरपुर। जिलाधिकारी घनश्याम मीना व पुलिस अधीक्षक डॉ.दीक्षा शर्मा ने जिला कारागार का मासिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कैदियों की स्थिति और जेल के प्रशासनिक कार्यों का आकलन किया। अधिकारियों ने कारागार निरीक्षण में जेल की सुरक्षा व्यवस्था, सुरक्षाकर्मियों की संख्या, उनके उपकरण और सुरक्षा उपायों की जांच की गई। कैदियों की संख्या, उनकी स्वास्थ्य स्थिति, रहने की व्यवस्था और उनकी शिकायतों को सुना। इसके साथ ही जेल में उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं, डॉक्टरों व दवाइयों की उपलब्धता तथा सफाई व्यवस्था की जांच की गई। कैदियों को दिये जाने वाले भोजन की गुणवत्ता और मात्रा की जांच की गई। इसके अलावा जेल के प्रशासनिक कार्यों, रिकॉर्ड कीपिंग और कैदियों के अधिकारों के संरक्षण की व्यवस्था, शिक्षा, कौशल विकास व पुनर्वास कार्यक्रमों की रूपरेखा को भी परखा। निरीक्षण के दौरान जेल के अंदर सभी व्यवस्थाओं एवं कैदियों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किए जाने के लिए संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

ऑनलाइन ट्रैकिंग सिस्टम से जोड़े जाएंगे बालू-गिट्टी परिवहन के वाहन

कार्यालय संवाददाता, महोबा

- ट्रैकिंग सिस्टम से वाहनों को जोड़ने का शासनादेश
- पत्थर कारोबारियों में मचा हड़कम्प

अमृत विचार। प्रदेश में बालू गिट्टी के परिवहन के लिए वाहनों को ऑनलाइन ट्रैकिंग सिस्टम से जोड़ा जायेगा। शासन के इस आदेश के बाद जिले के पत्थर कारोबारियों में हड़कम्प मच गया है। जिले से एक दिन में निकलने वाले चार पांच हजार गिट्टी से जुड़े वाहनों में अब भारी कमी आएगी। कारण, अभी तक जिले से गुजरने वाले 25 फीसदी वाहन आनलाइन ट्रैकिंग सिस्टम से नहीं जुड़े हैं।

इससे पत्थर कारोबार पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। साथ ही सरकार को राजस्व की भी क्षति होने के आसार बताए जा रहे हैं। हालांकि इससे वाहनों को ऑनलाइन ट्रैकिंग सिस्टम से जोड़ने का शासनादेश खनिज निदेशक ने जारी कर दिया है जो 15 नवंबर से लागू होगा।

निदेशक भू तत्व एवं खनिकर्म उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ माला श्रीवास्तव के 28 अक्टूबर को जारी शासनादेश में कहा गया कि प्रदेश के बालू गिट्टी अप खनिज कारोबार से जुड़े सभी लीज होल्डर, भंडारण लाइसेंस वाले सभी क्रेशर आदि को अपने माल उठान के लिए वाहनों का बार्ज ट्रैकिंग सिस्टम (बीटीएस) से ऑनलाइन खनिज पोर्टल में दर्ज करना होगा तभी उस पंजीकृत वहां की रॉयल्टी बन सकेगी।

जिला खनिज अधिकारी आरबी सिंह ने बताया कि सभी लोगों को जो क्रेशर पहाड़ का कारोबार करते है यह बीटीएस सिस्टम अनिवार्य कर दिया गया है जो 15 नवंबर से लागू हो जायेगा। इससे वाहन की खराबी होने पर रॉयल्टी अवैध नहीं होगी कारण बीटीएस सिस्टम से उक्त वाहन कहा क्यों खड़ा रहा पकड़ में आ जायेगा। बताया कि जिले के सभी 150 भंडारण लाइसेंस वाले क्रेशर एवं सभी 300 पट्टे इस दायरे में आकर अपने अपने लोडिंग करने वाले वाहनों का पोर्टल में पंजीयन कराकर बीटीएस सिस्टम से जोड़ ले। जल्द ही इस काम के लिए कंपनी महोबा में कैंप लगाकर काम करेगी ताकि किसी कारोबारी को असुविधा न हो।

भाषण में नंदनी व रंगोली में हेमंत प्रथम स्थान पर

कार्यालय संवाददाता, महोबा

अमृत विचार। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर साईं कालेज ऑफ एजुकेशन डिग्री कालेज में भाषण व रंगोली प्रतियोगिता के साथ साथ मिशन शक्ति फेस 5 कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में छात्र छात्राओं ने जहां बढ़चढ़ कर प्रतिभाग किया वहीं मिशन शक्ति कार्यक्रम के तहत छात्राओं को उनके अधिकारो, योजनओं व शिक्षा के प्रति जानकारी देते हुए जागरूक किया। वक्ताओं ने लौह पुरुष के जीवन पर भी प्रकाश डाला। भाषण प्रतियोगिता में नंदनी व रंगोली में हेमन्त ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के चेयरमैन संजय कुमार साहू, प्राचार्य डा. एलसी अनुरागी ने मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्जवलन एवं पुष्प अर्पित कर किया। इसके बाद भाषण और रंगोली प्रतियोगिता की शुरूआत हुई, जिसमे कालेज के छात्र छात्राओं ने बढ़चढ़ कर प्रतिभाग करते हुए अपनी प्रतिभा को रंगों और कमल के माध्यम से प्रदर्शित की। भाषण प्रतियोगिता में बीए की छात्रा नंदनी ने पहला स्थान प्राप्त किया, जबकि बीए के छात्र संदीप ने दूसरा तथा बीए की प्रथम वर्ष की छात्रा आंचल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार रंगोली प्रतियोगिता में बीए के छात्र हेमंत ने प्रथम, रचना ने द्वितीय तथा प्रिंसी पटेल ने तृतीय स्थान हासिल किया।

प्रतियोगिता के समस्त विजय प्रतिभागियों को संस्था के चेयरमैन ने स्मृति चिन्ह प्रमाण पत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया। उन्होंने सरदार वल्लभ भाई पटेल के महान जीन चरित्र पर प्रकाश डाला। प्रशासनिक आधिकारी बीके साहू राकेश त्रिपाठी ने विजेता प्रतिभागियों की प्रशंसा करते हुए मिशन शक्ति के तहत नारी सम्मान व सुरक्षा पर अपने विचार व्यक्त किए।

परशुराम-लक्ष्मण संवाद सुनने सुबह तक बैठे रहे लोग

संवाददाता, बेलाताल

अमृत विचार। कस्बे में आदर्श रामलीला मंडल के कलाकारों की चल रही रामलीला में श्रद्धा और उत्साह का अद्भुत संगम देखने को मिला। रामलीला मंच पर परशुराम लक्ष्मण संवाद की लीला का भव्य मंचन किया गया, जिसमें कलाकारों के संवाद और भावपूर्ण अभिनय ने उपस्थित श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सीता स्वयंवर पूर्ण होने के बाद श्रीराम की बारात कस्बे में निकाली गई, जिसमें भक्ति गीतों के अलावा सजाई गई झांकियां आकर्षण का केंद्र रहीं।

रामलीला में राजा जनक दरबार से शुरू हुई लीला देर रात तक संवाद के साथ संपन्न हुई, जिसमें रावण वारासुर के बीच जोशीले प्रसंग सुनने को मिले। विश्वामित्र की आज्ञा पाकर श्रीराम के धनुष तोड़ते ही पूरा पंडाल जय श्रीराम के उद्घोष से गूंज उठा। रामलीला में के मंचन दौरान धनुष तोड़ने के बाद परशुराम क्रोधित हो जाते हैं। लीला में लक्ष्मण ने अपनी वाक्पटुता और व्यंग्य से परशुराम के क्रोध को और भड़काया और फिर भगवान राम ने अपनी शांत वाणी से उन्हें शांत किया। इसके उपरांत माता जानकी के वरमाला डालते समय कलाकारों ने भक्ति गीत सुनाकर दर्शकों का मन मोह लिया। रामलीला में सीता स्वयंवर के बाद कस्बे में श्रीराम जी की बारात निकाली गई, जो प्रमुख मार्गों से होते हुए पुनः रामलीला मैदान में आकर संपन्न हुई। बारात दौरान भक्ति मय गीतों के बीच लोग राम भक्ति में डूबे नजर आए। श्रीराम बारात में जिसमें विभिन्न प्रकार की झांकियों भी सजाई गई, जो आकर्षण का केंद्र रहीं। श्रीराम बारात दौरान भक्तों ने भगवान राम के लगाए गए जयकारों के चलते पूरा वातावरण राममय हो गया। इस मौके पर प्रभु राम की भक्तों ने जगह जगह आरती कर आर्शीवाद प्राप्त किया। रामलीला में ब्यास गद्दी पर पंडित पप्पू मिश्रा ने कथा वाचन कर भक्तों को भावविभोर किया, वहीं ढोलक पर धीरेन्द्र राजा की संगत ने माहौल को और अधिक भक्तिमय बना दिया। रामलीला मंचन के बाद समिति के अध्यक्ष आदित्य तिवारी ने सभी कलाकारों, भक्तों का आभार जताया।

रन फॉर यूनिटी | जिले भर में धूमधाम से मनाई गई सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती

पटेल जयंती पर रैली निकाल कर दिखाई एकता

संवाददाता, कालपी

पटेल जयंती पर रैली निकलते लोग। अमृत विचार

अमृत विचार। सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के अवसर पर सिरसा कलार के जनता इंटर कालेज में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस दौरान एक रैली का भी आयोजन किया गया। इस रैली में पुलिस, प्रधान, समाजसेवी व छात्रों ने भाग लिया।

31 अक्टूबर को लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती मनाते हुए रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया गया। इसमें थाना अध्यक्ष प्रवेन्द्र कुमार सिंह, जिला पंचायत सदस्य अनिल सिंह, जनता इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य मुवीन शेख और छात्र व छात्राओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। रन फॉर यूनिटी के तहत जनता जूनियर हाई स्कूल से जनता इंटर कॉलेज तक एकता दौड़ का आयोजन किया गया। रैली के बाद वहां पर मौजूद वक्ताओं ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला और छात्र-छात्राओं को सरदार पटेल के आदर्शों को चलने का संकल्प दिलाया।

सरदार पटेल के आर्दशों पर चलने का लिया संकल्प : कालपी तथा आसपास के इलाकों में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150 वीं जयंती मनाई गई।

तहसील सभा कक्ष में उपजिलाधिकारी मनोज कुमार सिंह, तहसीलदार अभिनय कुमार तिवारी, नायब तहसीलदारों मुकेश कुमार ,चंद्र मोहन शुक्ला, लेखपालों राजस्व कर्मचारी ने सरदार पटेल के चित्र माल्यार्पण कर उनको याद किया। सुबह 9 बजे एमएसवी इंटर कॉलेज कालपी के परिसर में कोतवाली निरीक्षक अजय ब्रह्म तिवारी, एस एस आई उदय प्रताप सिंह आदि मौजूद रहे।

विद्यालयों व कार्यालयों में पटेल जी को किया याद

कालपी। नगर पालिका में पालिका अध्यक्ष अरविंद यादव की अगुवाई में सभासदों, पालिका कर्मचारी एवं गणमान्य नागरिकों ने सरदार पटेल के चित्र पर माल्यार्पण किया और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान की सराहना की। इसी प्रकार विद्युत कार्यालय में उपखंड अधिकारी धर्मेंद्र सिंह सचान, अवर अभियंता जितेंद्र कुमार, नवीन सचान, अभिषेक धीर, आदि रहे। विभिन्न कार्यालय तथा विद्यालयों में भी कार्यक्रम आयोजित किए गए।

बाइकों की आमने सामने भिड़ंत में 4 लोग हुए घायल

कालपी। शुक्रवार को कालपी उरई राजमार्ग पर आमने-सामने दो बाइकों की जोरदार भिड़ंत हो गई। इस हादसे में 4 लोग गंभीर रूप से घायल हो गये।

उक्त दुर्घटना में घायलों में जितेंद्र कुमार, शिल्पी, गुड्डू व प्रदीप शामिल हैं। सभी लोग अपने गांव से कालपी बाजार करने आ रहे थे। राहगीरों ने घटना की सूचना डायल 112 को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को सीएचसी कालपी पहुंचाया। वहां पर डॉक्टर विशाल सचान की टीम ने घायलों का तुरंत इलाज शुरू किया। डॉक्टरों के अनुसार, एक व्यक्ति को हेड इंजरी व दो को गंभीर चोटें आई हैं। पुलिस ने दोनों वाहनों को कब्जे में लेकर जांच शुरू की।

www.amritvichar.com
पर भी खबरें पढ़ें

छात्राओं को नए कानून की जानकारी दे किया जागरूक

संवाददाता, कालपी जानौन

अमृत विचार। शुक्रवार को शिक्षिकाओं तथा छात्राओं की मौजूदगी में कोतवाली प्रभारी निरीक्षक अजय ब्रह्म तिवारी की अध्यक्षता में एसपी वालिका इंटर कॉलेज कालपी में नए भारत के नए कानून के विषय में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वहां पर मौजूद लोगों को नये कानूनों के बारे में जानकारियां दी गईं।

विद्यालय के परिसर में आयोजित गोष्ठी में वरिष्ठ उपनिरीक्षक उदय प्रताप सिंह ने वहां पर मौजूद छात्राओं और शिक्षिकाओं को नये कानूनों के बारे में विस्तार से बताया। महिला सब इंस्पेक्टर ममतेश कुमारी ने बताया कि महिलाओं के प्रति अपराध पर अब समझौता नहीं होता है बल्कि कठोर से कठोर कार्रवाई होती है। नए कानून के तहत गैंगरेप के मामलों में 20 साल की सजा या आजीवन कारावास की कानून में व्यवस्था की गई है। 18 साल से कम आयु की बच्चियों के दुष्कर्म के मामलों में दोषी को आजीवन कारावास की सजा दी जाएगी। नए कानून में संगठित अपराध के खिलाफ नई कठोर व दंडित धारा बनाई गई है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कोतवाली प्रभारी निरीक्षक अजय ब्रह्म तिवारी ने बताया कि नए भारत के नए कानून में कानून की प्रक्रिया में तेजी आ गई तथा नियमों में सुधार हुआ है। अपराध की सूचना मिलते ही अभियोग पंजीकृत करके तत्काल पुलिस के द्वारा कार्रवाई तेज की गई है।

विषाक्त पदार्थ खाने से बार के पूर्व अध्यक्ष के पुत्र की गई जान

कालपी। कालपी नगर के मोहल्ला कागजीपुरा निवासी बार संघ के पूर्व अध्यक्ष गयादीन अहिरवार के 25 वर्षीय पुत्र ने विषाक्त पदार्थ खाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली है। जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

बार संघ के पूर्व अध्यक्ष गयादीन अहिरवार के 25 वर्षीय पुत्र गौरव ने अज्ञात कारणों के चलते शुक्रवार की सुबह विषाक्त पदार्थ का सेवन कर लिया। जानकारी मिलते ही परिजन उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लेकर पहुंचे। वहां पर मौजूद डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया। उनकी मृत्यु की खबर सुनकर अधिवक्ताओं में शोक की लहर दौड़ गयी। वहीं तमाम सभ्रांत लोग, राजनीतिक लोग व अन्य लोग उन्हें ढांढस बंधाने पहुंचे।

न्यूज ब्रीफ

डॉ. राकेश शाक्या को किया सम्मानित

सीतापुर (चित्रकूट)। श्री सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय जानकीकुंड के वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डा. राकेश शाक्या को यंग ऑप्थल्मोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया ने दिल्ली में द्रोणाचार्य अवॉर्ड से सम्मानित किया। बीते दिन यंग ऑप्थल्मोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया की कार्यशाला में उनको यह सम्मान दिया गया। निदेशक डा. बीके जैन, प्रशासक डा. इलेश जैन आदि ने उनको शुभकामनाएं दीं।

पूर्व सांसद के नाती ने अपनाई सपा

चित्रकूट। बांदा-चित्रकूट लोकसभा से तीन बार सांसद और चार बार विधायक रहे सोनेपुर निवासी स्व. रामसजीवन पटेल के नाती दीपक सिंह पटेल ने लखनऊ जाकर अखिलेश यादव से मिलकर समाजवादी पार्टी की सदस्यता ली। दीपक का कहना है कि युवा नेता अखिलेश की सोच आज के युवाओं से मिलती है जब सरकार में थे तो काफी योजनाएं चित्रकूट को दी लेकिन आज भी उन योजनाओं को मौजूदा सरकार साकार तक नहीं कर पाई।

लावारिस वाहनों की नीलामी की गई

चित्रकूट। थाना भरतकूप परिसर में शुक्रवार को लावारिस वाहनों की नीलामी की गई। इस दौरान सीओ, एसओ और नायब तहसीलदार मौजूद रहे। नीलामी के दौरान 16 बाइकों की बोली लगाई गई। ठेकेदार दिनेश कुमार ने सबसे ज्यादा बोली लगाई।

तीन नवंबर को होगी दिशा की बैठक

चित्रकूट। मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर ने बताया कि जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक तीन नवंबर को कलेक्ट्रेट सभागार में होगी। इसकी अध्यक्षता सांसद कृष्णा देवी शिवशंकर पटेल करेंगी। उन्होंने संबंधित अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों से बैठक में प्रतिभाग करने का अनुरोध किया है।

पुलिस ने परिवार को टूटने से बचाया

चित्रकूट। परिवार परामर्श केंद्र में पति-पत्नी में सुलह कराई गई। रेखा देवी पत्नी छेदीलाल निवासी रैपुरा ने पुलिस अधीक्षक से पति के शराब पीकर गालीगलौज, मारपीट करने की शिकायत की थी। एसपी ने मामले के निस्तारण के लिए प्रभारी परिवार परामर्श केंद्र को निर्देशित किया था। प्रभारी रंजना तिवारी, मुख्य आरक्षी रजनी सिंह, आरक्षी सोनिका द्विवेदी ने दोनों पक्षों को केंद्र बुलाकर समझाया। दोनों पारिवारिक सामंजस्य बनाकर रहने पर राजी हो गए।

आज मनेगी संत शिरोमणि नामदेव महाराज की जयंती

सीतापुर (चित्रकूट)। संत शिरोमणि नामदेव महाराज की जयंती आज तीर्थक्षेत्र स्थित नामदेव दर्जी समाज धर्मशाला में मनाई जाएगी। यह जानकारी धर्मशाला समिति के अध्यक्ष अशोक नामदेव व प्रबंधक राकेश नामदेव ने दी। बताया कि सुबह नौ बजे हवन पूजन व भजन-कीर्तन होगा। दोपहर बारह बजे से भोजन प्रसाद वितरण किया जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि लक्ष्मण सिंह पटेल होंगे। बताया कि बांदा, हमीरपुर, फतेहपुर, कौशांबी, महोबा, प्रयागराज सहित मध्यप्रदेश के सतना, रीवा, मैहर से स्वजातीय बंधुओं की उपस्थिति रहेगी।

लहलहाती धान की फसल पर बारिश ने फेरा पानी

कहीं खड़ी फसल हुई बर्बाद तो कहीं कटी फसल हुई गीली, लगभग पक चुकी धान और बाजरा की फसल हुई बर्बाद

संवाददाता मऊ चित्रकूट

अमृत विचार। प्रकृति ने एक बार फिर किसान को दगा दे दिया। तीन दिन से लगातार हो रही बारिश ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया। लगभग पक चुके धान और बाजरा की फसल को बर्बाद कर दिया। कई जगहों पर तो खेत में पड़ी फसल कट नहीं पाई थी, जिससे अगली फसल बोने का समय भी निकला जा रहा है।

बुधवार से लगातार हो रही बारिश ने किसानों को मुश्किल में डाल दिया। जिस फसल को दिन रात जागकर मेहनत से तैयार किया। उसी फसल को बेमौसम बरसात ने पूरी से बर्बाद कर दिया। जैसे ही धान-बाजरा कटने की बारी आई, बारिश आफत बनकर टूट पड़ी। बाजरे की कतराई के लिए अधिकतर किसान तैयारी कर रहे थे। लगभग सभी किसानों की फसलें अभी खेत में ही खड़ी है। किसान फसल की कतराई करते कि इससे पहले ही बारिश ने बर्बाद कर दी। खेत में खड़ी और कई जगहों पर कटी इकट्ठा धान और बाजरा की फसलें पानी में भीग गई हैं। वहीं किसानों का कहना है कि दाना काला पड़ने की आशंका है। मऊ क्षेत्र सहित समूचा तिरहार, बरगढ़, रामनगर, राजापुर, सरधुआ, पहाड़ी आदि के साथ मुख्यालय के किसान प्रभावित हुए हैं।

सरकार से की मुआवजे की मांग: फसलों को खराब होता देख अन्नदाताओं की आंखें भर आईं। किसान बरबस अपनी फसलों को देख इंद्रदेव से बारिश बंद करने गुहार लगाता रहा। मऊ के किसान लाला भार्गव, रामकृष्ण बाजपेई, राममूरत यादव, अर्पित बाजपेई, अमित मिश्रा, अंशू यादव, मुन्ना लंबरदार, नोक्के लंबरदार, बसंत पांडेय, राकेश निषाद आदि बारिश से बेहद परेशान हैं। क्षेत्र के किसानों ने मुआवजा दिलाए जाने की मांग की है।

तिरहार के किसानों को आपदा की दोहरी मार: मऊ क्षेत्र में यमुना नदी के किनारे में जिन किसानों के खेत हैं, प्रकृति की उन्हें दोहरी मार पड़ी है। पहले शकरकंद आदि बोते ही यमुना की बाढ़ ने फसल को चौपट कर दिया अब जैसे तैसे करके खरीफ की फसल बोई तो बारिश ने सत्यानाश कर दिया।

खेत में गिरी पड़ी धान की फसल। अमृत विचार

आंकड़ों की नजर में

- जिले में कुल किसानों की संख्या 2,16,000 बताई जाती है। इनमें से 1,27,736 (71.44 प्रतिशत) किसान सीमांत हैं, जो जिले के 27.35 प्रतिशत क्षेत्र को कवर करते हैं। छोटे श्रेणी के किसानों की संख्या 29,620 (16.57 फीसदी) है, जो जिले के 22.27 फीसदी क्षेत्र को कवर करते हैं। 75 हजार किसान बंटाई पर खेती करते हैं। जिले में कृषि योग्य कुल क्षेत्रफल 3,38,897 हेक्टेयर बताया जाता है। इसमें से 1,82,329 हेक्टेयर सकल फसली क्षेत्र में शामिल है। जबकि 1,56,532 हेक्टेयर में खेती की जाती है। केवल 25,797 हेक्टेयर क्षेत्र में एक साल में एक से अधिक बार फसलों की बुवाई की जाती है। वहीं, पूरी तरह से कुल सिंचित क्षेत्र 86,041 हेक्टेयर बताया जाता है।

24 बीघे धान की फसल बर्बाद : अमित

मऊ तहसील अंतर्गत उफ़रौली के किसान अमित मिश्रा बताते हैं कि उनकी 24 बीघे की धान की फसल बर्बाद हो गई है। लागत निकल आए यही बहुत बड़ी बात है। अब तो बस भगवान का ही सहारा है।

खेती में हुआ लाखों का नुकसान : अंकित

खपटिहा के किसान अंकित द्विवेदी ने बताया कि इस बार उन्होंने काफी क्षेत्र में धान लगवाया था। लगभग 35 बीघा की फसल इस बारिश में खराब हो चुकी है। खेती में लाखों का नुकसान हो चुका है।

प्रकृति ने दी दोहरी मार : अर्पित

तिरहार के युवा किसान अर्पित बाजपेई बताते हैं कि बड़ी मेहनत से बाजरे की बुआई करवाई थी। बारिश ने पूरी फसल चौपट कर दी है। अभी बाढ़ से खराब फसल का मुआवजा भी नहीं मिला। प्रकृति की दोहरी मार से परेशान हैं।

अधिकारियों का यह है कहना

"बारिश से खड़ी फसलों को कम नुकसान हुआ है। जिन फसलों को काट दिया गया हैं, उन्हें अधिक नुकसान हुआ है। ग्राम पंचायतवार फसलों के नुकसान का सर्वे कराया जा रहा है। सर्वे बाद ही नुकसान की पूरी जानकारी दी जा सकेगी।

– जिला कृषि अधिकारी आरपी शुक्ला

"नुकसान का सर्वे कराया जा रहा है। यदि बारिश से नुकसान 33 प्रतिशत हुआ तभी नियमत: मुआवजा दिए जाने का प्रावधान है।

– एसडीएम मऊ रामऋषि रमन

"बारिश हल्की थी, अभी तक फसल को बड़ा नुकसान नहीं हुआ है। जिन किसानों ने खेत में कटी हुई फसल रखी थी, वहां थोड़ा नुकसान संभव है लेकिन अभी घबराने की जरूरत नहीं है।

– कृषि उप निदेशक राजकुमार

तिरंगा फहराते समय करंट लगने से छात्र के हाथ झुलसे

चित्रकूट। सदर ब्लॉक कर्वी की ग्राम पंचायत कालूपुर पाही के प्राथमिक विद्यालय कुम्हारनपुरवा मंन तिरंगा फहराते हुए एक छात्र के करंट लगने की खबर है। बताया जाता है कि कक्षा पांच के छात्र अंशू राजपूत को तिरंगा फहराते समय करंट लग गया, जिससे उसके दोनों हाथ झुलस गए। यह हादसा राष्ट्रीय एकता दिवस के कार्यक्रम के दौरान हुआ।

जानकारी के अनुसार, विद्यालय परिसर में झंडा फहराने के लिए बच्चे को स्टील रॉड में लगा तिरंगा झंडा पकड़ने को दिया गया। जैसे ही छात्र झंडा फहराने लगा, स्टील की राड ऊपर से निकले तार से छू गई। इससे छात्र जमीन पर गिर पड़ा और उसके दोनों हाथ झुलस गए। आरोप है कि हादसे के बाद भी शिक्षकों ने लापरवाही बरती। उन्होंने केवल परिजनों को सूचना देकर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर ली। बाद में परिजन मौके पर पहुंचे और बच्चे को अस्पताल ले जाकर इलाज कराया। हालांकि इस संबंध में न तो स्कूल के शिक्षक और न कोई अन्य कुछ भी बोलने को तैयार था। बीएसए और बीईओ को भी घटना की जानकारी के लिए कई बार फोन लगाया गया पर उन्होंने काल रिसीव नहीं की। ग्रामीणों और अभिभावकों ने बीएसए से मांग की कि इस मामले की निष्पक्ष जांच की जाये।

खेत में पलटी पड़ी फसल। अमृत विचार

बरगढ़ में भी फसल पानी पानी, किसान परेशान

संवाददाता, बरगढ़ चित्रकूट

अमृत विचार। बरगढ़ क्षेत्र में भी लगातार तेज बारिश ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया। बीते दो दिन बरसात इतनी ज्यादा हुई कि बरगढ़ सहित तमाम गांव- मजरों की खेती किसानी में इसका सीधा प्रभाव पड़ा।

ग्राम पंचायत गाहुर में लगभग 50 बीघे से ज्यादा धान की फसल नष्ट होने पर किसानों ने उप जिलाधिकारी को पत्र लिखकर मुआवजे की मांग की है। किसानों का कहना है कि कानूनगो और लेखपालों का रवैया किसान विरोधी है। गांव के निवासी कैलाश चंद्र शुक्ला ने बताया कि उनकी लगभग चार बीघे की फसल नष्ट हो गई। गाहुर निवासी रघुनंदन तिवारी ने निराशा में बताया कि लगभग 10 बीघा फसल जलमग्न हो गई है। धर्मेंद्र शुक्ला निवासी गाहुर ने बताया कि उन्होंने एसडीएम मऊ राम ऋषि रमन को बारिश से होने वाले नुकसान के बारे में बताया है। एसडीएम ने किसानों को सांत्वना दी। उधर, लेखपाल शिवविलास ने बताया कि फसल का बीमा होना अनिवार्य होता है। फिर भी जांच कर रिपोर्ट भेज दी जाएगी। किसानों का कहना था कि लेखपाल का रवैया इससे ही साफ दिख रहा था कि उसका कहना था कि इतना पानी तो नहीं बरसा कि धान की फसल पानी में डूब जाए।

धर्मेंद्र शुक्ला अमृत विचार

रघुनंदन तिवारी। अमृत विचार

www.amritvichar.com पर भी खबरें पढ़ें

जयंती पर सरदार वल्लभ भाई पटेल को किया याद

कार्यालय संवाददाता चित्रकूट

अमृत विचार। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती एकता दिवस पर जिले में विभिन्न कार्यक्रम हुए। रन फॉर यूनिटी (एकता दौड़) का आयोजन किया गया। गोष्ठियों में लौह पुरुष के बताए रास्ते पर चलने और देश की एकता और अखंडता का संकल्प लिया गया।

विधान परिषद सदस्य अनूप गुप्ता ने पटेल तिराहे से रन फार यूनिटी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव सहित अन्य जनप्रतिनिधि और अधिकारी मौजूद रहे। अनूप गुप्ता ने एकता और अखंडता की शपथ दिलाई। कार्यक्रम की शुरुआत सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके की गई। यात्रा ट्रैफिक चौराहा, एलआईसी तिराहे होते हुए वापस पटेल तिराहे पहुंची। दौड़ में चित्रकूट इंटर कालेज एनसीसी के कैडेट, जेएम पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी, पीआरडी स्वयंसेवकों के साथ पुलिस अधिकारियों, कर्मचारियों, स्वयंसेवी संस्थाओं के लोगों और आम नागरिकों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। उधर, राष्ट्रीय एकता दिवस पर राजकीय संप्रेक्षण गृह (किशोर) में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने सरदार पटेल के व्यक्तित्व और कृतित्व को बताया। संचालन योगाचार्य संजय कुमार ने किया।

रन फार यूनिटी में शामिल एनसीसी कैडेट। अमृत विचार

एकता और अखंडता की शपथ दिलातीं मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर।

तुलसीतीर्थ में भी मनाई गई सरदार पटेल की जयंती

राजापुर। तुलसीतीर्थ में सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस मौके पर नगर पंचायत अध्यक्ष संजीव मिश्रा ने स्वतंत्रता आंदोलन में पटेल जी की भूमिका को याद किया। तहसील सभागार में उप जिलाधिकारी फूलचंद यादव ने सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। तहसीलदार भारत प्रताप सिंह ने कहा कि सरदार पटेल ने भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया था। इस दौरान सभासद मंगल पांडेय, चमन रैकवार, ऊदल और सभासद राजेश तिवारी, पवन तिवारी, मोनू मोदनवाल, गौरव द्विवेदी, अमित गुप्ता, राहुल चौरसिया, शिवविजय सिंह आदि रहे।

एकता दौड़ में लोगों ने बढ़चढ़ कर लिया भाग

मऊ। लौह पुरुष की जयंती पर मऊ में भी एकता दौड़ का आयोजन किया गया। इसमें क्षेत्राधिकारी फहद अली, प्रभारी निरीक्षक दुर्गविजय सिंह की अगुवाई में पुलिसकर्मियों और डिग्री कालेज के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। यह दौड़ मऊ पावर हाउस के पास से शुरू होकर शिवपुर तिराहे के पास तक गई और फिर वापस थाने पर आकर समाप्त हुई। थाना परिसर में सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। क्षेत्राधिकारी और प्रभारी निरीक्षक ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। इस दौरान महामति प्राणनाथ महाविद्यालय के प्रो. डॉ. एस कुरील, क्राइम इंस्पेक्टर अंजनी कुमार सिंह, कस्बा इंचार्ज बीएन सिंह, एसआई अनूप शुक्ला रहे।

कार्यालय नगर पंचायत मानिकपुर, सरहट चित्रकूट

पत्रांक: 623/न0पं0मा0/2025-26 दिनांक: 31/10/2025

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्रकाशित सूची के कॉलम नं0-2 में आवेदक द्वारा भवन के नामान्तरण के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है, नगर पालिका अधिनियम 1916 की धारा 147 (1) के अन्तर्गत दी गयी व्यवस्था के अनुसार नामान्तरण हेतु प्रस्तुत भवन पर नामान्तरण के सम्बन्ध में यदि किसी पक्ष को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन से 30 दिन के अन्दर अपनी आपत्ति मय साक्ष्यों सहित नगर पंचायत मानिकपुर सरहट कार्यालय में आकर लिखित रूप से प्राप्त करा दें। यदि निर्धारित अवधि के अन्दर सम्बन्धित पक्ष की कोई प्रमाणित साक्ष्य सहित आपत्ति प्राप्त नहीं होती है तो यह समझा जायेगा कि किसी भी पक्षकर को उक्त भवन पर नामान्तरण के सम्बन्ध में कोई आपत्ति नहीं है। तदानुसार नगर पंचायत द्वारा उक्त भवन पर नामान्तरण की कार्यवाही सम्पन्न कर दी जायेगी।

नामान्तरण प्रकाशन सूची

क्र0 सं0	नामान्तरण के लिये प्रार्थी आवेदक का नाम	भवन सं0 एवं मोहल्ला	नगर पंचायत अभिलेखों में दर्ज भवन स्वामी/अध्यासी का नाम	आधार
1	श्रीमती सुनीता पत्नी स्व0 मुराली निवासी- आर्य नगर मानिकपुर	भवन सं0- 131/1 वार्ड नं0 10 आर्य नगर	श्रीमती किरन पत्नी महराज सिंह	रजिस्ट्री बैनामा

अधिशाषी अधिकारी
नगर पंचायत मानिकपुर, सरहट

ग्राम पंचायत कोटरा खांभा विकास खण्ड मऊ (जनपद-चित्रकूट)

पत्र संख्या: 2025-2026 **अल्पकालीन निविदा सूचना** दिनांक 01.11.2025

मनरेगा के अंतर्गत ग्राम पंचायत कोटरा खांभा में निम्नांकित कार्यो की सामग्री की आपूर्ति हेतु पंजीकृत आपूर्तिकर्ता से दिनांक 01.11.2025 से दिनांक 07.11.2025 अपराहन 1 बजे तक मुहरबंद निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। जो कि उसी दिन अपराहन दो बजे अथवा उनके प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र की बिक्री दिनांक 01.11.2025 से 07.11.2025 तक ग्राम पंचायत कोटरा खांभा से प्राप्त की जायेगी जो ग्राम पंचायत के किसी भी कार्य दिवस में निर्धारित शुल्क अदा करके प्राप्त की जा सकती है।

क्र.सं.	कार्य का नाम	सामग्री का मूल्य	धरोहर धनराशि	निविदा मूल्य
1.	कोटरा खांभा में पिपरी पुरवा में कमलेश के घर से अरुण के घर की ओर इंटरलॉकिंग खण्डजा का निर्माण कार्य	9.94 लाख	2 प्रति.	500
2.	कोटरा खांभा में रामसमुंदर के घर से प्रा0 वि0 की ओर इंटरलॉकिंग खण्डजा का निर्माण कार्य	9.93 लाख	2 प्रति.	500

निविदा शर्ते : किसी भी कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय में देखी जा सकती है।

ग्राम पंचायत सचिव/ ग्राम पंचायत कोटरा खांभा
प्रधान ग्राम पंचायत कोटरा खांभा मऊ-चित्रकूट

अभियान

बैठक में संगठन के कार्यों के बारे में विस्तार से बताया

लोगों को योजनाओं का दिलाएंगे लाभ : दयाराम

कार्यालय संवाददाता चित्रकूट

- आदर्श मिश्रा को प्रदेश में संगठन मंत्री का दायित्व सौंपा गया

अमृत विचार। पंचायती राज ग्राम प्रधान संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दयाराम ने कहा कि संघ की प्रतिबद्धता है कि कोई भी व्यक्ति देश में भूखा न रहे और गांवों में लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिले। साथ ही उन्होंने कहा कि हमारा पूरा प्रयास होगा कि सरकारी योजनाओं का लाभ सही व्यक्ति को सही समय पर मिले ताकि वह उसका सदुपयोग कर सके।

दयाराम ने शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी के सह जिला मीडिया प्रभारी अर्पित जायसवाल के आवास में संगठन की बैठक में बताया कि संगठन ने तमाम महत्वपूर्ण कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं। सरकार की विकासपरक योजनाओं और लाभकारी योजनाओं का लाभ पात्रों को दिलाने में सहयोग करना ही संगठन का मुख्य उद्देश्य है। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार मिश्रा ने घुनुवा निवासी आदर्श मिश्रा को प्रदेश कार्यकारिणी में संगठन मंत्री के मनोनयन का पत्र सौंपा। इस मौके पर पूर्व विधायक आनंद शुक्ला, भाजपा जिला महामंत्री राजेश जायसवाल, विकास मिश्रा दीपू सहित अन्य भाजपाई और ग्राम प्रधान मौजूद रहे।

www.amritvichar.com पर भी खबरें पढ़ें

आदर्श मिश्रा को मनोनयन पत्र सौंपते प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार। अमृत विचार

अमृत विचार क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

वर्गीकृत विज्ञापन हेतु अमृत विचार अखबार के कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

मैं कृष्ण कुमार पुत्र शिव भवन निवासी ग्राम/पोस्ट, दुधवन थाना सरेनी, तहसील लालगंज, जिला रायबरेली उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूं। मेरे अंकतालिका में नाम कृष्ण अंकित है। जबकि समस्त अभिलेखों में कृष्ण कुमार अंकित है. जो सत्य और सही है। कृष्ण कुमार और कृष्ण दोनो नाम एक ही व्यक्ति के है

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा नाम MOHAMMAD ZAID था जिसे बदलकर मैने MOHAMMAD JAID कर लिया है दोनो नाम एक ही व्यक्ति के हैं अत: भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जायें। पता- हसनगंज नीम टीकर बछरावां जिला रायबरेली, मो. 9793241420

सूचना

पहले मेरा नाम BHAGYA SHREE था से बदलकर BHAGYA SHREE BHADAURIA रख लिया है। अब इसी मुझे BHAGYA SHREE BHADAURIA के नाम से जाना व पहचाना जाये। D/0-RAVI RANJAN SINGH BHADAURIA ADD-B-116 INDIRA NAGAR PS-GHAZIPUR DIST-LUCKNOW-226016 (U.P.)

सूचना

मैं जय सिंह पुत्र बलदेव प्रसाद निवासी ग्राम बसेन हास बरौली थाना बेनीगंज तहसील व जिला हरदोई का हूँ ,मेरे शैक्षिक व अन्य अभिलेख वास्तव में कही गिरकर खो गये है।

सूचना

सूचित हो कि मेरा हाई स्कूल का अंक प्रमाण पत्र वर्ष 2013 रोल नंबर 2828558 है राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय विश्वंभरपुर धानेपुर गोंडा का वास्तव में खो गया है। जिसकी द्वितीय प्रति लेनी है। उषा गौतम पुत्री कामता प्रसाद निवासी ग्राम बुढ़वलिया थाना करनैलगंज जिला गोंडा

सूचना

मैं इसरार अहमद खान पुत्र मो0 निसार अहमद खान निवासी म0नं0 5921/264 रथीन्द्र नगर, तेलीबाग, लखनऊ, उ0प्र0 (226029) मेरे पुत्र का नाम मो0 अयाज़ खान है, जिसकी जन्म तिथि 11.10.2015 है। मेरे पुत्र के शैक्षणिक अभिलेखों में मेरे पुत्र का नाम हनी खान त्रुटिवश अकित हो गया है, जबकि आधार कार्ड व अन्य अभिलेखों में मेरे पुत्र का नाम मो0 अयाज खान है, जो कि सत्य व सही है। अत: मेरे पुत्र के शैक्षणिक अभिलेखों में पुत्र का नाम नाम मो0 अयाज खान अंकित किया जाय।

सूचना

मैने अपने पुत्र सौरभ, उसकी पत्नी प्रांशी से उसके गलत क्रिया कलापों के कारण सम्बन्ध विच्छेद कर लिए है। भविष्य में उसके द्वारा किए गए लेनदेन व गलत कार्यो का मेरा व मेरे परिवार से कोई लेना-देना नहीं होगा। दोनों लड़ते झगड़ते, आपस में मारपीट भी करते हैं। श्रीमती कस्तूरी पत्नी श्याम सिंह, निवासी गंगारामपुर, थाना/कस्बा मल्लावां, जिला हरदोई

सूचना

मैं आरती यादव पुत्री भोलानाथ यादव, निवासी- पूरे पितई हाजीपुर परसदेपुर जिला रायबरेली पिन कोड 229129 उ0प्र0, मेरा हाई स्कूल जिसका रोल नं 1841634 व प्रमाण पत्र सं 055599 वर्ष 2018 तथा इन्टरमीडिएट रोल नं 1337406 व प्रमाण पत्र 54028983 परीक्षा वर्ष 2020 में उर्त्तीण किया है जिसका अंक पत्र/ प्रमाण पत्र वास्तव में कहीं खो गया है।

सूचना

सर्व साधारण सूचित किया जाता है कि मैं मो. इब्राहिम,MO. IBRAHIM, तेलियागढ गोशाईगंज ,पोस्ट गोशाईगंज जिला- अयोध्या का निवासी हूँ। मेरे पासपोर्ट सं0-P6943001 FILE NO-LK3060575715217 में मेरा नाम मो. इब्राहिम, MO.IBRAHIM है। जो कि अंग्रेजी में MOHD IBRAHIM और हिन्दी मोहम्मद इब्राहिम लिखा है। जो कि गलत है। मेरा सही नाम MO.IBRAHIM, मो. इब्राहिम इस तरह से लिखा व पढ़ा तथा जाना जाए एवं पासपोर्ट में सही दर्ज किया जाए।

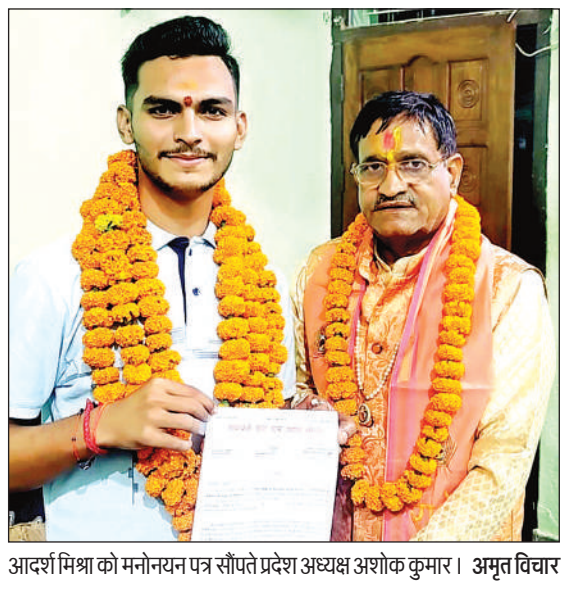

अमृत विचार

शनिवार, 1 नवंबर 2025

झूठे ज्ञान से खबरदार रहिए, यह अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक है।
–जार्ज बर्नाड शॉ, आइरिश नाटककार

विश्व वर्चस्व की दहलीज

भारतीय महिला क्रिकेट टीम द्वारा सात बार की विश्व चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया को हराना महज एक मैच की जीत नहीं, बल्कि अपने क्षेत्र में युगांतरकारी घटना है। कौशल तथा तकनीकी दृष्टि से कठिन यह मुकाबला हार की हैट्रिक लगा कर आ रही भारतीय टीम की मानसिक मजबूती और उसके समन्वय का कड़ा इम्तिहान था। यह मैच फाइनल से भी ज्यादा चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि पिछले दस वर्षों में खेले गए अंतर्राष्ट्रीय मुकाबलों में 75 प्रतिशत से अधिक जीत प्रतिशत बनाए रखने वाली ऑस्ट्रेलिया को हराना, महिला क्रिकेट में लगभग 'असंभव' माना जाता है। हालांकि यह भारत ही है, जिसने उसे कई बार टक्कर दी है और विश्व कप के सेमीफाइनल में पहले भी हराया है।

2022 के कॉमनवेल्थ गेम्स के फाइनल में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को अंतिम ओवर तक चुनौती दी थी, जबकि 2023 की बाइलैटरल सीरीज में भारत ने उन्हें सुपर ओवर में हराकर इतिहास रचा था। इस विजय से साफ है कि भारतीय महिला क्रिकेट ने खुद को दुनिया की शीर्ष चार टीमों, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका की कतार में दृढ़ता से स्थापित कर लिया है। भारतीय टीम केवल प्रतिस्पर्धी नहीं, विजेता मानसिकता वाली टीम बन चुकी है। भारत ने पिछले पांच वर्षों में टी-20 और वनडे दोनों प्रारूपों में लगभग 63 प्रतिशत मुकाबले जीते हैं। यह किसी भी उभरती क्रिकेट शक्ति के लिए शानदार रिकॉर्ड है। बल्लेबाजी में निरंतर सुधार इसका सबसे बड़ा आधार है। नमूने के बतौर स्मृति मंधाना ने पिछले 24 महीनों में 42.7 के औसत से रन बनाए हैं और स्ट्राइक रेट 130 से ऊपर रखा है। हरमनप्रीत महिला क्रिकेट इतिहास की सर्वश्रेष्ठ बैटर में शुमार हैं। जेमिमा ने अभी शानदार शतक बनाया, तो शेफाली वर्मा और रिचा घोष जैसी निरंतर आक्रामकता महिला क्रिकेट में दुर्लभ है। गेंदबाजी में भी भारत ने प्रभावी प्रगति की है। रेनुका सिंह ठाकुर, दीप्ति शर्मा ने इस क्षेत्र में कई कीर्तिमानी कारनामे अंजाम दिए हैं, हालांकि 'डेथ ओवर्स' की गेंदबाजी और स्पिन विकल्पों में और गहराई लाने की ज़रूरत है।

कई बार शुरुआती सफलता को हमारे गेंदबाजों ने अपने भोथरे आक्रमण से गंवा दिया है। फिलहाल टीम की सबसे बड़ी चुनौती निचले क्रम की बैटिंग और फील्डिंग है। निचले क्रम की बैटर्स का औसत सिर्फ 11.2 रन प्रति खिलाड़ी है, जो ऑस्ट्रेलिया की 17.6 और इंग्लैंड की 15.8 से बहुत पीछे है। हमारा कैच ड्रॉप प्रतिशत 12 के आसपास है। संसार की ऊपरी पायदान वाली टीमों में सबसे अधिक। इन दोनों क्षेत्रों में सुधार अत्यंत आवश्यक है, हालांकि इधर यह टीम न केवल खेल तकनीकी बल्कि मानसिक दृढ़ता में भी मजबूत हुई है। यह वही आत्मविश्वास है, जिसने ऑस्ट्रेलिया जैसी अजेय टीम को किस्मत से नहीं बाकायदा अपने खेल से मात दी। इसे देख लगता है भारतीय महिला टीम क्रिकेट के स्वर्ण युग की दहलीज पर है। बल्लेबाजी की निरंतरता, गेंदबाजी की धार और फील्डिंग की सटीकता को संयम और समन्वय के साथ बरकरार रखा गया, तो वह निकट भविष्य में ऐसी टीम बन सकती है, जिसे क्रिकेट के तीनों प्रारूपों- टेस्ट, वनडे और टी-20 में हराना लगभग असंभव होगा।

प्रसंगवश

हलाल सर्टिफिकेशन का समाजशास्त्र

उत्तर प्रदेश में हलाल सर्टिफिकेशन एक बार फिर चर्चा में है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य में हलाल-प्रमाणित उत्पादों की बिक्री और खरीद पर हाल ही में लगे प्रतिबंध का पुरजोर बचाव किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसे प्रमाणन से जुटाई गई राशि का आतंकवाद, लव जिहाद और धर्मांतरण के लिए दुरुपयोग किया जा रहा था। आरएसएस शताब्दी समारोह में बोलते हुए, आदित्यनाथ ने कहा कि हलाल प्रमाणन सरकारी नियंत्रण से बाहर एक समानांतर, अनियंत्रित प्रणाली बन गई थी। यूपी में हलाल सर्टिफिकेशन को पूरी तरह बंद कर दिया गया है। मुख्यमंत्री के बयान के बाद हलाला सर्टिफिकेट पर राजनीति गरमा गई है।

रोहित माहेश्वरी
स्वतंत्र पत्रकार

ज्ञात हो कि नवंबर 2023 में उत्तर प्रदेश सरकार ने एक अधिसूचना जारी कर हलाल प्रमाणन वाले खाद्य उत्पादों के उत्पादन, भंडारण, वितरण और बिक्री पर रोक लगा दी थी, जबकि निर्यात के लिए निर्मित उत्पादों को छूट दी गई थी। हलाल सर्टिफिकेशन के खिलाफ लखनऊ में देश का पहला केस दर्ज किया गया था। इसमें चार के खिलाफ चार्जशीट भी दाखिल की गई थी। हलाल एक अरबी शब्द है, जिसका अर्थ होता है वैध या अनुमति प्राप्त। आमतौर पर यह शब्द मांस के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। इस्लामिक मान्यताओं के अनुसार, हलाल तरीके से मांस तैयार करने में जानवर को झटके से नहीं काटा जाता, बल्कि धीरे-धीरे उसकी गर्दन से खून निकाला जाता है। इससे शरीर में ब्लड क्लॉटिंग नहीं होती और पूरा खून बाहर निकल जाता है।

ऐसे मांस को इस्लाम में 'जिबह' करना कहा जाता है और इसी मांस को खाना जायज माना गया है, हालांकि अब हलाल शब्द सिर्फ मांस तक सीमित नहीं रहा। आजकल खाने-पीने, कॉस्मेटिक और दवाओं तक में यह सर्टिफिकेशन दिया जाता है, ताकि यह साबित हो सके कि उनमें कोई हराम तत्व (वर्जित चीज) नहीं है। यानी कि हलाल सर्टिफिकेशन एक तरह का 'पवित्रता प्रमाणपत्र' है, जो बताता है कि उत्पाद इस्लामिक मान्यताओं के अनुरूप है और सभी धर्मों के लोग इसे बेझिझक इस्तेमाल कर सकते हैं। मुस्लिम धर्म गुरुओं के अनुसार, हलाल सर्टिफिकेशन सिर्फ मांस ही नहीं, बल्कि खाने-पीने, दवाओं और कॉस्मेटिक उत्पादों से भी जुड़ा है।

भारत में हलाल सर्टिफिकेशन अनिवार्य नहीं है, बल्कि यह एक स्वैच्छिक प्रक्रिया है। यानी खाद्य निर्माता को इसे लेना आवश्यक नहीं है। भारत में हलाल सर्टिफिकेशन को सरकार द्वारा राष्ट्रीय मानक के रूप में नियंत्रित नहीं किया गया है। भारत में हलाल सर्टिफिकेट जारी करने का कोई सरकारी तंत्र नहीं है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) केवल खाद्य सुरक्षा से संबंधित मानक तय करता है, लेकिन हलाल सर्टिफिकेट नहीं देता। देश में 'हलाल सर्टिफिकेशन' की सिर्फ चार संस्थाएं हैं। चारों इस्लामी हैं। भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय ने ही इन निजी संस्थाओं को 'हलाल सर्टिफिकेशन' के लिए अधिकृत किया है।

आरोप है कि कई कंपनियां बिना जांच के पैसे देकर सर्टिफिकेट हासिल कर लेती हैं। उत्तर प्रदेश में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जहां फर्जी हलाल सर्टिफिकेशन के जरिए लोगों को गुमराह किया गया। सरकार ने इस पर सख्त रुख अपनाते हुए इसे प्रतिबंधित करने का निर्णय लिया। इस सर्टिफिकेशन का चलन 1974 में मांस के लिए ही हुआ था, लेकिन 1993 में अन्य उत्पादों पर भी लागू कर दिया गया। अब दूध, दही, पनीर जैसे डेयरी उत्पाद, बिस्कुट, चिप्स, कोल्ड ड्रिंक, मसाले, तेल सरीखे शाकाहारी उत्पाद, फलियां, मेवे, अनाज और चीनी आदि भी 'हलाल सर्टिफिकेशन' के दायरे में हैं।

सांसों पर छाई सर्दियों की जहरीली चादर

राजेश श्रीनेत
वरिष्ठ पत्रकार

भारत में सर्दियों का मौसम भले ही राहत और ठंडक लेकर आता हो, पर यही मौसम हमारे शहरों की हवा को सबसे ज़्यादा जहरीला बना देता है। दिसंबर और जनवरी के महीनों में दिल्ली, लखनऊ, पटना, कानपुर और कोलकाता जैसे शहरों का आसमान धुंध और धुएं से ढक जाता है। सुबह की ठंडी हवा अब ताजगी नहीं देती, बल्कि गले में जलन और आंखों में चुभन छोड़ती है। लोग जब मास्क लगाकर सड़क पर निकलते हैं, तो यह सिर्फ संक्रमण से बचाव के लिए नहीं, बल्कि सांस लेने लायक हवा की कमी से बचने का प्रयास भी है। सवाल यह है कि आखिर सर्दियों में हवा इतनी खराब क्यों हो जाती है और इसे कैसे समझा जाए।

हाल ही में वैज्ञानिकों ने भारत की सर्दियों की वायु गुणवत्ता को गहराई से समझने की कोशिश की। उन्होंने एक उन्नत वायुमंडलीय मॉडल का प्रयोग किया, जो हवा में मौजूद गैसों और कणों की गति, मिश्रण और रासायनिक बदलावों को समझने में मदद करता है। इस अध्ययन में पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को बारह गुणा बारह किलोमीटर के छोटे हिस्सों में बांटकर यह देखा गया कि प्रदूषक किस तरह फैलते हैं और किस इलाके में जमा हो जाते हैं। अध्ययन 2015-16 की सर्दियों में किया गया, जब कई हिस्सों में वायु प्रदूषण चरम पर था।

वैज्ञानिकों ने गैसों और धूल-कणों की रासायनिक प्रक्रिया को समझने के लिए विशेष गणनाएं कीं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध आंकड़ों को भारत की स्थिति के अनुसार बदला, ताकि परिणाम यथार्थ के करीब हों। अध्ययन से यह पता चला कि सर्दियों में महीन कणों, कालिख, नाइट्रोजन यौगिकों, गंधक और अन्य गैसों का उत्सर्जन कई गुना बढ़ जाता है। ठंडी और स्थिर हवा इन प्रदूषकों को ऊपर उठने नहीं देती, इसलिए वे जमीन के पास फंसे रहते हैं और हवा को दूषित करते हैं।

अध्ययन में दिल्ली, अहमदाबाद, बेंगलूरु, चेन्नई, आगरा, लखनऊ, पटना, मुंबई, कोलकाता और हैदराबाद जैसे दस प्रमुख शहरों के निगरानी आंकड़ों की तुलना मॉडल के परिणामों से की गई। नतीजे बताते हैं कि वैज्ञानिक मॉडल ने महीन कणों की मात्रा का अनुमान काफी सटीक लगाया। नाइट्रोजन डाईऑक्साइड की सांद्रता भी ठीक तरह से आंकी गई। कार्बन मोनोऑक्साइड का अनुमान थोड़ा कम रहा, पर अंतर बहुत अधिक नहीं था। ओजोन के स्तर को दिल्ली में मॉडल ने ठीक दिखाया, लेकिन दूसरे शहरों में दिन के समय यह वास्तविक मापों से अधिक निकला। इन नतीजों से यह स्पष्ट हुआ कि उत्तर और पूर्व भारत के शहर, विशेषकर गंगा के मैदानी इलाकों वाले शहर सर्दियों में सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं।

इस क्षेत्र में खेती के बाद पराली जलाना, डीजल वाहनों का उत्सर्जन, औद्योगिक धुआं और ठंडी हवा- सभी मिलकर प्रदूषण का बोझ बढ़ाते हैं। तापमान कम होने से हवा का प्रवाह धीमा हो जाता है और प्रदूषक हवा में मिल नहीं पाते। परिणामस्वरूप पूरा क्षेत्र धुएं की परत से ढक जाता है। अध्ययन ने यह भी दिखाया कि दिन और रात के दौरान प्रदूषण के उतार-चढ़ाव का पैटर्न वास्तविक मापों के समान था। यानी, मॉडल हवा में मौजूद कणों और गैसों के व्यवहार को सही तरह समझ पा रहा था। यह सकारात्मक संकेत है कि भारत में ऐसे वैज्ञानिक उपकरण अब उपलब्ध हैं, जो वायु गुणवत्ता की सटीक भविष्यवाणी कर सकते हैं।

फिर भी अध्ययन ने कुछ कमियां भी उजागर कीं। सबसे पहले, भारत में अभी तक स्थानीय स्तर पर उत्सर्जन के ताजा और नियमित आंकड़े नहीं जुटाए जाते। अधिकतर आंकड़े सालाना औसत पर आधारित हैं, जबकि वास्तविकता में प्रदूषण हर दिन बदलता है। किसी दिन ट्रैफिक ज्यादा होता है, किसी दिन पराली जलाने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। अगर रोजाना का उत्सर्जन डेटा तैयार हो, तो हवा की गुणवत्ता का अनुमान और सटीक लगाया जा सकता है।

दूसरी जरूरत है कि देश के पास एक राष्ट्रीय उत्सर्जन सूची हो, जिसमें हाल के वर्षों के आंकड़े और स्थानीय गतिविधियों का असर शामिल किया जाए। तीसरी बड़ी जरूरत है कि वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्र केवल बड़े शहरों तक सीमित न रहें। आज भी भारत के अधिकतर ग्रामीण इलाकों में हवा की गुणवत्ता का कोई मापन नहीं होता, जबकि गांवों में भी अब पराली जलाने, ईंधन के धुएं और सड़क निर्माण जैसी गतिविधियों से प्रदूषण बढ़ रहा है।

यदि इन सुधारों को लागू किया जाए तो वैज्ञानिक मॉडल न केवल अधिक सटीक होंगे, बल्कि सरकारों और नीति-निर्माताओं को भी ठोस निर्णय लेने में सहायता मिलेगी। उदाहरण के लिए, अगर किसी शहर या राज्य के पास यह जानकारी हो कि किस दिन और किस स्रोत से कितना प्रदूषण हुआ, तो नीति बनाना और नियंत्रण करना आसान हो जाएगा। यह चेतावनी प्रणाली बनाने में भी मदद करेगा ताकि लोगों को पहले से बताया जा सके कि आने वाले दिनों में हवा कितनी खराब होगी।

यह अध्ययन हमें एक गहरी सीख देता है कि सर्दियों में बढ़ता प्रदूषण केवल मानवीय गलती का नतीजा नहीं है। यह मौसम, भूगोल, औद्योगिक गतिविधियों और हमारी जीवनशैली का संयुक्त प्रभाव है। जब तक हम इसे समझकर स्थानीय स्तर पर उपाय नहीं करेंगे, तब तक यह संकट हर साल और गहराता जाएगा। साफ हवा किसी विलासिता की चीज नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक का बुनियादी अधिकार है। विज्ञान, समाज और शासन- तीनों को मिलाकर इस अधिकार की रक्षा करनी होगी। जब तक हम अपने शहरों और गांवों की हवा के प्रति उतने ही जागरूक नहीं होंगे, जितने हम अपनी राजनीति या अर्थव्यवस्था को लेकर हैं, तब तक सर्दियों की यह धुंध हमारी सांसों को रोकती रहेगी। साफ हवा का सपना तभी पूरा होगा, जब विकास के हर कदम के साथ पर्यावरण का संतुलन भी हमारे विचारों का हिस्सा बनेगा।

वैज्ञानिक अध्ययन से पता चला है कि सर्दियों में महीन कणों, कालिख, नाइट्रोजन यौगिकों, गंधक और अन्य गैसों का उत्सर्जन कई गुना बढ़ जाता है। वे जमीन के पास फंसे रहते हैं और सांस लेने वाली हवा को दूषित करते हैं।

आमने

मेरी एक इच्छा है, वो ये कि हिंदू धर्म में पली-बढ़ी पत्नी उषा वेंस एक दिन कैथोलिक चर्च से प्रभावित होंगी और ईसाई धर्म अपना लेंगी, लेकिन अगर वो ऐसा नहीं करतीं, तो ईश्वर ने कहा है कि हर किसी को आजादी है, इसलिए यह मेरे लिए कोई समस्या नहीं है।
–**जेडी वेंस**, अमेरिकी उपराष्ट्रपति

सामने

अमेरिका के उपराष्ट्रपति ने कहा कि वो हिंदू परंपराएं, जिन्हें उनकी पत्नी और लाखों अमेरिकी मानते हैं, पर्याप्त अच्छी नहीं हैं। किसी ऐसे व्यक्ति के लिए, जो सभी अमेरिकियों का राष्ट्रपति बनना चाहता है, इस तरह का कमेंट, यह कोई जीतने वाली रणनीति नहीं है।
–**सुहाग शुक्ला**, हिंदू-अमेरिकन फाउंडेशन की निदेशक

भारत का मजबूत उपभोग तंत्र और चुनौतियां

प्रो. एचसी पुरोहित
डीन, दून यूनिवर्सिटी

जीएसटी 2.0 के अमल में आने से उपभोक्ता वस्तुओं पर अब 5 और 18 प्रतिशत की दर से कर लग रहा है, जिसके कारण अधिकांश उपभोक्ता वस्तुएं सस्ते दामों पर मिल रही हैं। सितंबर माह के आखिरी सप्ताह के बाद के आंकड़े आर्थिक विचारकों और नीति-निर्माताओं के लिए उत्साहवर्धक हैं। नवरात्रि से ही दुपहिया वाहनों सहित सभी प्रकार के ऑटोमोबाइल उत्पादों की रिकॉर्ड तोड़ बिक्री ने यह उम्मीद जगा दी है कि भारत का मजबूत उपभोग तंत्र किसी भी प्रकार की चुनौती या झटके का सामना करने में सक्षम है। इसका प्रमुख कारण जीएसटी दरों में बदलाव और आयकर स्लैब में मिली राहत से मध्य वर्ग की बढ़ी क्रय-शक्ति मानी जा सकती है।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि इस वर्ष सितंबर में भारत के आठ प्रमुख उद्योगों की वृद्धि दर पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में तीन प्रतिशत अधिक रही। इस दौरान इस्पात और सीमेंट सेक्टर का प्रदर्शन सबसे अच्छा रहा है, जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा संचालित बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की बढ़ती मांग है। इससे इस्पात की मांग भी बढ़ी, जो पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में 14.1 प्रतिशत की दर से बढ़ी है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के आंकड़े बताते हैं कि सितंबर माह में औद्योगिक उत्पादन चार प्रतिशत की दर से बढ़ा है, जिसका प्रमुख कारण विनिर्माण क्षेत्र की 4.8 प्रतिशत की वृद्धि दर है। देश में विनिर्माण क्षेत्र की लगातार हो रही वृद्धि निवेशकों को आकर्षित कर रही है, जिससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हर वर्ष बढ़ रहा है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अप्रैल से जुलाई के मध्य 208.57 प्रतिशत बढ़कर 10.8 अरब डॉलर पहुंच गया, जो एक सुखद संकेत है। वर्ष 2023-2024 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 61.88 लाख करोड़ था, जो वर्ष 2024-2025 में बढ़कर 68.75 लाख करोड़ हो गया है। आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार, सर्वाधिक 20 प्रतिशत एफडीआई में अमेरिका की हिस्सेदारी है और सिंगापुर 14.3 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ दूसरे स्थान पर है। विनिर्माण के क्षेत्र में सर्वाधिक एफडीआई 48.4 प्रतिशत है, जो अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शाता है। लगातार बढ़ रहा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से रोजगार सृजन एवं आर्थिक विकास की गति को बढ़ाने में सहायक होगा।

कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के आंकड़े बताते हैं कि नवरात्रि से दीपावली तक कुल 6.05 लाख करोड़ का कारोबार हुआ, जिसमें 5.40 लाख करोड़ वस्तुओं की बिक्री से संबंधित है तथा 65,000 करोड़ रुपये सेवाओं से, जिसमें पैकेजिंग, यात्रा, ट्रांसपोर्ट इत्यादि शामिल हैं। ई-कॉमर्स के लिए भी यह सीजन काफी शानदार रहा, जिसमें क्विक कॉमर्स ऑर्डर्स में 120 प्रतिशत की वृद्धि हुई। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की रिपोर्ट से स्पष्ट है कि भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक आर्थिक नरमी के बावजूद मजबूत सरकारी खर्च, बढ़ती घरेलू मांग और निर्यात में वृद्धि के कारण तेजी से बढ़ रही है।

डिलॉयट इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, भारत का सकल घरेलू उत्पाद चालू वित्त वर्ष में 6.7 से 6.9 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत अन्य देशों की तुलना में मजबूती से उभरती हुई एक आर्थिक शक्ति है। व्यापार और निवेश की अनिश्चितताओं के कारण वृद्धि का सटीक आकलन थोड़ा मुश्किल अवश्य है, परंतु कर सुधार और त्योहारी सीजन में उपभोक्ता वस्तुओं की बढ़ती मांग से निजी निवेश के बढ़ने की प्रबल संभावना है, जिससे बढ़ी हुई उपभोक्ता मांग को पूरा करने में मदद मिलेगी। डिजिटल भुगतान प्रकिया के अमल में आने से व्यापारिक गतिविधियां आसान एवं पारदर्शी हुई हैं, जिससे आम व्यक्ति का भरोसा बढ़ा है।

आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2024 के दौरान डिजिटल ट्रांजेक्शन मात्रा की दृष्टि से 99.7 प्रतिशत रहा है, जबकि मूल्य के हिसाब से यह 97.5 प्रतिशत है। इतनी बड़ी मात्रा में डिजिटल ट्रांजेक्शन का होना भारत की डिजिटल भुगतान प्रणाली एवं डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की मजबूती को दर्शाता है, जिसके अंतर्गत क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, आरटीजीएस, यूपीआई आदि शामिल हैं। लगातार बढ़ रहे डिजिटल ट्रांजेक्शन से लेनदेन व भुगतान प्रक्रिया सुचारु होने के साथ ही पारदर्शिता भी बढ़ी है।

देश का मजबूत उपभोग तंत्र और औद्योगिकीकरण की बढ़ती गति का प्रमुख कारण तेजी से सुदृढ़ होता ढांचागत स्वरूप, लगातार सुधरता लॉजिस्टिक तंत्र एवं पारदर्शी प्रशासनिक व्यवस्था है, जो वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद अर्थव्यवस्था की विकास दर को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रही है। समावेशी विकास के लिए गुणवत्तायुक्त शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार सुदूर ग्रामीण अंचलों तक करना आवश्यक है। साथ ही, क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने एवं ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन रोकने के लिए ग्रामीण, कृषि, औद्यानिकी एवं वानिकी आधारित उद्यमिता विकास को प्रोत्साहित करना होगा। लगातार बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों और प्राकृतिक आपदाओं से बाधित होती विकास की गति को बनाए रखने के लिए दीर्घकालीन समाधान के उपायों पर कार्य करना भी बड़ी चुनौती है।

कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के आंकड़े बताते हैं कि नवरात्रि से दीपावली तक कुल 6.05 लाख करोड़ का कारोबार हुआ, जिसमें 5.40 लाख करोड़ वस्तुओं की बिक्री से संबंधित है।

सोशल फोरम

साहित्यकार आंद्रे जीड व दोस्तोएव्स्की का 'संवाद'

रात की ठंडी हवा में पेरिस की गलियों पर एक आदमी टहल रहा है। उसके चेहरे पर थकान है, पर आंखों में एक अजीब चमक। यह आंद्रे जीड हैं, अपने समय के सबसे बेचैन और खोजी साहित्यकार।

डॉ. सत्यजीत साहू
ब्लॉगर

वह बुदबुदाते हैं, "क्या कोई लेखक इतना गहरा हो सकता है कि हमें हमारी अपनी परछाइयों से मिला दे?" यह प्रश्न उन्हें बार-बार उसी ओर ले जाता है- फ़्योदोर दोस्तोएव्स्की।

किसी कैफे की मेज पर जीड बैठे हैं। सामने किताबों का ढेर, क्राइम एंड पनिशमेंट, द ब्रदर्स करमझोव, द इडियट। कॉफी का प्याला ठंडा हो चुका है, पर वह पन्नों में डूबे हैं।

"आंद्रे, तुम बार-बार इन रूसी किताबों में क्यों खो जाते हो? यूरोप में और भी महान लेखक हैं, शेक्सपियर, गेटे, पास्काल।"

"क्योंकि यहां, इन पन्नों में, मैं इंसान को उसकी पूरी सच्चाई में देखता हूं, उसकी कमजोरियों, उसके अपराधों, उसके भगवान और शैतान के बीच फंसे अस्तित्व को।"

जीड लिखते हैं, "पश्चिम में हमने साहित्य को अक्सर सजावट की कला बना दिया है। पर दोस्तोएव्स्की के यहां साहित्य चाकू की धार है। वह इंसान की हकीकत को परतों को काटता है, रक्त बहाता है और फिर घाव पर प्रकाश डालता है।"

वे मानते हैं कि दोस्तोएव्स्की को पढ़ना आसान नहीं है। यह ऐसा है मानो कोई आपको अंधेरे कमरे में धकेल दे और कहे, "अब देखो, यह तुम हो।"

एक रात जीड अपने कमरे में अकेले हैं। वे अपनी नोटबुक में दोस्तोएव्स्की से संवाद करते हैं।

जीडः "फ़्योदोर, तुम क्यों इतने क्रूर हो अपने पात्रों के साथ?"

दोस्तोएव्स्की (कल्पना में): "क्योंकि पीड़ा ही सत्य का रास्ता है। बिना पीड़ा के इंसान केवल मुखौटा है।"

जीडः "पर तुम्हारे पात्र टूटते-फूटते क्यों हैं?"

दोस्तोएव्स्कीः "टूटने में ही ईश्वर से मिलने की संभावना है। पूर्णता केवल ईश्वर में है, मनुष्य में नहीं।"

आंद्रे जीड अंततः लिखते हैं, 'दोस्तोएव्स्की ने मुझे यह सिखाया कि साहित्य केवल शब्दों का खेल नहीं, बल्कि जिंदगी का दार्शनिक सफर है और इस सफर में लेखक और पाठक दोनों को साहस चाहिए।'
-फेसबुक वाल से

सामयिकी

बिहार चुनावः मुद्दे से ज्यादा जातीय समीकरण हावी

इस समय बिहार में विधानसभा का चुनाव प्रचार अपनी चरम सीमा पर है। बिहार में छः और 11 नवंबर को दो चरणों में विधानसभा चुनाव होने हैं, इसलिए सभी दलों ने चुनाव प्रचार में अपनी पूरी ताकत झोंक रखी है। बिहार में इस चुनाव में मुख्य मुकाबला दो गठबंधनों के बीच में है। एनडीए और महागठबंधन। एनडीए का नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नितीश कुमार कर रहे हैं, जबकि महागठबंधन की बागडोर लालू यादव और तेजस्वी यादव के हाथों में है। प्रशांत किशोर की जन स्वराज पार्टी भी बिहार में दो सौ से अधिक सीटों पर चुनाव लड़ रही है।

बिहार चुनाव में विभिन्न दलों द्वारा बहुत सारे लोक लुभावन वादे किए जा रहे हैं और बहुत सारे मुद्दे जोर-शोर से उठाए जा रहे हैं,

सुरेश बाबू मिश्रा
लेखक

मगर चुनाव में जातिवाद का मुद्दा इन सभी मुद्दों पर भारी पड़ता नजर आ रहा है। सभी दलों का मुख्य फोकस जातीय समीकरणों को अपने पक्ष में साधने पर है। महागठबंधन की नजर जहां यादव, अल्पसंख्यक एवं अति पिछड़ा वर्ग के वोटरों पर है, तो वहीं एनडीए सामान्य जाति, कुर्मी, जनजाति एवं अति पिछड़ी जातियों के मतदाताओं को अपने पाले में लाकर एक बार फिर सरकार बनाने की जुगत में है।

बिहार जाति जनगणना 2023 के अनुसार बिहार में यादव सबसे बड़ी जाति है। बिहार की कुल आबादी का लगभग 14.27% आबादी यादवों की है। इसके बाद अत्यंत पिछड़ा वर्ग 36 प्रतिशत, अनुसूचित जाति 6 प्रतिशत और अनुसूचित जनजाति 1.68 प्रतिशत हैं। अन्य प्रमुख जातियों में ब्राह्मण 3.65 प्रतिशत राजपूत 3.45 प्रतिशत भूमिहारों की 2.86 प्रतिशत आबादी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 18 प्रतिशत आबादी अल्पसंख्यक समुदाय की है।

यदि हम बिहार की आबादी का धार्मिक विश्लेषण देखें, तो हम पाएंगे कि बिहार में लगभग 81 प्रतिशत आबादी बहुसंख्यक हिंदू समाज की है। अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय की भागीदारी लगभग 18 प्रतिशत है। शेष एक प्रतिशत आबादी अन्य अल्पसंख्यक जैसे ईसाई, जैन और बौद्ध समुदाय के लोगों की है। बिहार में सत्ता का ऊंट किस करवट बैठेगा, यह तो आने वाला समय ही बताएगा, मगर सभी राजनीतिक दलों के बीच बड़ा दिलचस्प मुकाबला देखने को मिल रहा है। वर्तमान चुनावी परिप्रेक्ष्य में हमारा लोकतंत्र जातिगत समीकरणों के इर्द-गिर्द घूमता नजर आ रहा है। आज हर राजनीतिक दल का फोकस जातिगत समीकरण साधने पर है, इसलिए चुनाव में भी जातियों का वर्चस्व आज भी बना हुआ है। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि आजादी के 79 वर्ष बाद भी हमारा लोकतंत्र जातिगत समीकरणों के दंश से नहीं उबर पाया है।

सभी राजनीतिक पार्टियां अपनी चुनावी रणनीति जातीय समीकरणों को ध्यान में रखकर बनाती हैं। राजनीतिक दलों के विकास के तमाम दावे उस समय खोखले साबित हो जाते हैं, जब वे चुनाव में प्रत्याशियों की सूची जारी करते हैं। अधिकांश प्रत्याशी उसी जाति से होते हैं, जिस जाति के वोट उस विधानसभा क्षेत्र में सर्वाधिक होते हैं। इन उलझे हुए जातिगत समीकरणों के कारण ही कोई भी राजनीतिक दल चुनाव में प्रत्याशी घोषित करते समय कोई रिस्क नहीं लेना चाहता है और जातिगत समीकरणों के आधार पर ही प्रत्याशी घोषित करता है। जाति विशेष का होना प्रत्याशी की सबसे बड़ी विशेषता बन जाती है और ऐसे में कर्मठ, योग्य और जुझारू नेताओं पर जाति विशेष के प्रत्याशी को वरीयता दी जाती है। हम भले ही आधुनिकता और प्रगतिशीलता का कितना भी ढिंढोरा क्यों न पीट लें, मगर हमारा लोकतंत्र आज भी जातिगत समीकरणों के भंवर में उलझा हुआ है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर,इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 117/एल/320-ए, नवीन नगर काकादेव, कानपुर नगर 208001 (उ.प्र.) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- दिग्विजय सिंह***
0512-2548300 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2022/85730 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर होगा)।

मोबाइल की लत से अराजक होता बचपन

अत्याधुनिक तकनीक से जहां दुनिया करीब आई है, वहीं बच्चों में मोबाइल गेम्स की लत वर्तमान में एक गंभीर मानसिक स्वास्थ्य संकट बनती जा रही है। अत्यधिक या अनुचित उपयोग बच्चों में कई नकारात्मक घटनाओं का कारण बन सकता है। फ्री फायर जैसे हिंसात्मक या फाइटिंग गेम्स खेलने से बच्चों में आक्रामकता, चिड़चिड़ापन और गुस्सा बढ़ रहा है। सोशल इंटरेक्शन की कमी के कारण सामाजिक व्यवहार में बदलाव आता है। छोटे बच्चे वाले अधिकांश घरों में स्थिति एक जैसी है, अभिवावक सबकुछ समझते हुए अनजान बने हुए हैं, मगर हाल की कुछ घटनाएं और ओपीडी में बढ़ने वाली बच्चों की संख्या से, एक बार फिर मोबाइल गेम्स की लत और उसके गंभीर दुष्प्रभावों पर चर्चाएं शुरू हो गई हैं।

-पद्माकर पाण्डेय, लखनऊ

गेम की लत बना रही बच्चों को चिड़चिड़ा

मोबाइल गेम्स की लत बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर डाल रही है। हालांकि किसी विशेष मामले में बिना पूरी जानकारी के सटीक टिप्पणी करना संभव नहीं है, लेकिन सामान्य तौर पर देखा गया है कि लगातार मोबाइल पर गेम खेलने वाले बच्चों में नकारात्मकता, चिड़चिड़ापन और आक्रामकता जैसे लक्षण तेजी से उभरते हैं। ऐसे बच्चे अक्सर इंपल्सिव यानी बिना सोचे-समझे निर्णय लेने वाले हो जाते हैं। उनके भीतर गुस्सा, धैर्य की कमी, और याददाश्त में कमी जैसे मानसिक बदलाव दिखाई देते हैं। साथ ही पढ़ाई में मन न लगना, एक आम समस्या बनती जा रही है। अभिभावकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा दिनभर में कितनी देर मोबाइल इस्तेमाल कर रहा है। सलाह दी कि बच्चों को अलग से मोबाइल फोन नहीं देना चाहिए। यदि पढ़ाई के लिए मोबाइल की आवश्यकता हो, तो वह परिवार का साझा मोबाइल होना चाहिए, जिसे बच्चा अकेले कमरे में ले जाकर उपयोग न कर सके। मोबाइल का इस्तेमाल ऐसे माहौल में होना चाहिए, जहां अन्य सदस्य भी मौजूद हों। सही मार्गदर्शन से ही बच्चों को इस डिजिटल लत से बचाया जा सकता है।

-डॉ. आदर्श त्रिपाठी, बाल मानसिक रोग विशेषज्ञ, केजीएमयू

मोबाइल बन रहे बच्चों के लिए नशा, बढ़ रही समस्याएं

जैसे शराब और सिगरेट का नशा धीरे-धीरे बढ़ता है, वैसे ही मोबाइल गेमिंग की लत भी बच्चों में गहराती जाती है। शुरुआत में बच्चा 10 मिनट गेम खेलकर जितना संतुष्ट होता है, कुछ समय बाद वही संतुष्टि पाने के लिए उसे आधा घंटा, फिर कई घंटे तक खेलना पड़ता है। यह एक प्रकार का नशा है, जो मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों में बच्चों को प्रभावित करता है। इनमें हिंसा, गोलीबारी और अत्यधिक उत्तेजना वाले कई लेवल होते हैं, जिससे खेलने के दौरान बच्चे में अचानक उत्तेजना बढ़ जाती है, हृदय गति तेज हो जाती है और गंभीर स्थिति में हृदयाघात (हार्ट फेल) तक हो सकता है। इसलिए उन्होंने अभिवावकों को चेताया कि यदि बच्चा पढ़ाई से दूरी बना रहा हो, मोबाइल पर ज्यादा समय बिता रहा हो और परिवार या दोस्तों से बातचीत कम कर रहा हो, तो यह संकेत हो सकते हैं कि वह अवसाद या गेमिंग डिस्आर्डर का शिकार हो रहा है। इस स्थिति में अभिभावकों को चाहिए कि बच्चे के साथ अधिक समय बिताएं, उसकी दिनचर्या पर नजर रखें और आवश्यकता पड़ने पर मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से सलाह लें।

-डॉ. दीप्ती सिंह, मनोचिकित्सक, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सिविल अस्पताल

मोबाइल गेम्स से पड़ने वाले दुष्प्रभाव

- गेम्स ऐप पर्चेज करने को बच्चे माता-पिता की अनुमति के बिना भी पैसे खर्च कर देते हैं।
- ऑनलाइन फ्रॉड का शिकार होकर बच्चों ने माता-पिता के बैंक अकाउंट तक खाली कर दिए।
- फ्री फायर व पब जैसे गेम्स खेलने से रोके जाने पर बच्चों में बढ़ती है आत्महत्या की प्रवृत्ति।
- मोबाइल गेम्स खेलने से मना किए जाने पर हमला करने पर भी उतारू हो जाते हैं बच्चे।

मोबाइल की लत के लिए अभिभावक भी जिम्मेदार

आधुनिक परिवेश में बच्चों को खेलने की बजाय मोबाइल पकड़ा देना एक आम प्रवृत्ति बन चुकी है, जो भविष्य में गंभीर मानसिक और सामाजिक समस्याओं का कारण बनती जा रही है। आजकल मोबाइल देखकर खाना खाते हैं, दूध-पानी पिलाया जाता है, यानी बच्चे मोबाइल लेकर ही बड़े हो रहे हैं। बच्चा शुरुआत से ही गैजेट के प्रति आकर्षित हो रहा है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि यह नशा माता-पिता खुद ही बच्चों में डाल रहे हैं। अभिभावकों को खुद पर नियंत्रण रखना होगा। यदि किसी कारणवश बच्चे को घर पर अकेला छोड़ना पड़े, तो बेहतर होगा कि घर में इंटरनेट की सुविधा सीमित कर दी जाए। इसके लिए वाई-फाई का पासवर्ड बदलना या स्पीड कम करने जैसे तकनीकी उपाय किए जा सकते हैं। साथ ही माता-पिता को चाहिए कि बच्चों की आदतों और दिनचर्या पर नजर रखें। यदि बच्चा लगातार मोबाइल में ही व्यस्त रहता है, तो यह चिंता का विषय हो सकता है। इसकी जगह उन्हें मैदान में खेलने और लोगों के संपर्क में रहने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, जिससे वे सामाजिक रूप से सक्रिय रहें और अवसाद से दूर रहें।

-डॉ. देवाशीष शुक्ल, बलरामपुर अस्पताल, चिकित्सा अधीक्षक एवं मानसिक रोग विशेषज्ञ

बम से ज्यादा धमक पिता जी की आंखों में थी

पलछिन

बात उन दिनों की है, जब हमारी उम्र यही कुछ 10-12 वर्ष की रही होगी। घर में सात भाई बहन हैं। जाहिर है कि खूब धमाचौकड़ी होती थी। त्योहारों पर तो स्कूलों की छुट्टियां हो जाती थीं और दिन भर सिर्फ खेलना व मस्ती करना होता था। दीपावली पर स्कूल की छुट्टियां हो गईं। वैसे तो पिता जी (शिवनाथ सक्सेना) मना करते थे कि घर पर कोई पटाखा नहीं जलाएगा, लेकिन हम बच्चे कहां मानने वाले। उन दिनों बच्चे चटाई, लक्ष्मी बम और सुतली बम के दीवाने होते थे। हम भाई बहन भी सुतली बम खरीद लाए। सुतली बम बड़ा धमाका करता था। इस बम की एक धमक से घर तो घर, मोहल्ले के घरों के बर्तन गिर जाते थे। पिता जी दफ्तर गए और हमने दिन में पटाखे चलाना शुरू कर दिए। घर के आंगन में ही पटाखा बजा रहे थे। मां जी डांटती थीं लेकिन बच्चों की खुशी देखकर वह भी धमाके में बच्चों की हंसी-खुशी का आनंद लेती थीं। पटाखे चलाते-चलाते शाम के साढ़े पांच बज चुके थे और हमें ध्यान नहीं रहा कि पिता जी का दफ्तर से आने का समय हो गया। हम घर के घेर (आंगन) में पटाखे जला रहे थे कि दरवाजे की कुंडी बजी और पिता जी घर में घुस गए। बड़े भाई-बहन तो कुंडी की खटखट से भांप गए और कमरे में भाग गए और किताबें खोलकर पढ़ने लगे। हम पटाखे जलाने में इतना डूबे हुए थे कि पता ही नहीं चला कब पिता जी घेर में हमारे पीछे आकर खड़े हुए। जैसे ही हमने उनकी आंखों में देखा तो बम के धमाके से ज्यादा धमक पिता जी आंखों में थी। अब समझ नहीं आया क्या करें, पटाखे नाली में फेंके और खुद भी गिर गए और पिता जी को देखते हुए कमरे में भागे और बस्ता निकाल कर किताबें खोलकर पढ़ना शुरू कर दिया। इस बार दिवाली पर जब घर गए तो मोहल्ले में बच्चों के सुतली बमों ने पिता जी की याद दिला दी।

डॉ. अतुल सक्सेना
वरिष्ठ चिकित्सक
राजकीय मेडिकल कॉलेज हल्द्वानी

लव बड्र्स

मोहब्बत जो वक्त से जीत गई

कहते हैं, कुछ कहानियां वक्त नहीं, एहसास लिखते हैं। ऐसी ही एक कहानी है शिवेंद्र और दिव्या की, जिसमें न सिर्फ प्यार है, बल्कि संघर्ष, जिद्द और उस मुस्कुराहट की मिठास भी है, जो हर रिश्ते को जिंदा रखती है। शिवेंद्र और दिव्या की मुलाकात किसी फिल्मी अंदाज में नहीं हुई थी, पर जो हुआ वो दिल के इतने करीब था कि याद बन गया। कॉलेज के दिनों में जब शिवेंद्र ने पहली बार दिव्या को देखा, तो बस एक पल को लगा, "यही है वो", लेकिन उस 'एक पल' को रिश्ते में बदलने के लिए उन्हें वक्त, हिम्मत और बहुत सारी कोशिशें करनी पड़ीं। दिव्या का सादापन और उसकी मुस्कान, दोनों में एक सुकून था। वहीं शिवेंद्र की बातों में वो अपनापन था, जो किसी को भी खींच ले। दोनों की दोस्ती धीरे-धीरे बातों, मुलाकातों और इंतजारों में बदलती चली गई। हर दिन एक नया बहाना ढूंढना, हर बार एक नया कारण बनाना कि कहीं न कहीं मिल सकें। यही उनका रोजमर्रा का रोमांच बन गया था।

रूठने-मनाने का सिलसिला तो जैसे इनकी कहानी की धड़कन थी। दिव्या की नाराजगी अक्सर बेवजह होती, पर शिवेंद्र को उसे मनाने का हर बहाना अच्छा लगता था। कभी एक छोटी-सी चॉकलेट, कभी एक नोटबुक के बीच रखा खत, तो कभी बस एक चुप्पी में भरा माफीनामा- यही था उनका प्रेम का तरीका, लेकिन जब बात शादी तक पहुंची, तब जिंदगी ने उनकी परीक्षा ली। घरवालों को मनाना, समाज की नजरों से लड़ना, अपने सपनों को संभालते हुए रिश्ते को बचाना- दोनों के लिए आसान नहीं था। दिव्या के घर में हजार सवाल और शिवेंद्र के मन में सिर्फ एक जवाब- "वो मेरी जिंदगी है।" कई रातें बेचैनी में गुजरीं, कई दिन उम्मीद में। कभी सब ठीक लगता, तो कभी सब बिखरता नजर आता, लेकिन दोनों ने तय कर लिया था कि हार नहीं माननी। शादी की तारीख तय होने तक दोनों के दिलों में जैसे तूफान था- कहीं कुछ रुक न जाए, कहीं ये सफर अधूरा न रह जाए। फेरों के दिन जब शिवेंद्र ने दिव्या की आंखों में देखा, तो वहां सिर्फ आंसू नहीं थे- वहां सालों की जद्दोजहद, इंतजार और जीत की चमक थी।

जब पंडित ने कहा "सप्तपदी पूर्ण हुई", तो ऐसा लगा जैसे वक्त ठहर गया हो। हर धड़कन ने कहा- "अब सब ठीक है।" आज सालों बाद भी जब शिवेंद्र और दिव्या अपनी पुरानी तस्वीरें देखते हैं, तो चेहरे पर वही मुस्कान लौट आती है। वो कहते हैं- "प्यार वही सच्चा है, जो वक्त से डरता नहीं और रिश्ते वही मुकम्मल हैं, जो रूठने-मनाने में टूटते नहीं।" उनकी कहानी इस बात का सबूत है कि मोहब्बत अगर सच्ची हो, तो मंजिल देर से सही, पर मिलती जरूर है। फोटो चाहे पुरानी हो या नई, पर उनकी कहानी हर फ्रेम में मुस्कुरा रही है। क्योंकि शिवेंद्र और दिव्या ने सिर्फ एक-दूसरे से नहीं, जिंदगी से भी मोहब्बत की है।

-शिवेंद्र और दिव्या
कानपुर

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	83,938.71	25,722.10
गिरावट	465.75	155.75
प्रतिशत में	0.55	0.60

सोना 1,25,600 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,53,000 प्रति किलो

अमृत विचार

कानपुर, शनिवार, 1 नवंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

व्यवसाय तीन साल से लंबित जीएसटी रिटर्न नहीं भर पाएंगे

नई दिल्ली। जीएसटी नेटवर्क (जीएसटीएन) ने कहा कि व्यवसाय नवंबर कर अवधि से तीन साल या उससे अधिक समय के लिए देय जीएसटी रिटर्न दाखिल नहीं कर पाएंगे। जीएसटीएन ने कहा कि सभी जीएसटी-पंजीकृत व्यवसायों के लिए मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक रिटर्न नियत तिथि से तीन साल की समाप्ति के बाद दाखिल करने पर रोक लगा दी जाएगी। यह प्रतिबंध जीएसटी मंच पर नवंबर 2025 कर अवधि से लागू किया जाएगा, जिसका मतलब है कि कोई भी रिटर्न जिसकी देय तिथि तीन साल या उससे अधिक पहले थी और नवंबर कर अवधि तक दाखिल नहीं किया गया है, उसे दाखिल करने से रोक दिया जाएगा।

स्थानीय निकायों को भी रेरा के दायरे में लाया जाए

नई दिल्ली। रियल एस्टेट नियामक प्राधिकरण (रेरा) के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के अध्यक्ष आनंद कुमार ने रेरा को ज्यादा शक्तियां देने की वकालत करते हुए शुक्रवार को कहा कि उसके पास स्थानीय निकायों को भी निर्देश देने का अधिकार होना चाहिये। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा भारतीय रियल एस्टेट के विकास पर आयोजित एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि रेरा बनने के बाद रियल एस्टेट सेक्टर पर काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, लेकिन इसमें अब भी कुछ कमियां हैं, जिन्हें दूर किया जाना चाहिए।

एप्पल ने भारत में सर्वकालिक अधिकतम राजस्व किया दर्ज

नई दिल्ली। आईफोन बनाने वाली कंपनी एप्पल ने जुलाई-सितंबर तिमाही के दौरान भारत में अब तक का रिकॉर्ड राजस्व कमाया है। यह दुनिया के दूसरे सबसे बड़े स्मार्टफोन बाजार में मजबूत वृद्धि का संकेत है, जहां प्रौद्योगिकी दिग्गज खुदरा उपस्थिति एवं स्थानीय विनिर्माण को बढ़ा रहा है। कंपनी ने बयान में कहा कि एप्पल ने इस तिमाही में सालाना आधार पर आठ प्रतिशत अधिक कुल 102.5 अरब अमेरिकी डॉलर का राजस्व दर्ज किया।

अमेरिका के साथ व्यापार वार्ता जारी रखे भारत

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के चेयरमैन ने दिया सुझाव, निर्यात में भी विविधता लाने पर जोर

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) के चेयरमैन एस महेंद्र देव ने शुक्रवार को कहा कि भारत को निर्यात में विविधता लानी चाहिए और मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत तेज करनी चाहिए। साथ ही अमेरिका के साथ प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) को अंतिम रूप देने के लिए उसके साथ बातचीत जारी रखनी चाहिए।

देव ने 'प्रथम आईएसआईडी@40 विशिष्ट व्यक्ति व्याख्यान' को संबोधित करते हुए कहा कि सुरक्षा नीतियों एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कमी के बावजूद भारत के लिए विश्व वस्तु व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए कई अवसर हैं। उन्होंने कहा, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है विनिर्माण के लिए भारत की व्यापार नीति एशिया, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, कुछ विकसित देशों में निर्यात में विविधता लाने, एफटीए को तेज करने और अमेरिका के साथ बातचीत जारी रखने की होनी चाहिए। प्रख्यात अर्थशास्त्री ने कहा कि नियम-आधारित विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) सदैव संरक्षणवाद से बेहतर है।

उनकी यह टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि अमेरिका, भारत पर रूस से कच्चा तेल खरीदना बंद करने का दबाव बना रहा है। अमेरिका ने 22 अक्टूबर को रूस की दो सबसे बड़ी कच्चा तेल उत्पादक कंपनियों रोसनेफ्ट और लुकोइल पर प्रतिबंध लगा दिए थे। साथ ही सभी अमेरिकी संस्थाओं और लोगों को इन कंपनियों के साथ व्यापार करने पर रोक दिया गया है। अमेरिका ने रूस से तेल खरीदने पर भारत पर 25 प्रतिशत का जुर्माना लगाया है। यह अमेरिकी बाजारों में प्रवेश करने वाले भारतीय सामानों पर 25 प्रतिशत के जवाबी शुल्क के अतिरिक्त है। कुल मिलाकर भारतीय सामानों पर अमेरिका में 50 प्रतिशत का अतिरिक्त आयात शुल्क लग रहा है। भारत ने इन शुल्कों को अनुचित और अविवेकपूर्ण बताया है।

उन्होंने कहा कि भारत जैसे आकार का कोई भी उभरता हुआ बाजार मजबूत निर्यात वृद्धि के बिना एक दशक या उससे अधिक समय तक सात या आठ प्रतिशत की दर से नहीं बढ़ा है। देव ने कहा, 1700 में विश्व सकल घरेलू उत्पाद में भारत की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत थी। कुछ अनुमानों से पता चलता है कि 2043 तक विश्व सकल घरेलू उत्पाद में भारत की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत हो जाने की संभावना है। सुधार के बाद के पिछले तीन दशकों में भारत की औसत वृद्धि दर छह से 6.5 प्रतिशत प्रति वर्ष रही है।

निवेश दर वृद्धि की चालक, 35% होनी चाहिए

एस महेंद्र देव ने निवेश दर को वृद्धि का चालक बताते हुए कहा, भारत को सात प्रतिशत वृद्धि दर प्राप्त करने के लिए निवेश दर को वर्तमान 31-32 प्रतिशत से बढ़ाकर 34-35 प्रतिशत करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि निजी क्षेत्र को भारत में अधिक निवेश करना चाहिए क्योंकि अब दोहरे बही-खाते की कोई समस्या नहीं है। देव ने कहा, सरकारी पूंजीगत व्यय बढ़ रहा है। इसका कई गुना प्रभाव पड़ेगा।'' उन्होंने कहा कि ग्रामीण और शहरी मांग बढ़ने से निजी निवेश में वृद्धि होगी।

> भारत में 200 से 500 कर्मचारियों वाली कई और मध्यम स्तर की विनिर्माण इकाइयां होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि विनिर्माण क्षेत्र में अन्य बातों के अलावा, बड़ी समस्या यह है कि अधिकतर कंपनियां 10 से कम श्रमिकों के साथ काम कर रही हैं और उनका आकार छोटा है। - एस महेंद्र देव

देश के विदेशी मुद्रा भंडार में तीन महीने की सबसे बड़ी गिरावट

मुंबई, एजेंसी

- 6.925 अरब डॉलर घटकर 695.355 डॉलर रह गया

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 24 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में 6.92 अरब डॉलर घटकर 695.35 अरब डॉलर रह गया। इसके एक सप्ताह पहले देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.49 अरब डॉलर बढ़कर 702.28 अरब डॉलर हो गया था।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की तरफ से शुक्रवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, 24 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार का प्रमुख घटक विदेशी मुद्रा आस्तियां 3.86 अरब डॉलर घटकर 566.54 अरब डॉलर रह गईं। डॉलर के संदर्भ में व्यक्त विदेशी मुद्रा आस्तियों में विदेशी मुद्रा भंडार में रखे गए यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी इकाइयों के मूल्यवृद्धि या मूल्यह्रास का प्रभाव शामिल होता है। आरबीआई ने कहा कि आलोच्य सप्ताह के दौरान स्वर्ण भंडार का मूल्य 3.01 अरब डॉलर घटकर 105.536 अरब डॉलर रह गया।

इस दौरान विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) भी 5.8 करोड़ डॉलर घटकर 18.66 अरब डॉलर रह गए। केंद्रीय बैंक के आंकड़ों के अनुसार, समीक्षाधीन सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) में भारत का आरक्षित भंडार 60 लाख डॉलर बढ़कर 4.608 अरब डॉलर हो गया।

पहली छमाही में केंद्र का राजकोषीय घाटा बढ़ा

नई दिल्ली। वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही के अंत में केंद्र का राजकोषीय घाटा समूचे वित्त वर्ष के लिए निर्धारित लक्ष्य का 36.5 प्रतिशत रहा। लेखा महानियंत्रक (सीजीए) के अनुसार, पिछले वित्त वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में राजकोषीय घाटा 2024-25 के बजट अनुमान का 29 प्रतिशत था। मौजूदा कीमतों पर 2025-26 की अप्रैल-सितंबर अवधि में केंद्र सरकार का राजकोषीय घाटा 5,73,123 करोड़ रुपये रहा। केंद्र का अनुमान है कि 2025-26 के दौरान राजकोषीय घाटा देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 4.4 प्रतिशत यानी 15.69 लाख करोड़ रुपये रहेगा।

फोर्ड चेन्नई संयंत्र में 3,250 करोड़ रुपये का करेगी निवेश

नई दिल्ली, एजेंसी

- नए निवेश के बाद 2.35 लाख होगी प्लांट की वार्षिक क्षमता

अमेरिकी वाहन विनिर्माता कंपनी फोर्ड ने नई पीढ़ी के इंजन बनाने के लिए अपने चेन्नई संयंत्र में 3,250 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। कंपनी की ओर से शुक्रवार को इस संबंध में घोषणा की गई। इसके बाद संयंत्र की वार्षिक क्षमता 2.35 लाख इंजन हो जाएगी।

मोटर वाहन विनिर्माता ने कहा कि उसने तमिलनाडु सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जिसमें रणनीतिक दिशा को रेखांकित किया गया है जो फोर्ड+ योजना के तहत भारत की विनिर्माण विशेषज्ञता का लाभ उठाती है। इससे पहले कंपनी 2021 में भारतीय बाजार से बाहर निकल गई थी। फोर्ड ने बयान में कहा कि इस वर्ष के अंत में शुरू होने वाली परियोजना में तैयारी और निवेश के बाद चेन्नई संयंत्र की वार्षिक क्षमता 2.35 लाख इंजन होगी।

इसमें 2029 में उत्पादन शुरू होने की उम्मीद है। बयान में कहा गया, 3,250 करोड़ रुपये के प्रारंभिक अपेक्षित निवेश के साथ इस परियोजना से 600 से अधिक नौकरियों के साथ-साथ पूरे उद्योग में अप्रत्यक्ष नौकरियों के सृजन की उम्मीद है। फोर्ड मोटर कंपनी के अध्यक्ष (अंतरराष्ट्रीय बाजार समूह) जेफ मैरेंटिक ने कहा, हमें अपनी योजनाओं को आगे बढ़ाने और फोर्ड के विनिर्माण नेटवर्क में चेन्नई संयंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि करते हुए खुशी हो रही है।

शेयरों की बिकवाली से सेंसेक्स में 466 अंकों की गिरावट

मुंबई। निजी बैंकों के शेयरों में बिकवाली और वैश्विक बाजारों में कमजोरी के बीच शुक्रवार को स्थानीय बाजार लगातार दूसरे दिन नुकसान में रहे। सेंसेक्स लगभग 466 अंक गिर गया जबकि निफ्टी में 156 अंकों की गिरावट रही।

बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स 465.75 अंक यानी 0.55 प्रतिशत टूटकर 83,938.71 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 498.8 अंक गिरकर 83,905.66 अंक तक आ गया था। एनएसई का 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 155.75 अंक या 0.60 प्रतिशत गिरकर 25,722.10 पर आ गया। विश्लेषकों के मुताबिक, विदेशी निवेशकों की बिकवाली, कंपनियों के मिलेजुले नतीजे और अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों पर स्पष्टता की कमी ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया।

सेबी: 110 वरिष्ठ पदों के लिए आवेदन मांगे

नई दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने 110 वरिष्ठ पदों के लिए आवेदन मांगे हैं। ये पद सामान्य, विधि, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, आधिकारिक भाषा और इंजीनियरिंग के लिए ग्रेड ए अधिकारी के हैं। सामान्य वर्ग में 56 पद, सूचना प्रौद्योगिकी के लिए 22, विधि के लिए 20, अनुसंधान के लिए चार, राजभाषा के लिए तीन, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के लिए दो और इंजीनियरिंग (सिविल) के लिए तीन पद हैं। अभ्यर्थी 28 नवंबर तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

प्रदूषण से मौतें कम करने के लिए स्वच्छ ऊर्जा अपनाए भारत

नई दिल्ली, एजेंसी

- लैंसेट काउंटडाउन ने कहा- बढ़ती अर्थव्यवस्था होने से ये आसान

भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी क्षमताएं उसे कोयले से स्वच्छ नवीकरणीय ऊर्जा की ओर बढ़ने का अनूठा अवसर देती हैं। लैंसेट काउंटडाउन की एक शीर्ष अधिकारी ने यह उम्मीद जताते हुए नवीकरणीय ऊर्जा में अधिक सरकारी निवेश का आग्रह किया ताकि भारत में प्रदूषण से होने वाली मौतों को कम किया जा सके।

लैंसेट काउंटडाउन की कार्यकारी निदेशक मेरीना बेलेन रोमानेलो ने एक विशेष साक्षात्कार में कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में काम करने की काफी गुंजाइश है। उन्होंने जोर दिया कि इन उपायों से नागरिकों को महत्वपूर्ण स्वास्थ्य लाभ होंगे। रोमानेलो ने कहा, भारत एक प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में उभर रहा है और स्थानीय इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी नवाचार में इसकी उन्नत क्षमताएं इस बदलाव का नेतृत्व करने के लिए अच्छी स्थिति में है। कोयले महंगा और अत्यधिक प्रदूषणकारी है, और इससे स्वच्छ, नवीकरणीय ऊर्जा की ओर बढ़ने के लिए पर्याप्त निवेश और मजबूत सरकारी समर्थन की जरूरत होगी।

उन्होंने कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा तक पहुंच बढ़ाने के लिए भारत सरकार के प्रयास महत्वपूर्ण हैं, लेकिन पूरी क्षमता हासिल करने के लिए इसे और मजबूत करना चाहिए। 'द लैंसेट' पत्रिका की एक वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार मानव-जनित पीएम2.5 प्रदूषण के कारण 2022 में भारत में 17 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हुई। यह आंकड़ा 2010 से 38% अधिक है। जीवाश्म ईंधन के उपयोग से 44% मौतें हुईं। मृत्यु दर की गणना का तरीका पूछने पर रोमानेलो ने बताया कि ये पद्धतियां आंकड़ों को जोड़ती हैं जो बताती हैं कि दुनिया के हिस्सों में कितना प्रदूषण पाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आंकड़े भले ही अनुमान पर आधारित हैं, लेकिन वैज्ञानिक विधियों के आधार पर वायु प्रदूषण से जुड़े स्वास्थ्य संबंधी समझ का प्रतिनिधित्व करते हैं।

राष्ट्रीय

राजग सत्ता में लौटा तो यूपी की तरह बिहार में भी माफिया का अंत करेंगे

सीवान की चुनावी जनसभा में बोले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

सीवान/वैशाली, एजेंसी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को कांग्रेस तथा राजद पर देश की सांस्कृतिक विरासत के अपमान का आरोप लगाया और कहा कि राजग के सत्ता में लौटने पर उत्तर प्रदेश की तरह बिहार से भी माफिया का अंत कर दिया जाएगा। योगी ने यह दावा भी किया कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन समारोह में शामिल न होने की सलाह देकर देश के पहले राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद का अपमान किया था।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने शुक्रवार को सीवान, वैशाली और भोजपुर में तीन सभाओं को संबोधित किया। योगी ने कहा, कांग्रेस को बिहार की जनता ने इसलिए खारिज किया क्योंकि उसने सरदार वल्लभभाई पटेल, बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद और कर्पूरी ठाकुर जैसे महापुरुषों का अपमान किया। यहां तक कि बिहार के ही रहने वाले पार्टी के पूर्व अध्यक्ष सीताराम केसरी को भी कांग्रेस ने अपमानित किया था। उन्होंने दावा किया, जब राजेंद्र बाबू ने सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन समारोह में शामिल होने का निर्णय लिया, तब कांग्रेस के प्रधानमंत्री नेहरू ने उनसे कहा कि वे वहां न जाएं। लेकिन राजेंद्र बाबू के लिए यह आस्था का विषय था। उन्होंने स्पष्ट कहा कि वह अपने पद से इस्तीफा देना पसंद करेंगे, लेकिन समारोह में जाना नहीं छोड़ेंगे।

कांग्रेस पर देश में गरीबी और पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार होने का आरोप लगाते हुए योगी ने कहा कि यह पार्टी ब्रिटिश हुकूमत की उत्तराधिकारी है, जिसने भारतीय उद्योगों और कारीगरी को नष्ट कर दिया। योगी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस और उसकी सहयोगी पार्टी राजद ने हमेशा भारत की सांस्कृतिक विरासत का अपमान किया है। उन्होंने राम रथ यात्रा के दौरान भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी की गिरफ्तारी का जिक्र करते हुए कहा कि इन्होंने भगवान राम के रथ को भी रोक दिया था।

अंधकार युग और विकास युग में मुकाबला: नड्डा

पटना। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा ने शुक्रवार को कहा कि बिहार विधानसभा चुनाव राजद के जंगलराज वाले अंधकार युग और राजग के विकासमय उजाले के बीच की लड़ाई है। पटना जिले के बिक्रम में एक चुनावी सभा में नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार विकास की राह पर तेजी से आगे बढ़ा है और हमें इस राह को सुरक्षित रखना है। उन्होंने कहा, राजग के चुनाव घोषणा पत्र में एक करोड़ सरकारी नौकरियों और अन्य रोजगार अवसरों की गारंटी दी गई है। अगर गठबंधन दोबारा सत्ता में आता है तो बिहार के युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार खुलेंगे। नड्डा ने बताया कि घोषणा पत्र में किसानों के लिए 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' का नाम बदलकर कर्पूरी ठाकुर सम्मान निधि करने का भी प्रस्ताव है, जिसके तहत किसानों को साल भर में तीन बराबर किस्तों में कुल 9,000 रुपए मिलेंगे। पहले किसानों को तीन बार 2,000 रुपए की किस्त दी जाती थी। राजद पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि राजद का मतलब है-रंगदारी, जंगलराज और दबंगई।

मेरा व्यक्तिगत विचार है कि आरएसएस पर प्रतिबंध लगे: खरगे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर शनिवार को कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर फिर से प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए क्योंकि देश में कानून व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं के लिए यही संगठन जिम्मेदार है।

उन्होंने यह भी कहा कि यह उनका व्यक्तिगत विचार है। खरगे ने समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव के एक बयान से जुड़े सवाल का जवाब देते हुए संवाददाताओं से कहा, मेरा व्यक्तिगत विचार है और खुलकर बोलूंगा कि आरएसएस पर प्रतिबंध लगना चाहिए। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने जो चीजें आरएसएस को लेकर हमारे सामने रखी हैं, अगर उसकी मर्यादा प्रधानमंत्री और गृह मंत्री रखते हैं तो यह प्रतिबंध होना चाहिए। कांग्रेस अध्यक्ष ने दावा किया, आज देश में जो गड़बड़ियां हो रही हैं और कानून-व्यवस्था की समस्यां पैदा हो रही हैं, ये सब भाजपा और आरएसएस की वजह से हैं।

एसपी की मंजूरी के बिना वकीलों को तलब नहीं कर सकेंगे जांच अधिकारी

सर्वोच्च न्यायालय ने खारिज किए अब तक भेजे गए समन

नई दिल्ली, एजेंसी

वकील-मुवक्किल विशेषाधिकार की रक्षा के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को जांच एजेंसियों को मुवक्किलों को सलाह देने के वास्ते वकीलों को मनमाने ढंग से तलब करने पर रोक लगाने के लिए कई निर्देश जारी किए और कहा कि जांच अधिकारी उन्हें तब तक नहीं बुला सकते जब तक कि पुलिस अधीक्षक की मंजूरी न हो।

ईडी की ओर से वकीलों को भेजे गए समन को खारिज करते हुए पीठ ने कहा कि यह उन आरोपियों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है जिन्होंने वकीलों को पैरवी के लिए चुना था। पीठ ने कहा कि उसने वकीलों की सुरक्षा के लिए नियम में छूट को सुसंगत बनाने का अनुरोध किया है और जांच एजेंसियों के अनुचित दबाव से कानूनी पेशे की रक्षा के लिए नए निर्देश जारी किए हैं।

ईडी ने भेजे थे समन

सीजेआई बीआर गवई और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन तथा न्यायमूर्ति एन वी अंजारिया की पीठ ने ईडी की ओर से धन शोधन जांच के लिए वरिष्ठ अधिवक्ता अरविंद दातार और प्रताप वेणुगोपाल को तलब किए जाने के बाद स्वत: संज्ञान मामले में यह फैसला सुनाया।

दिल्ली दंगों से मेरे संबंध का कोई सबूत नहीं: खालिद

नई दिल्ली। दिल्ली में फरवरी 2020 में हुए दंगों से जुड़े यूएपीए मामले में जमानत का आग्रह करते हुए कार्यकर्ता उमर खालिद ने शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट से कहा कि हिंसा से उसके संबंध का कोई सबूत नहीं है तथा उसके खिलाफ लगाए गए साजिश के आरोप गलत हैं। खालिद की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति एन वी अंजारिया की पीठ को बताया कि दिल्ली दंगों से उसे जोड़ने वाले धन, हथियार या किसी भी भौतिक साक्ष्य की कोई बरामदगी नहीं हुई है। उन्होंने कहा, 751 प्राथमिकी हैं, एक में मुझ पर आरोप लगाया गया है, और अगर यह एक साजिश है, तो यह आश्चर्यजनक है। जिन तारीखों को दंगे हुए, वह दिल्ली में नहीं था। उसके खिलाफ कोई साक्ष्य अभी तक नहीं मिला है।

सीएपीएफ : केंद्र की पुनर्विचार याचिका खारिज

नई दिल्ली। केंद्र को झटका देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने उस फैसले पर पुनर्विचार की याचिका खारिज कर दी है जिसमें निर्देश दिया गया था कि केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) में आईपीएस अफसरों की प्रतिनियुक्ति कम कर छह महीने में कैडर समीक्षा की जाए। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ केंद्र की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें सुप्रीम कोर्ट के 23 मई के फैसले की समीक्षा का आग्रह किया गया था।

सिर्फ 26 सेकेंड में घोषणापत्र, नीतीश भी नदारद

पटना। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत ने शुक्रवार को राजग पर तीखा हमला बोलते हुए बिहार विधानसभा चुनाव से पहले जारी उनके संकल्प पत्र को को झूठ का पुलिंदा बताया।

गहलोत एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि राजग का संकल्प पत्र 2025 केवल 26 सेकंड में जारी कर दिया गया। उन्होंने कहा कि उनकी जानकारी में यह मीडियाकर्मियों के जीवन का सबसे छोटा संवाददाता सम्मेलन था। कांग्रेस नेता ने घोषणापत्र जारी होने के समय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की औपचारिक उपस्थिति पर सवाल उठाए और कहा कि अगर नीतीश कुमार बिहार में राजग का नेतृत्व कर रहे हैं तो उन्होंने खुद घोषणापत्र क्यों नहीं जारी किया। क्या वह लोगों का सामना करने या सवालों के जवाब देने की स्थिति में नहीं हैं। गहलोत ने राजग के दस्तावेज़ को झूठे वादे बताते हुए याद दिलाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार को 1.25 लाख करोड़ रुपये के विशेष पैकेज का वादा किया था, जो पूरा नहीं हुआ। उन्होंने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा, कि प्रधानमंत्री ने चंपारण की एक बंद पड़ी चीनी मिल को पुनः शुरू करने का वादा किया था और कहा था कि अगली बार उसी चीनी मिल में बनी चीनी की चाय पिएंगे, लेकिन बाद में अपना वादा भूल गए। कांग्रेस के नेता ने राजग सरकार पर पिछले दो दशकों में विफल रहने का आरोप लगाया और कहा कि रोज़गार, औद्योगिक विकास, महिला सशक्तिकरण और किसान कल्याण से जुड़े राजग के वादे खोखले साबित हुए थे।

- गहलोत ने राजग के घोषणापत्र को बताया झूठ का पुलिंदा

डीजीपी से जन सुराज पार्टी समर्थक की हत्या पर मांगी रिपोर्ट

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने मोकामा में जन सुराज पार्टी के एक समर्थक की हत्या के मामले में शुक्रवार को बिहार के पुलिस महानिदेशक से रिपोर्ट मांगी।

विधानसभा चुनाव से पहले जन सुराज पार्टी के समर्थक दुलारचंद यादव की हत्या के बाद मोकामा में तनाव व्याप्त हो गया है। मोकामा से राजद उम्मीदवार वीणा देवी की कार पर शुक्रवार को पथराव किया गया। डीजीपी को जल्द से जल्द चुनाव अधिकारियों को विस्तृत रिपोर्ट देने को कहा गया है।

दिल्ली : 2023 में वायु प्रदूषण की वजह से हुई 15% मौतें

नई दिल्ली, एजेंसी

- ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज संस्था ने किया आंकड़ों का विश्लेषण

वायु प्रदूषण दिल्ली के लोगों के लिए सबसे बड़ा स्वास्थ्य जोखिम बना हुआ है जो वर्ष 2023 में मौत के सभी मामलों में से लगभग 15 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार है। नवीनतम 'ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज' (जीबीडी) के आंकड़ों के विश्लेषण से यह जानकारी सामने आई है।

इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मेट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन (आईएचएमई) ने इस महीने की शुरुआत में जारी जीबीडी 2023 के आंकड़ों के विश्लेषण में पाया कि आसपास के परिवेश में मौजूद प्रदूषण कणों के संपर्क में आने से 2023 में दिल्ली में 17,188 लोगों की मौत होने का अनुमान है। इसका मतलब है कि दिल्ली में हर सात में से एक व्यक्ति की मौत प्रदूषित हवा से जुड़ी थी। हालांकि, केंद्र सरकार का कहना है कि वायु प्रदूषण और मौत के मामलों के बीच सीधा संबंध स्थापित करने के लिए कोई निर्णायक आंकड़ा उपलब्ध नहीं है।

रिपोर्ट के मुताबिक वायु प्रदूषण के बाद वर्ष 2023 में दिल्ली में होने वाले मौत के अन्य प्रमुख जोखिम वाले कारकों में उच्च सिस्टोलिक रक्तचाप (14,874 लोगों की मौत या 12.5%), लंबी अवधि तक बिना खाए रहने से जुड़ी शर्करा या मधुमेह की स्थिति (10,653 लोगों मौत या नौ%), उच्च कोलेस्ट्रॉल (7,267 लोगों की मौत या छह%) और उच्च बॉडी-मास इंडेक्स (6,698 लोगों की मौत या 5.6%) शामिल थे। 'सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर' (सीआरईए) के शोधकर्ताओं ने हालिया जीबीडी आंकड़े का विश्लेषण किया।

सीआरईए ने कहा कि साल-दर-साल उतार-चढ़ाव के बावजूद प्रदूषक कणों के कारण होने वाली मौत लगातार अत्यधिक बनी हुई है जो अक्सर उच्च रक्तचाप या मधुमेह से जुड़ी मौत से अधिक होती हैं।

> वायु प्रदूषण सिर्फ एक पर्यावरणीय समस्या नहीं है, यह जन स्वास्थ्य संकट है जिसके लिए प्रदूषणकारी क्षेत्रों में विज्ञान आधारित कार्रवाई की जरूरत है ताकि वास्तविक और मापने योग्य प्रदूषण में कमी लाई जा सके। - सीआरईए के विश्लेषक मनोज कुमार

> वायु प्रदूषण श्वसन संबंधी बीमारियों को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक है और यह चिंता का विषय है लेकिन इसे मृत्यु दर का एकमात्र कारण मानना वैज्ञानिक रूप से सटीक नहीं है। - केंद्रीय पर्यावरण राज्यमंत्री कीर्ति वर्धन सिंह राज्यसभा में।

जीबीडी अध्ययन दुनिया की सबसे व्यापक शोध परियोजनाओं में एक है जो सभी देशों में आकलन करता है कि लोगों की मृत्यु कैसे होती है और किन कारणों से वे बीमार पड़ते हैं।

वर्ल्ड ब्रीफ

वित्तमंत्री सीतारमण की भूटान यात्रा रद्द

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की भूटान की आधिकारिक यात्रा मौसम खराब होने के कारण रद्द कर दी गई है। सीतारमण पड़ोसी देश के साथ साझेदारी को मजबूत करने के लिए भूटान की चार दिनों की आधिकारिक यात्रा पर गुरुवार को रवाना हुई थीं। वह वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग के एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रही थीं। वित्त मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि भूटान के पारो में खराब मौसम के कारण आधिकारिक यात्रा रद्द कर दी गई है।

30 फलस्तीनियों के शव इजराइल ने सौंपे

यरुशलम। इजराइल ने 30 फलस्तीनियों के शव सौंप दिए हैं। गाजा स्थित एक अस्पताल के अधिकारियों ने यह जानकारी दी। गाजा में फलस्तीनी चरमपंथियों द्वारा दो बंधकों के अवशेष इजराइल को सौंपे जाने के एक दिन बाद इन शवों को सौंपा गया है। अवशेषों की यह अदला-बदली युद्धविराम के बाद हुई है। इजराइल की सेना ने गुरुवार को कहा कि फलस्तीनी चरमपंथियों ने दो और बंधकों के अवशेष सौंप दिए हैं।

शंघाई-दिल्ली के बीच बढ़ेगी उड़ान संख्या

नई दिल्ली। चाइना ईस्टर्न एयरलाइंस अगले साल 02 जनवरी से दिल्ली और शंघाई के बीच उड़ानों की संख्या बढ़ाकर सप्ताह में पांच करेगी। एयरलाइंस ने इससे पहले 09 नवंबर 2025 से दोनों शहरों के बीच सप्ताह में तीन उड़ानों की घोषणा की थी जिसके लिए बुकिंग शुरू हो गयी है। चाइना ईस्टर्न एयरलाइंस की शुक्रवार को जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि भविष्य में उसकी योजना चीन के कुनमिंग से कोलकाता और शंघाई पुर्डोंग से मुंबई के लिए उड़ानें शुरू करने की है। उल्लेखनीय है कि कोविड-19 के समय साल 2020 में भारत और चीन के बीच सीधी उड़ानें बंद हो गई थीं। पांच साल बाद एक बार फिर दोनों देशों के बीच उड़ानों का परिचालन शुरू हुआ है।

विमान की आपात लैंडिंग, कई घायल

टाम्पा (अमेरिका)। मेक्सिको से आ रही विमानन कंपनी 'जेटब्लू' की एक उड़ान की ऊंचाई अचानक कम हो जाने के कारण उसे फ्लोरिडा में आपात स्थिति में उतारना पड़ा और घायल हुए कई यात्रियों को अस्पताल ले जाया गया। कैनकन से न्यू जर्सी के नेवार्क जा रही उड़ान की ऊंचाई अचानक कम हो गई। संघीय उड्डयन प्रशासन जांच कर रहा है। एफएए के अनुसार, एयरबस ए320 को अपराह्न करीब दो बजे टाम्पा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए मोड़ दिया गया। अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि कितने लोग घायल हुए हैं या उनकी चोटें कितनी गंभीर हैं।

ब्रिटेन के प्रिंस एंड्रयू से वापस ली गईं सभी शाही उपाधियां

टूवूम्बा (ऑस्ट्रेलिया), एजेंसी

- ज्यूफ्रे की आत्मकथा के बाद किंग चार्ल्स ने उठाया कदम

ब्रिटेन के महाराजा चार्ल्स ने अपने भाई प्रिंस एंड्रयू से सभी शाही उपाधियां और सम्मान वापस लेने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। बकिंघम पैलेस ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि अब उन्हें केवल एंड्रयू माउंटबैटन विंडसर के नाम से जाना जाएगा। यह कदम वर्जीनिया ज्यूफ्रे की मरणोपरांत प्रकाशित आत्मकथा 'नोबॉडीज़ गर्ल' के जारी होने के बाद उठाया गया है।

इस पुस्तक में ज्यूफ्रे ने जेफ्री एप्सटीन और गिसलेन मैक्सवेल के लिए दो वर्ष तक यौन दास के रूप में बिताए अपने जीवन का विस्तृत विवरण दिया है। 41 वर्षीय ज्यूफ्रे ने इस वर्ष अप्रैल में पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के अपने फार्महाउस में आत्महत्या कर ली थी। महाराजा चार्ल्स के आदेश के तहत, एंड्रयू को रॉयल लॉज आवास खाली कर निजी आवास में स्थानांतरित होना होगा। बकिंघम पैलेस ने कहा कि यह निर्णय राजघराने की गरिमा के लिए लिया गया है। ज्यूफ्रे के परिवार ने कहा कि वह सच्चाई और अद्भुत साहस के साथ एक ब्रिटिश राजकुमार को गिराने में सफल रही।

क्लाउड सीडिंग

प्रदूषण नियंत्रण में कितनी कारगर है यह तकनीक

कृत्रिम बारिश या क्लाउड सीडिंग एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें वायुमंडल में बारिश कराने के लिए सिल्वर आयोडाइड नैनोकणों, आयोडीन युक्त नमक और सूखी बर्फ जैसे रसायनों का इस्तेमाल किया जाता है। यह तकनीक प्रदूषण कम करने में कारगर साबित हो सकती है, लेकिन यह एक स्थायी समाधान नहीं है। इसके लिए हमें प्रदूषण के मूल कारणों पर काम करना होगा और स्थायी समाधान ढूंढने होंगे आइए जानते हैं कि यह तकनीक कैसे काम करती है और कहां-कहां हुआ है इसका प्रयोग...।

क्लाउड सीडिंग कैसे काम करती है?

क्लाउड सीडिंग में रसायनों को विमान या जमीन पर लगे उपकरणों के माध्यम से बादलों में छिड़का जाता है, जिससे बादलों में मौजूद जलवाष्प संघनित होकर बारिश के रूप में गिरता है। यह प्रक्रिया वायुमंडल में मौजूद प्रदूषकों को भी हटा सकती है।

प्रदूषण कम करने में मददगार : कृत्रिम बारिश प्रदूषण कम करने में कारगर साबित हो सकती है, लेकिन यह एक अल्पकालिक समाधान है। दिल्ली में हुए एक प्रयोग में क्लाउड सीडिंग के बाद प्रदूषण के स्तर में कमी देखी गई, लेकिन बारिश नहीं हुई।

सफलता के कई कारक : क्लाउड सीडिंग की सफलता के लिए कई कारकों का ध्यान रखना जरूरी है। मौसम की स्थिति का अनुकूल होना जरूरी है। क्लाउड की गुणवत्ता का अच्छा होना जरूरी है, उपयोग किए जाने वाले रसायनों की मात्रा का सही होना जरूरी है।

चुनौतियां और अनिश्चितताएं

क्लाउड सीडिंग के परिणाम अनिश्चित हो सकते हैं और इसके लिए कई कारकों का ध्यान रखना जरूरी है। पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में चिंताएं हो सकती हैं, जैसे कि जल चक्र पर इसका प्रभाव। क्लाउड सीडिंग के नैतिक मुद्दे भी हो सकते हैं, जैसे कि इसके उपयोग के अधिकार और इसके प्रभावों की जिम्मेदारी।

अब तक कहां-कहां हुआ प्रयोग

- चीन : चीन हर साल बड़े पैमाने पर क्लाउड सीडिंग करता है, जिसमें बीजिंग ओलंपिक 2008 से पहले इसका उपयोग किया गया था।
- संयुक्त अरब अमीरात : यूएई नियमित रूप से रेगिस्तानी इलाकों में इस तकनीक का इस्तेमाल करता है ताकि बारिश और नमी बनी रहे।
- अमेरिका : अमेरिका ने जल संकट वाले क्षेत्रों में क्लाउड सीडिंग का उपयोग किया है।
- भारत : भारत में 1980 के दशक में तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक में क्लाउड सीडिंग के प्रयोग किए गए थे, लेकिन सीमित सफलता मिली।
- पाकिस्तान : पाकिस्तान ने भी क्लाउड सीडिंग का प्रयोग किया है, जिसमें लाहौर में प्रदूषण कम करने के लिए इसका उपयोग किया गया था।

भविष्य के लिए एक संभावित उपाय

- जल संसाधन प्रबंधन : क्लाउड सीडिंग जल संसाधनों को बढ़ाने और सूखे की स्थिति से निपटने में मदद कर सकती है।
- कृषि : क्लाउड सीडिंग कृषि के लिए फायदेमंद हो सकती है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां बारिश की कमी होती है।
- प्रदूषण नियंत्रण : क्लाउड सीडिंग प्रदूषण के स्तर को कम करने में मदद कर सकती है, खासकर शहरी क्षेत्रों में।
- मौसम नियंत्रण : क्लाउड सीडिंग मौसम को नियंत्रित करने में मदद कर सकती है, तूफान या ओलावृष्टि को कम करने में।

भारत में क्लाउड सीडिंग के प्रयोग

- तमिलनाडु सरकार ने 2003 में क्लाउड सीडिंग का प्रयोग किया था ताकि सूखे की स्थिति से निपटा जा सके। महाराष्ट्र सरकार ने भी क्लाउड सीडिंग के प्रयोग किए हैं। हिमाचल प्रदेश सरकार ने भी क्लाउड सीडिंग का प्रयोग किया है ताकि बर्फबारी को बढ़ाया जा सके। दिल्ली में भी क्लाउड सीडिंग के प्रयोग किए गए हैं ताकि प्रदूषण के स्तर को कम किया जा सके।

अमेरिका का परमाणु परीक्षण शुरू करना मानवता के लिए खतरनाक

परमाणु शक्ति संपन्न अन्य देशों की ओर से भी जवाबी कार्रवाई की आशंका

शुरू हो सकती है नई होड़

मेलबर्न, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पेंटागन को अन्य देशों के समान आधार पर परमाणु हथियार परीक्षण तुरंत फिर से शुरू करने का निर्देश दिया है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि यह आदेश वास्तविक विस्फोटक परमाणु परीक्षणों से संबंधित है, तो यह अमेरिका का अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और चिंताजनक कदम होगा।

विश्लेषकों के अनुसार, इस तरह के किसी भी कदम से रूस और चीन सहित अन्य परमाणु संपन्न देशों की ओर से भी जवाबी कार्रवाई की घोषणाएं होने की आशंका है, जिससे परमाणु हथियारों की नई होड़ शुरू हो सकती है और पूरी मानवता गंभीर खतरे में पड़ सकती है। परमाणु परीक्षणों से रेडियोधर्मी उत्सर्जन का वैश्विक खतरा भी बढ़ेगा। भले ही परीक्षण भूमिगत किए जाएं, लेकिन रेडियोधर्मी पदार्थों के रिसाव और भूजल प्रदूषण का जोखिम बना रहेगा। परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि का उल्लंघन

समग्र परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) पर 187 देशों ने हस्ताक्षर किए हैं, जो विश्व की सबसे व्यापक रूप से समर्थित निरस्त्रीकरण संधियों में से एक है। अमेरिका ने भी इस पर दशकों पहले हस्ताक्षर किए थे, लेकिन अब तक इसका अनुमोदन नहीं किया है। इसके बावजूद, एक हस्ताक्षरकर्ता देश होने के नाते, वह संधि की भावना और उद्देश्य का उल्लंघन नहीं कर सकता।

नौ परमाणु संपन्न देश बढ़ा रहे भंडार

अमेरिका, चीन, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और इज़राइल — अपने हथियार भंडार को और उन्नत, सटीक और तेज बना रहे हैं। इससे परमाणु हथियारों के उपयोग की संभावना बढ़ रही है और यह परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) के तहत उनके निरस्त्रीकरण दायित्वों के विपरीत है। रूस और इज़राइल जैसे देशों द्वारा हालिया संघर्षों में दिए गए परमाणु धमकी भरे बयान इस खतरे को और बढ़ाते हैं। खबरों के अनुसार, दुनिया भर में सक्रिय परमाणु हथियारों की संख्या फिर से बढ़ने लगी है, जिसमें वे हथियार भी शामिल हैं जो कुछ ही मिनटों में प्रक्षेपित किए जा सकते हैं।

1960 के दशक में पर्यावरणीय दुष्परिणामों से रोके गए थे परीक्षण

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद परमाणु परीक्षणों का मुख्य उद्देश्य हथियारों के प्रभाव और उनके विनाशकारी दायरे को समझना था। लेकिन 1960 के दशक में पर्यावरणीय और स्वास्थ्य दुष्परिणामों के कारण देशों ने वातावरण में परमाणु परीक्षणों पर रोक लगाने पर सहमति बनाई। 1963 की आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधि के बाद केवल भूमिगत परीक्षणों की अनुमति थी। अमेरिका ने 1992 में, फ्रांस ने 1996 में परीक्षण बंद किए, जबकि रूस और चीन ने भी 1990 के दशक के बाद कोई परीक्षण नहीं किया। इस सदी में केवल उत्तर कोरिया ने 2017 में परमाणु परीक्षण किया है। तकनीकी क्षमताओं के विकसित होने के बाद परमाणु शक्तियों को नए हथियारों के डिज़ाइन का परीक्षण वास्तविक विस्फोट के बिना संभव हो गया, इसलिए भौतिक परीक्षणों की आवश्यकता नहीं रही।

एकमात्र शेष संधि भी संकट में

शीत युद्ध के बाद बनी अधिकतर प्रमुख हथियार नियंत्रण संधियां अब समाप्त हो चुकी हैं। अमेरिका और रूस के बीच न्यू एसटीएआरटी (स्ट्रैटेजिक आर्म्स रिडक्शन ट्रीटी) ही ऐसी आखिरी संधि है जो दोनों देशों के 90 प्रतिशत परमाणु हथियारों को सीमित करती है। यह संधि अगले वर्ष फरवरी में समाप्त होने वाली है और इसके नवीनीकरण को लेकर अभी तक औपचारिक वार्ता शुरू नहीं हुई है। इन सभी घटनाक्रमों के चलते विशेषज्ञों का कहना है कि मानवता के अस्तित्व पर मंडराते खतरों का प्रतीक डूम्सडे क्लॉक अब पहले से कहीं अधिक आगे बढ़ गई है। यह अत्यंत खतरनाक समय है और यदि अमेरिका ने वास्तव में परमाणु परीक्षण फिर शुरू किया तो यह पूरे विश्व के लिए एक भयावह मोड़ साबित हो सकता है।

पाकिस्तान और अफगानिस्तान फिर वार्ता करने पर सहमत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान और अफगानिस्तान ने शुक्रवार को सीमा पर संघर्ष विराम कायम रखने और इस सप्ताह असफल रही शांति वार्ता को फिर से शुरू करने के लिए बातचीत करने पर सहमति जताई है। पाकिस्तान और अफगान तालिबान के प्रतिनिधिमंडलों के बीच दूसरे दौर की चर्चा शनिवार को इस्तांबुल में शुरू हुई थी लेकिन यह विफल हो गई क्योंकि पाकिस्तान ने तालिबान पर सीमा पार हमलों को रोकने का आश्वासन देने में अनिच्छा दिखाने का आरोप लगाया।

डॉन अखबार की शुक्रवार की रिपोर्ट के अनुसार, नवीनतम दौर की वार्ता के मेजबान तुर्किये द्वारा शुक्रवार को जारी एक संयुक्त बयान में कहा गया है कि छह नवंबर को इस्तांबुल में एक प्रमुख-स्तरीय बैठक के दौरान कार्यान्वयन के आगे के तौर-तरीकों पर चर्चा की जाएगी और निर्णय लिया जाएगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि बयान में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि प्रमुख वार्ताकार कौन होंगे।

एआई युग से जुड़ेंगी गढ़वाली कुमाऊनी व जौनसारी भाषाएं

मुख्य संवाददाता, देहरादून

- विदेश से ऐतिहासिक पहल, भाषा डेटा कलेक्शन पोर्टल का शुभारंभ

अमृत विचार : उत्तराखंड की लोकभाषाओं-गढ़वाली, कुमाऊनी और जौनसारी को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) से जोड़ने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया गया है। इस अवसर पर भाषा डेटा कलेक्शन पोर्टल का शुभारंभ अमेरिका के सिएटल और कनाडा के सरे-वैंकूवर में किया गया।

यह ऐतिहासिक लॉन्चिंग मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के वीडियो संदेश से हुई। मुख्यमंत्री ने इस पहल को उत्तराखंड की सांस्कृतिक अस्मिता को डिजिटल युग से जोड़ने वाला युगांतकारी प्रयास बताया। मुख्यमंत्री ने कहा कि, जब तक हमारी भाषा जीवित है, हमारी संस्कृति जीवित है। उत्तराखंड सरकार सदैव अपनी मातृभाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए तत्पर है। यह पहल बल्कि अपनी पहचान और लोक विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का एक जन आंदोलन है।

इस पोर्टल के माध्यम से गढ़वाली, कुमाऊंनी और जौनसारी भाषाओं के लगभग 10 लाख (1 मिलियन) शब्द, वाक्य, कहावतें और कहानियां एकत्र की जाएंगी, ताकि एआई प्लेटफॉर्म इनसे सीखकर भविष्य में हमारी भाषाओं में संवाद कर सकें। यह ऐतिहासिक लॉन्चिंग देवभूमि उत्तराखंड कल्चरल सोसाइटी कनाडा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हुई, जिसमें 4000 से अधिक प्रवासी उत्तराखंडी उपस्थित रहे। लॉन्चिंग में विशेष रूप से पद्मश्री प्रीतम भरतवाण (लोकगायक, जागर एवं ढोल सागर अकादमी), सच्चिदानंद सेमवाल (एआई आर्किटेक्ट, अमेरिका), अमित कुमार, सोसाइटी के अध्यक्ष बिशन खंडूरी, टोरंटो से मुरारीलाल थपलियाल एवं भारतीय दूतावास के प्रतिनिधि शामिल रहे।

मादक पदार्थ नौकाओं पर अमेरिकी हमले अस्वीकार्य

जिनेवा, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख ने कहा है कि दक्षिण अमेरिका से कथित तौर पर अवैध मादक पदार्थ ले जाने वाली नौकाओं पर अमेरिकी सैन्य हमले अस्वीकार्य हैं और इन्हें रोका जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र के किसी संगठन ने संभवतः पहली बार इन घटनाओं की निंदा की है। वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप नौकाओं पर हमलों को अमेरिका में मादक पदार्थों के प्रवाह को रोकने के लिए एक आवश्यक कार्रवाई बताते हुए उचित ठहराते हैं। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय की प्रवक्ता रवीना शमदसानी ने बताया कि मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर टर्क ने हमलों की जांच की मांग की है और कहा है कि सितंबर के शुरू से अब तक नौकाओं पर हुए हमलों में 60 से अधिक लोग मारे गए हैं।

- संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख बोले-इन्हें रोका जाना चाहिए

भारतीय कलाकृतियों की नीलामी में बना रिकॉर्ड

लंदन, एजेंसी

- टीपू की पैस्तौलों और रणजीत सिंह की पेंटिंग के मिले अधिक दाम

टीपू सुल्तान के लिए बनाई गई दो पिस्तौल और महाराजा रणजीत सिंह की एक बारीक चित्रकला ने इस सप्ताह लंदन में हुई नीलामी में नए कीर्तिमान स्थापित किए। आर्ट्स ऑफ द इस्लामिक वर्ल्ड एंड इंडिया शीर्षक से बुधवार को हुई इस नीलामी में कुल एक करोड़ पाउंड से अधिक की राशि प्राप्त हुई।

इनमें ऐतिहासिक भारतीय कलाकृतियों ने अनुमानित मूल्य से कहीं अधिक दाम हासिल किए। मैसूर के शासक रहे टीपू सुल्तान के लिए विशेष रूप से तैयार की गई चांदी जड़ी फ्लिंटलॉक पिस्तौलों की जोड़ी 11 लाख पाउंड में एक निजी संग्रहकर्ता को बेची गई, जो अनुमानित मूल्य का लगभग 14 गुना है। उन्नीसवीं सदी के सिख सम्राट महाराजा रणजीत सिंह की एक पेंटिंग 9 लाख 52 हजार 500 पाउंड (952,500 पाउंड) में बिकी।

यह सिख कला के क्षेत्र में अब तक का नया रिकॉर्ड है और इसे एक संस्थान ने खरीदा। पेंटिंग में कलाकार बिशन सिंह ने उन्हें लाहौर के एक बाजार से जुलूस में जाते हुए दर्शाया है। संग्रहकर्ता संस्था 'सोथबी' के कैटलॉग में इस पेंटिंग के बारे में कहा गया है कि यह सुंदर और बारीकी से बनी झांकी महाराजा रणजीत सिंह को हाथी पर सवार होकर लाहौर के बाजार से गुजरते हुए दिखाती है। उनके साथ उनका भव्य दरबार, चंवर और छत्र धारी सेवक, बाज़ पालक तथा घोड़े और ऊंटों द्वारा खींची जाने वाली सवारियां हैं जिनमें उनका पुत्र शेर सिंह, एक गणिका और उनके धार्मिक व राजनीतिक सलाहकार भाई राम सिंह तथा राजा गुलाब सिंह सम्मिलित हैं। चित्र के अग्रभाग में संन्यासी और सड़क कलाकार महाराजा का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं, जबकि पृष्ठभूमि में शिल्पकार, पतंग बनाने वाले और दुकानदार अपने काम में व्यस्त दिखते हैं।

टीपू सुल्तान की यह पिस्तौलें 1799 में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा श्रीरंगपट्टनम की घेराबंदी के दौरान उनके खजाने से मिली थीं।

पापुआ न्यू गिनी में भूस्खलन से 21 मरे

मेलबर्न। पापुआ न्यू गिनी के पहाड़ी इलाकों में बृहस्पतिवार देर रात हुए भूस्खलन के कारण 21 लोगों की मौत हो गई। ऑस्ट्रेलियाई ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन (एबीसी) ने पुलिस के हवाले से बताया कि देर रात करीब दो बजे हुए भूस्खलन के कारण एंगा प्रांत के कुकास गांव में कई घर तबाह हो गए। एंगा प्रांत के गवर्नर पीटर इपातास ने एबीसी को बताया कि स्थानीय लोगों के अनुसार करीब 30 लोगों की मौत हुई है, जिनमें से 18 शव बरामद किए जा चुके हैं। वहीं, पुलिस का कहना है कि अब तक 21 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। एपी का शुक्रवार को इपातास और एंगा के वाबैग थाने से संपर्क नहीं हो सका।

वैश्विक मुक्त व्यापार की रक्षा में मदद करेगा चीन

ग्योंगजू (दक्षिण कोरिया), एजेंसी

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने शुक्रवार को एशिया-प्रशांत क्षेत्र के नेताओं से कहा कि उनका देश वार्षिक आर्थिक क्षेत्रीय मंच पर वैश्विक मुक्त व्यापार की रक्षा में मदद करेगा जिसकी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अनदेखी की। जिनपिंग ने शुक्रवार को दक्षिण कोरियाई शहर ग्योंगजू में शुरू हुए एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपेक) शिखर सम्मेलन में प्रमुख मंच संभाला जबकि ट्रंप बढ़ते व्यापार युद्ध को कम करने के लिए एक दिन पहले ही चीनी राष्ट्रपति के साथ समझौते करने के बाद देश से चले गए थे।

इस वर्ष दो दिवसीय एपेक शिखर सम्मेलन पर ट्रंप-शी बैठक का प्रभाव काफी अधिक रहा, जो सम्मेलन से इतर आयोजित की गई थी। ट्रंप ने जिनपिंग के साथ गुरुवार को हुई अपनी बैठक को एक शानदार सफलता बताया और कहा कि वह चीन पर शुल्क में कटौती करेंगे, जबकि बीजिंग दुर्लभ खनिजों के निर्यात की अनुमति देने और अमेरिकी सोयाबीन खरीदने पर सहमत हो गया है। उनके ये समझौते विश्व की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापार तनाव से जूझ रही विश्व अर्थव्यवस्था के लिए राहत की बात है। ट्रंप का एपेक से दूर रहने का निर्णय बड़े और बहुराष्ट्रीय मंचों का

मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम से हाथ मिलाते जिनपिंग।।

- एपेक शिखर सम्मेलन में बोले राष्ट्रपति शी जिनपिंग

उनके द्वारा बार-बार तिरस्कार किए जाने को दर्शाता है। लेकिन उनके द्वारा एपेक की अनदेखी किए जाने से अमेरिका की प्रतिष्ठा के उस मंच पर खराब होने का खतरा है, जो विश्व की लगभग 40 प्रतिशत आबादी और वैश्विक वस्तु व्यापार के आधे से अधिक का प्रतिनिधित्व करता है। चिनफिंग ने एपेक के उद्घाटन सत्र के दौरान कहा कि समय जितना अशांत होगा, हमें उतना ही अधिक एकजुट होकर काम करना होगा। दुनिया तेज़ी से बदलाव के दौर से गुज़र रही है और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां लगातार जटिल एवं अस्थिर होती जा रही हैं।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 1 नवंबर, शनिवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-कार्तिक, पक्ष-शुक्ल पक्ष, दशमी 09 .11 तक तत्पश्चात एकादशी।

आज का पंचांग

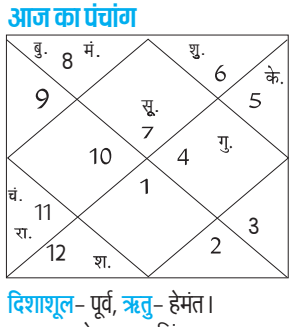

दिशाशूल- पूर्व, ऋतु- हेमंत।
चन्द्रबल- मेष, वृषभ, सिंह, कन्या, धनु, कुम्भ।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र- शतभिषा 06 .20 तक तत्पश्चात पूर्व भाद्रपद।

मेष — आज कार्यक्षेत्र में आपको अत्यधिक व्यस्त रहना पड़ेगा। आप अपनी स्किल्स बढ़ाने का प्रयास करेंगे। विवाह योग्य संतान का विवाह तय हो सकता है। विवादों को सुलझाने में सफलता मिलेगी। आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। प्रेमी जन को प्रपोज कर सकते हैं।

वृष — आज आपके जनसंपर्क का दायरा बढ़ेगा। जल्दबाजी में किए गए कार्यों का यथोचित परिणाम मिलने में समस्या होगी। पारिवारिक सदस्यों के बीच सौहाद्र का भाव बढ़ेगा। परिस्थितियां आपके पक्ष में रहने वाली हैं, इसीलिए समय का सदुपयोग करें।

मिथुन — आज छात्रों को अपने सहपाठियों और शिक्षकों से सहायता मिलेगी। प्रेमी जन के साथ अच्छा समय बितायेंगे। सोशल मीडिया पर आपकी सक्रियता बढ़ेगी। आपके उदार स्वभाव की लोग प्रशंसा करेंगे। पिता की सेहत का ध्यान रखें।

कर्क — आज कोई महत्वपूर्ण कार्य आरम्भ न करें। करियर में अनेक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा। घरेलू समस्याओं को बाहर के लोगों से शेयर न करें। स्वास्थ्य की अनदेखी करना उचित नहीं है। आपके खर्चे अचानक बढ़ सकते हैं।

सिंह — आज आपके सभी काम समय पर और निर्बाध होंगे। किसी परिजन के विवाह को लेकर चर्चा हो सकती है। जीवनसाथी के साथ काफी अच्छा समय बितायेंगे। कारोबार में महत्वपूर्ण डील होने की संभावना है। परिवार में सुख-शांति का वातावरण रहेगा।

कन्या — आज नौकरीपेशा लोगों को बोनस मिल सकता है। सुबह शुभ समाचार मिल सकते हैं। साइटिका के रोगियों की समस्या बढ़ सकती है। अधूरे पड़े सरकारी कार्यों को पूरा करने में सफलता मिलेगी। व्यवसाय में मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा।

तुला — आज कार्यक्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। छात्रों को पढ़ाई में बड़ी सफलता मिल सकती है। महिला वर्ग अपने करियर को लेकर अत्यंत सक्रिय रहेंगे। पुराने संबंधों से आपको लाभ प्राप्त होगा। जीवनसाथी से अपने मन की बातें शेयर कर सकते हैं।

वृश्चिक — आज पैतृक संपदा की प्राप्ति हो सकती है। लेकिन रियल एस्टेट कारोबारियों के लिए दिन अच्छा नहीं है। फूड इण्डस्ट्री से जुड़े लोगों के कारोबार में वृद्धि होगी। बच्चों के भविष्य की चिंता रहेगी। घर के सदस्यों के साथ अपने संबंध अच्छे रखें।

धनु — आज नया प्रोजेक्ट शुरू कर सकते हैं जिनमें आपको बड़ी सफलता मिल सकती है। कार्यक्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। अपने लक्ष्य को लेकर आप पूरे जुनून से काम करेंगे। किसी समारोह के लिए निमंत्रण प्राप्त होगा। नई जॉब को लेकर इन्टरव्यू दे रहे हैं तो परिणाम आपके पक्ष में आ सकते हैं।

मकर — आज कारोबार में मित्रों का सहयोग ले सकते हैं। करियर में आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त होंगे। अनुसंधान और शोध कार्यों में सफलता मिल सकती है। दिखावे की प्रवृत्ति से बचें। गुप्त शत्रुओं के कारण नुकसान हो सकता है। बच्चे पिता के साथ अच्छा समय बितायेंगे।

कुंभ — आज आप अत्यंत सकारात्मक महसूस करेंगे। दिन की शुरूआत बहुत खुशनुमा रहने वाली है। आप अपने लक्ष्य को सरलता से प्राप्त कर लेंगे। आपको दांपत्य संबंधों को पर्याप्त समय देना चाहिए। आपका मनोबल और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मीन — आज जीवनसाथी के साथ संवादहीनता परेशानी का कारण बनेगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। अपने खानपान और दवाइयों का ध्यान रखें। जॉब कर रहे लोगों के लिए दिन अच्छा नहीं है। धन के लेन-देन में चूक हो सकती है।

सुडोकू-147

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

1			2		3			
						4		3
		6	7					
3			6		1			
4	2							1
			4		8			
				7	9	2		
8		3						
			8		5			

सुडोकू - 146 का हल

8	9	7	1	4	5	2	6	3
1	2	6	7	9	3	8	5	4
3	5	4	2	8	6	1	9	7
9	6	3	4	2	8	5	7	1
5	7	8	3	6	1	9	4	2
2	4	1	5	7	9	6	3	8
6	3	2	8	5	7	4	1	9
4	1	5	9	3	2	7	8	6
7	8	9	6	1	4	3	2	5

ऑस्ट्रेलिया जैसे दमदार विरोधी के खिलाफ हमारी टीम की शानदार जीत। जेमिमा का बड़े मैच में शानदार प्रदर्शन। दृढता, विश्वास और जुनून का असल प्रदर्शन। शानदार टीम इंडिया। हमारी लड़कियों ने असली धमाका किया। क्या खेल दिखाया। महिला टीम पर गर्व है।

– विराट कोहली

स्टेडियम

कानपुर, शनिवार 1 नवंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

डब्ल्यूटीए चेन्नई ओपन 2025 में रूस की अरीना रोडियोनोवा के खिलाफ महिला एकल क्वार्टर फाइनल जीतने के बाद जश्न मनातीं ताइवान की जोआना गारलैंड। चेन्नई के एसडीएटी टेनिस स्टेडियम में खेले जा रहे मुकाबले में उन्होंने 6-2, 7-6 से जीत दर्ज की। एजेंसी

एशिया कप ट्रॉफी का मुद्दा फिर उठेगा

मुंबई : भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) को उम्मीद है कि एशिया कप विजेता ट्रॉफी 'एक या दो दिन में' मुंबई स्थित उसके मुख्यालय पहुंच जाएगी लेकिन अगर हालात में कोई प्रगति नहीं होती है तो भारतीय बोर्ड चार नवंबर को इस मामले को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के समक्ष उठाएगा। भारत ने दुबई में हुए फाइनल में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को पांच विकेट से हराकर एशिया कप जीता लेकिन पाकिस्तान के गृह मंत्री मोहसिन नकवी से ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। वह एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष भी हैं। यह तब हुआ जब भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने दोनों देशों के बीच विवाद के कारण अपने पाकिस्तानी समकक्ष से हाथ मिलाने से इन्कार कर दिया।

हेजलवुड एंड कंपनी ने भारतीय बल्लेबाजी को ध्वस्त किया

अभिषेक शर्मा का अर्धशतक हुआ व्यर्थ, दूसरे टी-20 में ऑस्ट्रेलिया चार विकेट से जीता

मेलबर्न, एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया ने तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड (13 रन देकर तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी के बाद कप्तान मिचेल मार्श की 26 गेंद में 46 रन की पारी से शुक्रवार को यहां भारत के खिलाफ दूसरे टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैच में 40 गेंद रहते चार विकेट से जीत दर्ज की। ऑस्ट्रेलिया ने इस तरह पांच मैच की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है। कैनबरा में पहला मैच बारिश की भेंट चढ़ गया था। तीसरा मैच रविवार को होबार्ट में खेला जाएगा।

भारत के सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने 37 गेंद में 68 रन की जुझारू अर्धशतकीय पारी खेली लेकिन हेजलवुड की अगुआई में ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाजों ने शीर्ष क्रम को झकझोरते हुए मेहमान टीम को 125 रन पर समेट दिया। ऑस्ट्रेलिया ने यह लक्ष्य 13.2 ओवर में छह विकेट गंवाकर हासिल किया। कप्तान मार्श ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए दो चौके और चार छक्के जड़ित पारी से तेज शुरूआत कराई। मार्श और ट्रेविस हेड (28 रन) ने पहले विकेट के लिए 51 रन जोड़ दिए।

मिस्ट्री लेग स्पिनर वरुण चक्रवर्ती ने पांचवें ओवर में हेड को तिलक वर्मा के हाथों कैच कराकर दोनों के बीच 28 गेंद की भागीदारी को खत्म किया। मार्श ने तेजी से खेलना जारी रखा लेकिन कुलदीप यादव की गुगली पर अभिषेक के हाथों कैच आउट हो गए जिससे ऑस्ट्रेलिया को आठवें ओवर में दूसरा झटका लगा। वरुण ने अगले ही ओवर में टिम डेविड को अपनी ही गेंद पर कैच आउट किया। लक्ष्य इतना कम था कि कसी गेंदबाजी के बावजूद इसे आसानी से हासिल किया जा सकता था।

इससे पहले अभिषेक ने अपनी पारी के दौरान ऑफ-साइड में कुछ बेहतरीन शॉट खेले जिसमें स्लैश, चेक ड्राइव और उठा कर लगाए गए स्ट्रोक शामिल थे। उन्होंने इस प्रतिष्ठित मैदान पर अपने पहले मैच में 23 गेंद में अर्धशतक जड़ दिया लेकिन अन्य बल्लेबाज कोई भागीदारी नहीं निभा सके और पवेलियन लौट गए। इससे टीम आठ गेंद रहते सिमट गई। अभिषेक ने अपनी पारी में आठ चौके और दो छक्के जड़े थे। सातवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे ऑलराउंडर हर्षित राणा ने 33 गेंद में 35 रन की पारी खेली और अभिषेक के साथ छठे विकेट के लिए 56 रन जोड़कर भारत को 100 रन का आंकड़ा पार करने में मदद की।

ऑस्ट्रेलिया के लिए तेज गेंदबाज हेजलवुड के अलावा जेवियर बार्टलेट और नाथन एलिस ने दो दो विकेट झटके। अभिषेक ने क्रीज का अच्छा इस्तेमाल किया और उछाल का भी अच्छी तरह सामना किया। लेकिन निचले मध्यक्रम के बल्लेबाजों के स्ट्राइक रोटेट नहीं कर पाने से वह निराश दिखे। उन्हें लगभग पांच ओवर तक स्ट्राइक नहीं मिली क्योंकि इस दौरान राणा ने ज्यादातर गेंदें खेलीं।

इसके बाद शिवम दुबे और कुलदीप यादव ने भी कई गेंदें खेलीं। भारत का स्कोर आठ विकेट पर 110 रन था तब अभिषेक ने बार्टलेट पर चौका और फिर छक्का जड़ा जिससे स्कोर 125 तक पहुंचा।

शुभमन गिल के खिलाफ अपील करते हुएजोश हेजलवुड। एजेंसी

भारत

125/10 (18.4 ओवर)

शुभमन गिल का मार्श बो हेजलवुड	05
अभिषेक शर्मा पगबाधा बो एलिस	68
संजू सैमसन पगबाधा बो एलिस	02
सूर्यकुमार का इंग्लिस बो हेजलवुड	01
तिलक का इंग्लिस बो हेजलवुड	00
अक्षर पटेल रन आउट	07
हर्षित राणा का डेविड बो बार्टलेट	35
शिवम दुबे का इंग्लिस बो बार्टलेट	04
कुलदीप का सब बो स्टोइनिस	00
वरुण चक्रवर्ती नाबाद	00
जसप्रीत बुमराह रन आउट	00

गेंदबाजी : हेजलवुड 4-0-13-3, बार्टलेट 4-0-39-2, एलिस 3.4-0-21-2, स्टोइनिस 4-0-24-1, ओवेन 1-0-13-0, कुहनेमैन 2-0-14-0

ऑस्ट्रेलिया

126/6 (13.2 ओवर)

मिचेल मार्श का अभिषेक बो कुलदीप	46
ट्रेविस हेड का तिलक बो वरुण	28
जोश इंग्लिस पगबाधा बो कुलदीप	20
टिम डेविड का एवं बो वरुण	01
ओवेन का सैमसन बो बुमराह	14
मार्कस स्टोइनिस नाबाद	06
मैथ्यू शॉर्ट बो बुमराह	00
जेवियर बार्टलेट नाबाद	00

गेंदबाजी : जसप्रीत बुमराह 4-0-26-2, हर्षित राणा 2-0-27-0, वरुण चक्रवर्ती 4-0-23-2, कुलदीप यादव 3.2-0-45-2

अभिषेक शर्मा।

थकान के कारण एकाग्रता टूट रही थी : जेमिमा

- सेमीफाइनल में शानदार पारी खेलने वाली जेमिमा रॉड्रिग्स ने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया
- बोलीं-हरमनप्रीत के आउट होने के बाद उन्हें फिर से फोकस करने में मदद मिली

नवी मुंबई, एजेंसी

अपने नाबाद शतक से भारत को वनडे विश्व कप फाइनल में ले जाने के बाद भावनाओं पर काबू पाने की कोशिश करते हुए जेमिमा रॉड्रिग्स ने कहा कि आस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में हरमनप्रीत कौर के आउट होने के बाद उन्हें फिर से फोकस करने में मदद मिली। दबाव में बेहतरीन पारी खेलते हुए जेमिमा ने 134 गेंद में नाबाद 127 रन बनाए जिसकी मदद से भारत ने रिकॉर्ड 339 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए आस्ट्रेलिया को हराया। अब फाइनल में सामना दक्षिण अफ्रीका से होगा। जेमिमा ने मीडिया से कहा मैं हैरी दी से कह रही थी कि हम दोनों को जीत तक ले जाना है।

उन्होंने कहा जब वह आउट हुई तो मुझे फिर से फोकस करने में मदद मिली क्योंकि थकान के कारण मेरी एकाग्रता टूट रही थी। हरमन के आउट होने के बाद मुझे लगा कि अतिरिक्त जिम्मेदारी से खेलना होगा। मैंने खुद से कहा कि वह आउट हो गई है तो उसके लिए मैं ही रन बनाऊंगी, मुझे टिककर खेलना है। जेमिमा ने कहा इससे मेरा फोकस फिर बना और मैं समझदारी से खेलने लगी। प्रेस कांफ्रेंस में बार-बार रो पड़ी जेमिमा ने कहा कि भगवान पर अटूट आस्था से उन्हें बेचैनी से उबरने में मदद मिली। उन्होंने कहा मैं प्रार्थना कर रही थी। मैं खुद से बात कर रही थी क्योंकि काफी ऊर्जा खत्म हो चुकी थी। मैं थक गई थी और इसकी वजह से कुछ पेचीदा शॉट खेले। मैं सोच रही थी कि कैसे खेलूं। आक्रामक रहूं या अंत तक टिकी रहूं और मैंने सीखा कि अंत तक डटकर खेलना जरूरी था। उन्होंने कहा मैं खुदा से बात कर रही थी क्योंकि मेरा मानना है कि मेरा उनसे निजी रिश्ता है और जब मैं खुद नहीं कर पाती तो वह मेरे लिए कर देते हैं।

इस पारी से पहले जेमिमा कठिन दौर से गुजर रही थी और टीम से बाहर भी हुई लेकिन उसके साथी खिलाड़ी उसके साथ डटे रहे। उन्होंने कहा कोई अपनी कमजोरियों के बारे में बात नहीं करना चाहता।

टूर्नामेंट की शुरुआत में काफी बैचेनी से गुजर रही थी। अपनी मां को फोन करके पूरा समय रोती रहती थी, क्योंकि जब आप इन हालात से गुजर रहे होते हैं तो कुछ सूझ नहीं पड़ता। उन्होंने कहा समझ में नहीं आता कि क्या करें। ऐसे समय में मेरे माता-पिता ने मेरा खूब साथ दिया। अरूंधति रेड्डी से मैं रोज बात करती थी और उसके सामने रोती थी। स्मृति (मंधाना) ने मेरी काफी मदद की। उसे पता था कि मैं क्या महसूस कर रही हूं। कुछ नेट सत्रों में वह खड़ी रही, कुछ कहा नहीं लेकिन उसे पता था कि उसकी मौजूदगी मेरे लिए अहम है। राधा यादव ने मेरा बहुत ख्याल रखा। जेमिमा ने मैच के बारे में कहा डी वाई पाटिल स्टेडियम पर कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। मैं यही सोच रही थी कि टिके रहना है तो रन खुद ब खुद मिलेंगे।

जेमिमा रॉड्रिग्स ने दर्शकों का अनोखे अंदाज में आभार व्यक्त किया। एजेंसी

हमने ऑस्ट्रेलिया की तरह नहीं खेला : कप्तान हीली

नवी मुंबई : ऑस्ट्रेलियाई कप्तान एलिसा हीली ने भारतीय स्टार जेमिमा रॉड्रिग्स की बेमिसाल मानसिक दृढता की तारीफ की और कहा कि महिला वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल में उनकी टीम आस्ट्रेलियाई तेवरों के साथ नहीं खेल सकी।

हीली ने प्रेस कांफ्रेंस में कहा हम चार या पांच ओवर बाकी रहते मैच में थे, लेकिन क्रिकेट में मजेदार चीजें होती रहती है। अगर आप विरोधी टीम पर पर्याप्त दबाव नहीं बना सकते तो ऐसा होता है। जेमिमा ने शानदार पारी खेली। उन्होंने कहा कि आस्ट्रेलियाई टीम ने कई गलतियां की जो आम तौर पर टीम नहीं करती है। उन्होंने कहा हमने कई बार जरूरत से ज्यादा खराब गेंदें फेंकी और शायद हमने जो मौके बनाए, उनका फायदा नहीं उठा पाये। हम आम तौर पर जितने आक्रामक होते हैं, उतने आक्रामक नहीं थे।

तेंदुलकर समेत खेल जगत ने महिला क्रिकेट टीम की तारीफों के पुल बांधे

नवी मुंबई, एजेंसी

सचिन तेंदुलकर की अगुवाई में देश के समूचे खेल जगत ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम की जमकर तारीफ की। तेंदुलकर ने एक्स पर लिखा शानदार जीत। शानदार प्रदर्शन जेमिमा रॉड्रिग्स और हरमनप्रीत कौर। श्री चरणी और दीप्ति शर्मा ने गेंदबाजी से मैच को जीवंत बनाए रखा। तिरंगे का परचम लहराते रहो।

भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग ने लिखा आस्ट्रेलिया सोच रही थी कि एक और सेमीफाइनल है, आराम से जीतो और पहुंचों फाइनल, लेकिन भारतीय टीम ने कमाल कर दिया।

भारत के पूर्व कोच और महान लेग स्पिनर अनिल कुंबले ने लिखा आस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत की बेहतरीन जीत। जेमिमा रौड्रिग्स का संयम और ताकत से भरा जबर्दस्त प्रदर्शन। यह पारी परिपक्वता और आत्मविश्वास की बानगी देती है।

युवराज सिंह ने लिखा कुछ जीत स्कोरबोर्ड के आंकड़ों से भी ऊपर होती है और यह उनमे से एक है। जब पूरी दुनिया देख रही थी और काफी दबाव था, ऐसे में हरमनप्रीत कौर ने असल कप्तान की तरह संयम और दृढता से भरी पारी खेली। वहीं जेमिमा ने कैरियर की सर्वश्रेष्ठ पारियों में से एक खेली। अपने खेल पर और एक दूसरे पर भरोसे के दम पर यह साझेदारी बनी। सेमीफाइनल में ऐतिहासिक जीत और अब फाइनल पर नजरें। भारत के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने लिखा शानदार मैच। फाइनल में पहुंचने पर हमारी भारतीय महिला टीम को बधाई।

दक्षिण अफ्रीका के महान बल्लेबाज एबी डिविलियर्स ने लिखा टीम इंडिया ने रिकॉर्ड लक्ष्य का पीछा करके आस्ट्रेलिया को बाहर किया और उनके जीत के अभियान पर रोक लगाई। सबसे मजबूत प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ शानदार प्रदर्शन।

मेरा एक ही संदेश था कि अच्छे से फिनिश करना : कोच मजूमदार

नवी मुंबई : घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन के बावजूद कभी भारत के लिए नहीं खेल सके भारतीय महिला टीम के कोच अमोल मजूमदार ने कहा कि सात बार की चैंपियन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में अपनी टीम को उनका एक ही संदेश था कि अच्छे से फिनिश करना है और हरमनप्रीत कौर की कप्तानी वाली टीम ने वही किया। मजूमदार ने जीत के बाद कहा कोई बड़ा संदेश नहीं था। हम हमेशा एक दूसरे से कहते रहते हैं कि फिनिश अच्छे से करना है। हम आमतौर पर शुरुआत अच्छी करते हैं, लेकिन फिनिशिंग पर काम करने की जरूरत रहती है। ग्रुप चरण में आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका से मिली हार के बाद टीम के प्रदर्शन पर ऊंगलियां उठी थी लेकिन मजूमदार अपने लक्ष्य को लेकर स्पष्ट थे। आस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल से पहले उन्होंने व्हाइटबोर्ड पर एक ही बात लिखी हमें फाइनल में पहुंचने के लिये बस एक रन अधिक बनाना है। क्रांति गौड़ व श्री चरणी पर भरोसा काम आया।

कप्तान पंत सिर्फ 17 रनों पर आउट

बेंगलुरु, एजेंसी

भारत ए टीम दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ चार दिवसीय क्रिकेट मैच के दूसरे दिन शुक्रवार को 234 रनों पर आउट हो गई, जिसमें ऋषभ पंत 17 रन का ही योगदान दे सके। दक्षिण अफ्रीका ए ने कल के स्कोर नौ विकेट पर 299 रन से आगे खेलना शुरू किया, लेकिन पहले ही सत्र में 309 रन पर आउट हो गई।

भारत ए का प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा और आफ स्पिनर प्रेनेलन सुब्रायेन ने 61 रन देकर पांच विकेट चटकाये जिससे दक्षिण अफ्रीका ए को 75 रन की बढत मिल गई। युवा आयुष म्हात्रे ही टिककर खेल सके जिन्होंने 76 गेंद में 65 रन जोड़े। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने पर दक्षिण अफ्रीका ए ने बिना किसी नुकसान के 30 रन बना लिए थे और अब उसके पास 105 रन की बढ़त हो गई है।

जोर्डन हरमान 12 और लेसेगो सेनोकवाने नौ रन बनाकर खेल रहे हैं। दूसरे दिन सभी की नजरें पंत पर लगी थी जो तीन महीने बाद प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में लौट रहे थे लेकिन विकेट के सामने वह टिक नहीं सके। उन्होंने छठी गेंद पर सुब्रायेन को मिडआन पर चौका लगाया। इसके बाद शेपो मोराकी को स्क्वेयर लेग पर चौका लगाकर क्रीज पर जमने के संकेत दिए। लेकिन जुबैर हमजा की गेंद को खेलें या नहीं खेलें की दुविधा में वह गली में कैच थमाकर पवेलियन लौट गए। इससे पहले चोटिल एन जगदीशन की जगह खेल रहे साइ सुदर्शन 94 गेंद में 38 रन की पारी में कहीं सहज नहीं लगे।

- अफ्रीका ए के खिलाफ चार दिवसीय क्रिकेट मैच का दूसरा दिन
- भारत ए टीम पहली पारी में 234 रनों पर सिमटी

ओलंपिक कांस्य पदक विजेता हॉकी गोलकीपर फ्रेडरिक का निधन

कन्नूर/बेंगलुरु/ नई दिल्ली : भारतीय पुरुष हॉकी टीम के पूर्व गोलकीपर और म्युनिख ओलंपिक 1972 की कांस्य पदक विजेता टीम के सदस्य मैनुअल फ्रेडरिक का शुक्रवार को सुबह बेंगलुरू के एक अस्पताल में निधन हो गया।

वह 78 वर्ष के थे और उनके परिवार में दो बेटियां हैं। उनके परिवार ने बताया कि वह पिछले दस महीने से प्रोस्टेट कैंसर से जूझ रहे थे। केरल के कन्नूर में 20 अक्टूबर 1947 को जन्मे फ्रेडरिक ओलंपिक पदक जीतने वाले प्रदेश के पहले खिलाड़ी थे। उनके अलावा केरल से पी आर श्रीजेश ने तोक्यो और पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीता है और वह भी हॉकी गोलकीपर रहे हैं। काफी पहले बेंगलुरू में आ बसे फ्रेडरिक एक साल पहले पत्नी शीतला के निधन के बाद से अवसाद में भी थे।

फिडे विश्व कप | आज से शुरू हो रहे मुकाबले में भारत की उम्मीदें अर्जुन और डी गुकेश से भी

ग्रैंडमास्टर प्रज्ञानानंदा दोहराना चाहेंगे श्रेष्ठ प्रदर्शन

पणजी (गोवा), एजेंसी

ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा शनिवार से शुरू हो रहे फिडे विश्व कप में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दोहराने की कोशिश करेंगे। जिसमें दुनिया की शीर्ष तीन रैंकिंग में काबिज खिलाड़ी अनुपस्थित रहेंगे। नॉर्वे के मैग्नस कार्लसन के अलावा अमेरिका के हिकारू नाकामुरा और फैबियानो कारूआना की जोड़ी इस टूर्नामेंट में नहीं खेलेगी।

विश्व चैंपियन डी गुकेश और अर्जुन एरिगेसी 20 लाख अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि के इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में अपनी छाप छोड़ने की कोशिश करेंगे। पर सबसे अहम चीज यह है कि इस टूर्नामेंट से 2026 फिडे कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के लिए तीन क्वालीफिकेशन स्थान सुनिश्चित होंगे। कैंडिडेट्स टूर्नामेंट से अगले साल होने वाले विश्व चैंपियनशिप मैच का खिलाड़ी तय होगा। गोवा में अगले चार हफ्तों तक 80 देशों के 206 शीर्ष शतरंज खिलाड़ी आठ दौर वाले एकल एलिमिनेशन नॉकआउट टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे। प्रत्येक मैच में निश्चित समय में दो क्लासिकल बाजियां होंगी। अगर क्लासिकल बाजियों के बाद स्कोर बराबर रहता है तो खिलाड़ी तीसरे दिन रैपिड और ब्लिट्ज टाई-ब्रेक की एक श्रृंखला खेलेंगे जिससे यह तय होगा कि कौन आगे बढ़ेगा। भारत के शीर्ष तीन खिलाड़ियों में गुकेश विश्व चैंपियन हैं और उन्हें अगले साल के अंत में विश्व चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई करने के लिए कैंडिडेट्स चक्र से गुजरने की जरूरत नहीं है, जिससे उन पर दबाव कम होगा। प्रज्ञानानंदा की अगले कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में जगह लगभग पक्की है जबकि एरिगेसी अगले साल की शुरुआत में होने वाले इस टूर्नामेंट में जगह बनाने की कोशिश में जुटे हैं। कैंडिडेट्स से तय होगा कि अगले विश्व चैंपियनशिप मैच में गुकेश को कौन चुनौती देगा। कैंडिडेट्स टूर्नामेंट के तीन स्थान दांव पर लगे हैं तो ऐसे में अनुभवी विदित गुजराती और पी हरिकृष्णा के भी कट बनाने की अच्छी संभावना है।

निहाल और अरविंद प्रबल दावेदार

युवा निहाल सरीन और अरविंद चितंबरम भी इस प्रतियोगिता में प्रबल दावेदार होंगे। पहली बार टूर्नामेंट में 24 भारतीय खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। शीर्ष 50 खिलाड़ियों को दूसरे दौर में सीधे प्रवेश दिया गया है जबकि शेष 156 खिलाड़ी पहले दौर से ही प्रतिस्पर्धा करेंगे। भारतीय खिलाड़ियों ने हाल में शानदार प्रदर्शन किया है जिसमें ओलंपियाड (ओपन और महिला दोनों वर्गों में) जीतना, गुकेश का विश्व चैम्पियनशिप का खिताब जीतना और दिव्या देशमुख का महिला विश्व कप पर कब्जा करना शामिल है। यह घरेलू खिलाड़ियों के लिए अपने कौशल का प्रदर्शन करने का एक शानदार मौका होगा। विदेश की शानदार प्रतिभाएं टूर्नामेंट में होंगी।